विशद
ऋषिमण्डल विधान

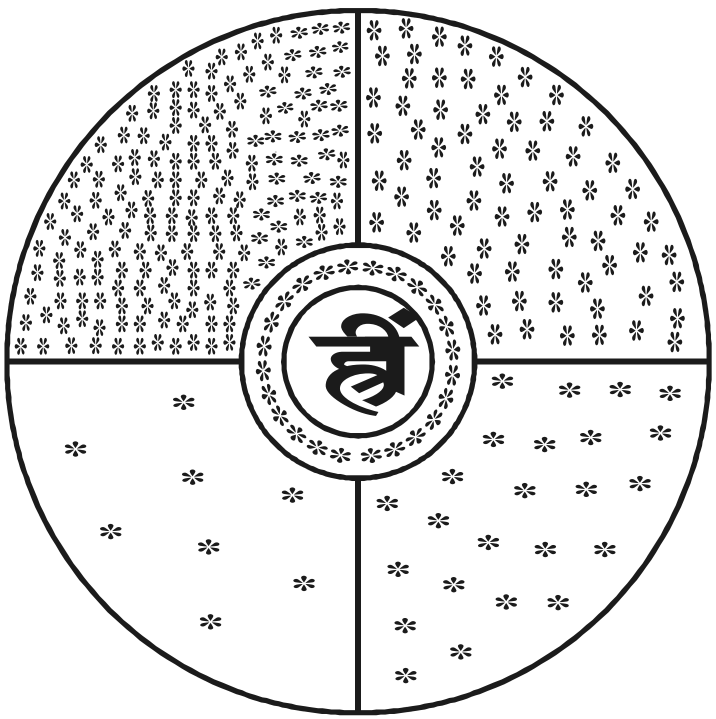

जाप–ॐ ह्राँ ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यक्दर्शनज्ञान–चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

रचयिता

प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद ऋषिमण्डल विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2012 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग -

ब्र. सुखनन्दनजी भैया

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - किरण, आरती दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301

4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

मूल्य - 81/- रु. मात्र (आगामी प्रकाशन हेतु)

-: अर्थ सौजन्य : -

श्रीमान् रतनलाल जैन

पेट्रोल पम्प, रेवाड़ी (हरियाणा)

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

अपनी बात

श्री विद्याभूषण सूरि एवं श्री गुणनन्दी मुनिकृत श्री ऋषिमण्डल विधान के बारे में कई बार सुना था जिसकी पूजा करने से अनेक प्रकार की बाधाएँ दूर हो जाती हैं तथा रोगी भी निरोगता को प्राप्त होता है तथा जैसाकि विधान का नाम है ऋषिमण्डल अर्थात् 'साधु समूह' और साधु का वर्णन करते हुए आचार्य श्री उमास्वामी ने तत्त्वार्थ सूत्र 9/46 में कहा है–**'पुलाक वकुश कुशील निर्ग्रन्थ स्नातका निर्ग्रन्था'** अर्थात् मुनि के पाँच भेद हैं जिनमें स्नातक यानि केवलज्ञानी तीर्थंकर भी समाहित है तो सबसे पहले ऋषि मण्डल विधान में ह्रीं के अन्दर 24 तीर्थंकर की आराधना की गई है। साथ ही सम्पूर्ण वर्ण सिद्ध हैं जिनका ध्यान योगीश्वरों द्वारा किया जाता है जिनसे सम्पूर्ण आगम का उद्भव हुआ है। उन वर्णों की आराधना सिद्ध रूप में की गई है।

मण्डल समूह में पञ्च परमेष्ठी एवं रत्नत्रय समूह की आराधना की गई है। साथ ही श्रुत एवं देशावधि, परमावधि, सर्वावधि ज्ञानधारी की अर्चा की गई है। साथ ही ऋद्धि के मुख्य आठ भेद, 64 उत्तर भेद रूप से ऋद्धियों की पूजा की गई है। जिस पूजा के मुख्य अधिकारी देव–देवियाँ हैं।

जाहिर है जब कोई विधान होता है तो सर्वप्रथम इन्द्र प्रतिष्ठा की जाती है। उस समय स्वर्ग के देवों की स्थापना मनुष्यों में की जाती है एवं जब प्रभु को केवलज्ञान होता है तब समवशरण में चतुर्निकाय के देव उपस्थित होकर प्रभु की अर्चा करने में तत्पर रहते हैं। यहाँ भी चतुर्निकाय के देवों का एवं 24 देवियों का आह्वान किया है कि हे देव और देवियों ! हमारे इस पूजा विधान मण्डल में आकर आप प्रभु की अर्चा करो और अन्त में उन्हें सम्मान भेंट देकर संतुष्ट किया साथ ही निवेदन किया कि हमारे अनुष्ठान में आने वाली बाधाओं को दूर करो एवं याचक तथा पूजक को सुख–समृद्धि प्रदान कर उनका जीवन मंगलमय करो।

विधान की रचना इतनी सुन्दर और सुचारू रूप से की गई है कि जिसमें सभी आराध्यों की आराधना की गई है तथा सभी आराधकों को आह्वान करके आराधना में शामिल किया गया है जो सामञ्जस्य का श्रेष्ठ उदाहरण है जिसका अनुवाद करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

ऋषि मण्डल में ऋद्धिधारी मुनियों का स्मरण किया गया है जो अनेक सिद्धियाँ प्रदान करने वाली हैं। यह विधान करके भक्तजन प्रभु भक्ति कर आत्मकल्याण करें एवं शान्ति प्राप्त करें।

– आचार्य विशदसागर

(रेवाड़ी–31–7–2011)

श्रद्धा के भाव

इत्यत्र त्रितयात्मनि, मार्गे मोक्षस्य ये स्वहित कामाः।
अनुपरतं प्रयतन्ते, प्रयान्ति ते मुक्ति मचिरेण।।

अर्थ–आचार्य अमृतचन्द स्वामी लिखते हैं इस लोक में जो अपने हित के इच्छुक मोक्ष मार्ग के रत्नत्रयात्मक मार्ग में सर्वदा अटके बिना चलने का प्रयास करते हैं वे पुरुष ही मुक्ति को प्राप्त करते हैं।

आत्मदृष्टा एवं आध्यात्म योगी सन्त पुरुष हमारी भारतीयता का एक आधार हैं। आध्यात्मिकता से आप्लावित भारतीय संस्कृति के प्राण हैं। तीर्थंकरों का निमित्त मिल जाने पर चेतना जागृत हो जाती है, सम्पूर्ण सुख मिल जाता है। तीर्थंकरों की परम्परा में चलने वाले संत भी लोकोत्तर हैं। ऐसे संत समाज में दुर्लभ हैं। इस पंचमकाल में ऋद्धिधारी मुनि न होते, न होंगे। लेकिन चतुर्थ काल के मुनियों को ऐसी चौंसठ ऋद्धियाँ प्राप्त हुई अगर पत्तों पर चलते तो जीवों का घात नहीं होता, कितनी भी बीमारी हो जाए अगर उनके शरीर का मल कफ आदि के लग जाने पर रोगों से मुक्त हो जाते हैं। ऐसे संत समाज में दुर्लभ हैं। संतों की श्रेणी में धर्म प्रभावना करने वाले श्रद्धा लोक के देवता, मधुर वक्ता, प्रज्ञाश्रमण, क्षमामूर्ति चँवलेश्वर के छोटे बाबा 108 आचार्य विशदसागर गुरुदेव ने परमात्मा के प्रति भक्ति समर्पण कर 'ऋषिमण्डल विधान' की रचना में अपनी कलम से एक–एक शब्द को भावों से सजाकर इस विधान का रूप दिया है। हे गुरुवर ! आपकी प्रज्ञा का, आपकी मुस्कान चर्या और क्रिया का गुणानुवाद उतना ही कठिन है जितना भरे हुए समुद्र में रत्न को ढूँढ़ना मुश्किल है।

हे गुरुवर ! आप श्रावकों को धर्म मार्ग पर चलाने के लिए कितने पुरुषार्थ कर रहे हैं और श्रावक देखो भौतिकवादी युग में अन्धा होकर दौड़ रहा है। अनेक तनाव परेशानी से ग्रसित होकर रोगों का शिकार हो रहा है। वह सोचता है कि धन से सुखी है तो सब सुख है। ये तो हम सबकी भूल है। हे गुरुवर ! आपकी महिमा हम अल्पबुद्धि श्रावकों पर सदा बरसती रहे, हम सभी आपके पदचिह्नों पर चलें।

ये हवा आपकी हँसी की खबर देती है।
मेरे मन को खुशी से भर देती है।।
प्रभु खुश रखे आपकी खुशी को।
क्योंकि आपकी हंसी हमें मुस्कान देती है।।

– ब्र. सपना दीदी

(संघस्थ आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज)

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सताये हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलाये हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ।।7 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।9 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोमि।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

***जाप्य*–ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।**

जयमाला

दोहा– **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ऋषि मण्डल विधान

मंगलाचरण

दोहा– ज्ञानादि वसु ऋद्धियाँ, संत और भगवंत।
इनकी अर्चा से सभी, विघ्नों का हो अंत।।

जीव कर्म के योग से, पाते दुःख महान।
जैन धर्म की भक्ति से, रहे न नाम निशान।।
परम अहिंसा मय धरम, मंगल कहा त्रिकाल।
धारण करके जीव यह, सुखी होय तत्काल।।
ऋषि मण्डल पूजन विशद, सुख शान्ति का मूल।
पुरजन परिजन मित्रगण, हो जाते अनुकूल।।
सूरि श्री गुणनन्दी जी, संस्कृत भाषाकार।
लिखकर के यह ग्रन्थ शुभ, किया बड़ा उपकार।।
हिन्दी भाषा में लिखा, विशद सिन्धु आचार्य।
रचना जो भी की गई, इसको ले आधार।।
कर्म असाता का उदय, अन्तराय संयोग।
सम्यक् दृष्टि जीव को, भी दुःखों का योग।।
अर्चा करने से सभी, विघ्नादि हों दूर।
कर्म असाता नाश हो, अन्तराय हो चूर।।
विधि पूर्वक भाव से, करके पूजन पाठ।
शान्ति समृद्धि बढ़े, होवें ऊँचे ठाठ।।
याजक तृष्णा रहित मन, ज्ञाता हो विद्वान।
शुद्धोच्चारण वचन शुभ, याजक करे बखान।।

दोहा– सम्यक् दर्शन ज्ञान युत, निर्मल चारित वान।
विधि विधान ज्ञाता शुभम्, हो आचार्य महान।।

श्रद्धालु विनयी महा, न्याय उपार्जित द्रव्य।
शीलादि गुणवान शुभ, हो यजमान सुसभ्य।।
इत्यादि गुण से सहित, विनयवान यजमान।
जैनागम में कहा है, पूजक श्रेष्ठ महान।।

विधानाचार्य लक्षण

सज्जाति सम्यक्त्वी ज्योतिष, देशव्रती ज्ञानी विद्वान।
यंत्र तंत्र विद् विधि विधान का, ज्ञाता निर्लोभी गुणवान।।
पाप भीरु आगम का वक्ता, गुरु उपासक जग हितकार।
श्रेष्ठ विधानाचार्य शान्तिप्रिय, विशद प्रभावक मंगलकार।।

विधानकर्त्ता

सम्यक्त्वी श्रद्धालु अणुव्रती, दुर्व्यसनी जाति निर्दोष।
संकल्पी हिंसा का त्यागी, मूलगुणी जो करे न रोष।।
पूजक दानी भक्त गुरु का, स्वाध्यायी जिन दर्शन वान।
हीनाधिक न अंग कोई हो, अंधा गूंगा बहरा वान।।
रोगी या गर्हित व्यापारी, कुष्ट जलोदर ज्वर से युक्त।
मूर्ख और कंजूस घमण्डी, लोभी न माया संयुक्त।।
न्यायोपार्जित कार्य करे न, मूर्ख और ना ही कंजूस।
ऐसा हो यजमान श्रेष्ठ शुभ, किसी से न लेता हो घूस।।
जब विधान की इच्छा हो तो, मुनि सान्निध्य में जावे।
श्रीफल ले परिवार सहित वह, आशीर्वाद शुभ पावे।।
राज्य राष्ट्र के अन्य विधर्मियों, को अनुकूल बनावें।
आमन्त्रण दे सब भव्यों को, शान्ति यज्ञ करावें।।

मण्डल स्थान

चौपाई– स्वच्छ भूमि होवे चौकोर, खम्भ लगाएँ चारों ओर।
श्रेष्ठ चंदोवा बाँधा जाए, मण्डप श्रेष्ठ सजाया जाए।।
चउ कोनों पर कलशा चार, मंगल कलश भी भली प्रकार।
गाजे बाजे मंगलगान, खुश होकर करवाएँ आन।।
तीन छत्र ऊपर लटकाएँ, चँवर सामने श्रेष्ठ सजाएँ।
माँडे मण्डल यथा विधान, मंत्र विधि का राखें ध्यान।।

दोहा– नेत्रों को सुखकर लगे, मंगलमय शुभकार।
उत्तम हो उत्कृष्ट शुभ, मूल्यवान मनहार।।
अष्ट द्रव्य अनुपम सभी, रक्खे विधि के साथ।
तन मन की शुद्धि करें, धोके अपने हाथ।।

ऋषि मण्डल रचना

लिखकर दोहरा ह्रीं शुभ, उसमें लिखें जिनेश।
प्रथम वलय रचना करें, सारा हरें क्लेश।।
ह्रीं के चन्द्राकार में, चन्द्र पुष्प जिन नाथ।
मुनिसुव्रत अरु नेमि जिन, लिखें बिन्दु में साथ।।
ई मात्रा के बीच में पार्श्व सुपार्श्व महान।
पदम प्रभु वासुपूज्य का, रेखा में स्थान।।
शेष सभी तीर्थेश को, ह में लिखे प्रधान।
जैसा जिनका रंग है, करें उसी में ध्यान।।
द्वितीय वलय बनाइये, जिसमें कोठे आठ।
स्वर व्यञ्जन जिसमें लिखे, वर्ण मातृका पाठ।।
कोष्ठ तीसरे वलय में, एक सौ बहत्तर जान।
पञ्च परम परमेष्ठि के, रत्नत्रय के मान।।
चौथा वलय बनाइये, कोष्ठ बहत्तर दार।
चौंसठ ऋद्धि से सहित, श्रुतावधि के चार।।

अष्ट अष्ट ऋद्धि सहित, क्रमशः लिखकर नाम।
भक्ति भाव से पूजिए, श्रेष्ठ बनेंगे काम।।
पञ्चम वलय बनाइये, कोठे हों चौबीस।
उसमें माँडे देवियाँ, पावें जिन आशीष।।
ॐ ह्रीं क्ष्वीं क्षः नमः, के बीजाक्षर चार।
चार दिशा में यह लिखें, यंत्र होय तैयार।।

ऋषि मण्डल स्तोत्र

आदि ''अ'' अक्षर ह अन्त, ख से लेकर व पर्यन्त।
रेफ में अग्नि ज्वाला नाद, बिन्दु युत अर्हं उत्पाद।।1।।
अग्नि ज्वाला सम आक्रान्त, मन का मल करता उपशांत।
हृदय कमल पर दैदीप्यमान, वह पद निर्मल नमूँ महान।।2।।
नमो अर्हद्भ्यः ईशेभ्यः, ॐ नमो नमः सिद्धेभ्यः।
ॐ नमो सर्व सूरिभ्यः, ॐ नमः उपाध्यायेभ्यः।।3।।
ॐ नमो सर्व साधुभ्यः, ॐ नमः तत्त्व दृष्टिभ्यः।
ॐ नमः शुद्ध बोधेभ्यः, ॐ नमः चारित्रेभ्यः।।4।।
अर्हन्तादि पद ये आठ, स्थापन करके दिश आठ।
निज निज बीजाक्षर के साथ, लक्ष्मीप्रद हैं सुखकर नाथ।।5।।
पहला पद सिर रक्षक जान, द्वितीय मस्तक का पहिचान।
तीजा पद नेत्रों का मान, करे चतुष्पद नाशा त्राण।।6।।
पञ्चम मुख का रक्षक होय, ग्रीवा का छठवाँ पद सोय।
सप्तम पद नाभि का जान, अष्टम द्वय पद का पहिचान।।7।।
प्रणवाक्षर ॐ पुनः हकार, रेफ बिन्दुयुत हो शुभकार।
द्वय तिय पञ्चम षष्ठी जान, सप्त अष्ट दश द्वादश मान।।8।।
ह्रीं नमः विधि के अनुसार, मंत्र बने शुभ अतिशयकार।
ऋषि मण्डल स्तवन शुभकार, श्रेयस्कर है मंत्र अपार।।9।।

जाप्य– ॐ ह्राँ ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यक्दर्शनज्ञान चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

(शम्भू छंद)

सिद्ध मंत्र में बीजाक्षर नव, अष्टादश शुद्धाक्षर वान।
भक्ति युत आराधक को शुभ, फलदायी है मंत्र महान।।10।।
जम्बूद्वीप लवणोदधि वेष्टित, जम्बू वृक्ष जिसकी पहचान।
अर्हदादि अधिपति वसु दिश में, वसु पद शोभित महिमावान।।11।।
जम्बूद्वीप के मध्य सुमेरु, लक्ष्य कूट युत शोभावान।
ज्योतिष्कों के ऊपर ऊपर, घूम रहे हैं श्रेष्ठ विमान।।12।।
ह्रीं मंत्र स्थापित जिस पर, अर्हंतों के बिम्ब महान।
निज ललाट में स्थित कर मैं, नमूँ निरंजन सतत् प्रधान।।13।।

(चौपाई)

जिन अज्ञान रहित घन गाए, अक्षय निर्मल शांत कहाए।
बहुल निरीह सारतर स्वामी, निरहंकार सार शिवगामी।।14।।
अनुद्धूत शुभ सात्विक जानो, तैजस बुद्ध सर्वरीसम मानो।
विरस बुद्ध स्फीत कहाए, राजस मत तामस कहलाए।।15।।
परप्परापर पर कहलाए, सरस विरस साकार बताए।
निराकार पारापर जानो, परातीत पर भी पहिचानो।।16।।
सकल निकल निर्भृत कहलाए, भ्रांति वीत संशय बिन गाए।
निराकांक्ष निर्लेप बताए, पुष्टि निरंजन प्रभु कहाए।।17।।
ब्रह्माणमीश्वर बुद्ध निराले, सिद्ध अभंगुर ज्योति वाले।
लोकालोक प्रकाशक जानो, महादेव जिनको पहिचानो।।18।।
बिन्दु मण्डित रेफ कहाया, चौथे स्वर युत शांत बताया।
ह्रीं बीज वर्ण सुखदायी, ध्यान योग्य अर्हत् के भाई।।19।।

एक वर्ण द्विवर्ण गिनाए, त्रिवर्णक चतु वर्णक गाए।
पञ्चवर्ण महावर्ण निराले, परापरं पर शब्दों वाले।।20।।
उन बीजों में स्थित जानो, वृषभादि जिन उत्तम मानो।
निज-निज वर्णयुक्त बिन गाए, सब ध्यातव्य यहाँ बतलाए।।21।।
नाद चंद्र सम श्वेत बताया, बिन्दु नील वर्ण सम गाया।
कला अरुण सम शांत कहाई, स्वर्णाभा चउदिश में गाई।।22।।
हरित वर्ण युत ई शुभ जानो, ह र स्वर्ण वर्ण मय जानो।
वर्णानुसार प्रभु को ध्याएँ, चौबिस जिन पद शीश झुकाएँ।।23।।
चन्द्र पुष्प जिन श्वेत बताए, नाद के आश्रय से शुभ गाए।
नेमि मुनिसुव्रत जिन जानो, बिन्दु मध्य में प्रभु को मानो।।24।।
कला सुपद शुभ है शिवगामी, वासुपूज्य पद्म प्रभ स्वामी।
ई स्थित सोहे मनहारी, श्री सुपार्श्व पार्श्व अविकारी।।25।।
शेष सभी तीर्थंकर जानो, ह र के आश्रय से मानो।
माया बीजाक्षर में गाए, चौबिस तीर्थंकर बतलाए।।26।।
राग-द्वेष गत मोह कहाए, सर्व पाप से वर्जित गाए।
सर्वलोक में जिन शुभकारी, सदा सर्वदा मंगलकारी।।27।।

(चौपाई)

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, सर्पों से न बाधा होय।।28।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, नागिन से न बाधा होय।।29।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, गोहों से न बाधा होय।।30।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, वृश्चिक से न बाधा होय।।31।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, काकिनि से न बाधा होय।।32।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, डाकिनि से न बाधा होय।।33।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, साकिनि से न बाधा होय।।34।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, राकिनि से न बाधा होय।।35।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, लाकिनि से न बाधा होय।।36।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, शाकिनि से न बाधा होय।।37।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, हाकिनि से न बाधा होय।।38।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, भैरव से न बाधा होय।।39।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, राक्षस से न बाधा होय।।40।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, व्यंतर से न बाधा होय।।41।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, भेकस से न बाधा होय।।42।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, लीनस से न बाधा होय।।43।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, मम ग्रह से न बाधा होय।।44।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, चोरों से न बाधा होय।।45।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, अग्नि से न बाधा होय।।46।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, श्रृगिण से न बाधा होय।।47।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, दंष्ट्रिण से न बाधा होय।।48।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, रेलप से न बाधा होय।।49।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, पक्षी से न बाधा होय।।50।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, मुद्‌गल से न बाधा होय।।51।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, जृंम्भक से न बाधा होय।।52।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, मेघों से न बाधा होय।।53।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, सिंहों से न बाधा होय।।54।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, शूकर से न बाधा होय।।55।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, चीतों से न बाधा होय।।56।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, हाथी से न बाधा होय।।57।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, राजा से न बाधा होय।।58।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, शत्रु से न बाधा होय।।59।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, ग्रामिण से न बाधा होय।।60।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, दुर्जन से न बाधा होय।।61।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, व्याधि से न बाधा होय।।62।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, सब जन से न बाधा होय।।63।।

(चौपाई)

श्री गौतम की मुद्रा प्यारी, जग में श्रुत उपलब्धि कारी।
उससे प्रखर ज्योति को पाए, अर्हत् सर्व निधीश्वर गाए।।64।।
देव सभी पाताल निवासी, स्वर्ग लोक पृथ्वी के वासी।
देव स्वर्ग वासी शुभकारी, रक्षा मिल सब करें हमारी।।65।।
अवधि ज्ञान ऋद्धि के धारी, परमावधि ज्ञानी अविकारी।
दिव्य मुनि सब ऋद्धिधारी, रक्षा वह सब करें हमारी।।66।।
भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, वैमानिक के रहे प्रवासी।
श्रुतावधि देशावधि धारी, योगी के पद ढ़ोक हमारी।।67।।

परमावधि सर्वावधि धारी, संत दिगम्बर हैं अविकारी।
बुद्धि ऋद्धि सर्वौषधि पाए, ऋद्धि धारी संत कहाए।।68।।
बल अनन्त ऋद्धि धर पाए, तप्त सुतप उन्नति बढ़ाए।
क्षेत्र ऋद्धि रस ऋद्धि धारी, ऋद्धि विक्रिया धर अविकारी।।69।।
तप सामर्थ्य मुनि अविकारी, क्षीण सद्म महानस धारी।
यतिनाथ जो भी कहलाते, उनके पद में हम सिरनाते।।70।।
तारक जन्मार्णव शुभकारी, दर्शन ज्ञान चारित्र के धारी।
भव्य भदन्त रहे जग नामी, इच्छित फल पावें हे स्वामी।।71।।

(शम्भू छंद)

ॐ ह्रीं श्री धृति लक्ष्मी, गौरी चण्डी सरस्वती।
क्लिन्नाजिता मदद्रवा अरु, नित्या विजया जयावती।।72।।
कामांगा कामवाणा नन्दा, नन्दमालिनी अरु माया।
कलि प्रिया रौद्री मायाविनी, काली कला करें छाया।।73।।
रक्षाकारी महादेवियाँ, जिन शासन की सर्व महान।
कांति लक्ष्मी धृति मति दें, क्षेम करें सब जगत प्रधान।।74।।
दुर्जन भूत पिशाच क्रूर अति, मुद्गल हैं वेताल प्रधान।
वह प्रभाव से देव-देव के, सब उपशान्त करें गुणगान।।75।।
श्री ऋषि मण्डल स्तोत्र यह, दिव्य गोप्य दुष्प्राप्त महान।
जिन भाषित है तीर्थनाथ कृत, रक्षा कारक महिमावान।।76।।
रण अग्नि जल दुर्ग सिंह गज, का संकट हो नृप दरबार।
घोर विपिन श्मशान में भाई, रक्षक मंत्र रहा मनहार।।77।।
राज्य भ्रष्ट को राज्य प्राप्त हो, सुपद भ्रष्ट पद पाते लोग।
संशय नहीं हैं इसमें पावें, लक्ष्मी हीन लक्ष्मी का योग।।78।।
भार्यार्थी भार्या पाते हैं, पुत्रार्थी पाते सुत श्रेष्ठ।
धन के इच्छुक धन पाते हैं, नर जो स्मरण करें यथेष्ट।।79।।

स्वर्ण रजत कांसे पर लिखकर, उसे पूजते जो भी लोग।
शाश्वत महा सिद्धियों का वह, अतिशय पाते हैं संयोग।।80।।
शीश कण्ठ बाहू में पहनें, भूर्जपत्र पर लिखिये मंत्र।
भय विनाश होते हैं उनके, जो धारें अतिशय शुभ यंत्र।।81।।
भूत-प्रेत ग्रह यक्ष दैत्य सब, या पिशाच आदि कृत कष्ट।
वात पित्त कफ आदि रोग भी, हो जाते हैं सारे नष्ट।।82।।
भूर्भुवः स्वः त्रय पीठ स्थित, शाश्वत हैं जिनबिम्ब महान।
उनके दर्शन वन्दन स्तुति, श्रेष्ठ सुफल हैं जगत प्रधान।।83।।
महा स्तोत्र यह गोपनीय शुभ, जिस किसको न देना आप।
मिथ्यात्वी को देने से हो, पद-पद पर शिशु वध का पाप।।84।।
चौबिस जिन की पूजा द्वारा, आचाम्लादि तप के योग।
अष्ट सहस्र जापकर विधिवत्, कार्य सिद्ध करते हैं लोग।।85।।
प्रतिदिन प्रातः अष्टोत्तर शत्, इसी मंत्र का करते जाप।
सुख-सम्पत्ति पाते इच्छित, रोगों का मिटता संताप।।86।।
प्रातः आठ माह तक नित प्रति, इस स्तोत्र का करके पाठ।
तेज पुञ्ज अर्हन्त बिम्ब के, दर्शन से हों ऊँचे ठाठ।।87।।
सप्त भवों में भाव समाधि, जिन दर्शन से होते मुक्त।
परमानन्द प्राप्त करते हैं, होते शाश्वत सुख से युक्त।।88।।

दोहा- यह स्तोत्र महास्तोत्र है, सब संस्तुतियों युक्त।
पाठ जाप स्मरण कर, दोषों से हो मुक्त।।
कर स्तोत्र महास्तोत्र का, पाठ स्मरण जाप।
दोषों से मुक्ति मिले, 'विशद' मिटे संताप।।

।। इति ऋषि मण्डल स्तोत्र समाप्त।।

ऋषिमण्डल स्तवन

दोहा– कर्मों का फैला विशद, कट जाए मम जाल।
हम ऋषि मण्डल को, यहाँ करते नमन त्रिकाल।।

(शम्भू छंद)

ऋषि मण्डल शुभ यंत्र लोक में, मंगलमय मंगलकारी।
जिसमें राजित श्रेष्ठ महाशुभ, ह्रीं अक्षर महिमाकारी।।
यंत्रराज का है नायक जो, चौबिस जिनवर युक्त कहा।
अ आ इ ई आदि स्वर में, सिद्ध वर्ण संयुक्त रहा।।1।।
क आदि हैं वर्ण पंच शुभ, उनका भी इसमें स्थान।
ह भ आदि बीजाक्षर शुभ, आठों का है कथन महान।।
पाँचों परमेष्ठी शोभित हैं, रत्नत्रय भी रहा प्रधान।
सर्व ऋषीश्वर शोभित होते, तप बल धारी ऋद्धिवान।।2।।
श्रुतावधि धर चारों मुनिवर, जिनके गुण हैं अपरम्पार।
चऊ निकाय के देव शरण में, भक्ति करते बारम्बार।।
श्री ह्रीं आदि सभी देवियाँ, सेवा करें चरण में आन।
अन्तिम वलय में घेरे हैं ज्यों, नगरी में कोटा जान।।3।।
विधि सहित जो पूजा करते, पाते वह सुख–शांति महान।
महिमा इसकी जग से न्यारी, कठिन रहा जिसका गुणगान।।
सर्व दुःखों को हरने वाली, पूजा कही है अपरम्पार।
मंत्र जाप शुभ करने वाला, शीघ्र होय इस भव से पार।।4।।
मुक्तिश्री को जपने वाले, करते हैं शिव पद में वास।
अक्षयश्री को पा जाते हैं, होते तारण तरण जहाज।।
ऋषि मण्डल जग श्रेष्ठ कहा है, तीनों लोक में रहा प्रसिद्ध।
विघ्न हरण मंगल कारक है, होय भावना मन की सिद्ध।।5।।

दोहा– ऋषि मण्डल शुभ यंत्र की, पूजा अपरम्पार।
सुख–शांति पावे 'विशद', करके बारम्बार।।

ऋषि मण्डल समुच्चय पूजा

स्थापना

चौबिस जिन वसु वर्ग शुभ, पञ्च गुरु त्रय रत्न।
चैत्यालय चऊ देव के, चार अवधि कर यत्न।।
अष्ट ऋद्धि चऊ बीस सुरि, पूजित जिन अरिहंत।
ह्रीं तीन दिग्पाल दस, युक्त यंत्र गुणवन्त।।
ऋषि मण्डल में देवियाँ, और देव परिवार।
आकर के रक्षा करें, पूजूँ विधि अनुसार।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चौबिस तीर्थंकर, अष्ट वर्ग, अर्हंतादि पञ्चपद, दर्शन–ज्ञान–चारित्र सहित चतुर्निकाय देव, चार प्रकार अवधिधारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि संयुक्त चतुर्विंशति सूरि, त्रय ह्रीं, अर्हंद् बिम्ब, दशदिग्पाल, यन्त्रसम्बन्धि परमदेव अत्र अवतर–अवतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

शुभ चेतन सम उज्ज्वल निर्मल, यह नीर चरण में लाए हैं।
है बन्ध अनादि आयु का, वह बन्ध नशाने आए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य सदन का क्रोधानल, हम आज नशाने आए हैं।
शुभ मलयागिरि का चन्दन यह, अब यहाँ चढ़ाने आए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मद से क्षत विक्षत हुए अब तक, पद अक्षय पाने आए हैं।
यह धवल अमल अक्षय अक्षत, हम पूजा करने लाए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य सुरभि के उपवन से, यह सुरभित पुष्प मंगाए हैं।
निष्काम स्वरूप जगाने को, हम काम नशाने आए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अति क्षुधा वेदना से अविरत, हम पीड़ित होते आए हैं।
चेतन में तन्मयता पाने, व्यञ्जन अर्चा को लाए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वीतराग के विज्ञानी, जो विशद ज्ञान प्रगटाए हैं।
उसका प्रकाश पाने हम भी, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धूप सुरभि निर्झरणी से, चेतन को शुद्ध बनाना है।
कर्मों का दल बल उछल रहा, अब उसको मार भगाना है।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सुर तरु के रसदार शुभं, यह अर्चित करने लाए हैं।
अब मोक्ष महल में हो प्रवेश, अतएव शरण में आए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मय चिद्रूप सुगुण अपने, अब हम प्रगटाने आए हैं।
अब मोक्ष महल में हो प्रवेश, अतएव शरण में आए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– देते जल की धार शुभ, लेकर प्रासुक नीर।
अर्चा करते भाव से, पाने को भव तीर।।

शांतये शांतिधारा

दोहा– पुष्पाञ्जलि करने यहाँ, लाए पुष्पित फूल।
अर्चा के फल से सभी, होय कर्म निर्मूल।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– तीन लोक में रत्नत्रय, धारी ऋद्धि त्रिकाल।
उनकी पूजा कर यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(छन्द : तोटक)

जय आदिनाथ भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।
अजितनाथ पद माथ नमस्ते, जोड़ जोड़ द्वय हाथ नमस्ते।।
सम्भव भव हरदेव नमस्ते, अभिनन्दन जिनदेव नमस्ते।
सुमतिनाथ के पाद नमस्ते, पदम प्रभु पद माथ नमस्ते।।
श्री सुपार्श्व जिनराज नमस्ते, चन्द्र प्रभु पद आज नमस्ते।
पुष्पदन्त गुणवन्त नमस्ते, शीतल जिन शिवकंत नमस्ते।।
जय श्रेयांसनाथ भगवंत नमस्ते, वासुपूज्य धीवन्त नमस्ते।
विमलनाथ जिनदेव नमस्ते, प्रभु अनन्त सब देव नमस्ते।।
धर्मनाथ जिनदेव नमस्ते, शान्तिनाथ अनूप नमस्ते।
जय–जय कुन्थुनाथ नमस्ते, जय अरहनाथ पद साथ नमस्ते।।
जय मल्लिनाथ भगवान नमस्ते, मुनिसुव्रत व्रतवान नमस्ते।
जय नमिनाथ पद माथ नमस्ते, जय नेमिनाथ जिन साथ नमस्ते।।
जय पार्श्वनाथ धर धीर नमस्ते, तीर्थंकर महावीर नमस्ते।
अष्ट वर्ग शुभकार नमस्ते, परमेष्ठी मनहार नमस्ते।।
जय दर्शन ज्ञान चारित्र नमस्ते, जय जैनागम सुपवित्र नमस्ते।
चउ देवों के जिन गेह नमस्ते, शाश्वत क्षेत्र विदेह नमस्ते।।
जय चार अवधि मुनिराज नमस्ते, जय ऋद्धिधर ऋषिराज नमस्ते।
चौबिस देवि से पूज्य नमस्ते, जो तीन काल हैं पूज्य नमस्ते।।
जय ध्वजा आदि शुभकार नमस्ते, चैत्यालय मनहार नमस्ते।
जय वीतराग विज्ञान नमस्ते, श्री विराग की खान नमस्ते।।

करते देवी देव नमस्ते, पूजा करें सदैव नमस्ते।
जल चन्दन शुभ लाय नमस्ते, अक्षत पुष्प मँगाए नमस्ते।।
चरु शुभ दीप जलाय नमस्ते, श्री जिन चरण चढ़ाय नमस्ते।
ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र नमस्ते, श्री जिन चरण चढ़ाय नमस्ते।।
ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र नमस्ते, संकटहारी तंत्र नमस्ते।
विद्यार्थी विज्ञान नमस्ते, निर्गुण हो गुणवान नमस्ते।।
जय उपकारी जगनाथ नमस्ते, है भक्ति भाव के साथ नमस्ते।
श्रद्धा के आधार नमस्ते, हे व्रतदायक अनगार नमस्ते।।
मुक्ति पथ दातार नमस्ते, भव से करते पार नमस्ते।
हमको देना साथ नमस्ते, 'विशद' झुकाते माथ नमस्ते।।

(अडिल्ल छंद)

ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र परम हितकार है।
भव–भव के दुखों का मैटनहार है।।
जीवों को सुख–शान्ति प्रदायक मानिए।
शिवपद दाता श्रेष्ठ 'विशद' पहिचानिए।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्ति भाव के साथ, ऋषि मण्डल शुभ यंत्र की।
बने श्री का नाथ, जो नित प्रति पूजा करें।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

देव दर्शन कभी करने जाते नहीं,
ज्ञान का योग भी कहीं पाते नहीं।
कैसे हो बंधु उनका ये जीवन चमन,
संयम से अपने को जो सजाते नहीं।।

(प्रथम वलयः)

दोहा– वर्ण ह्रीं को पूज कर, पाऊँ सौख्य महान।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, आके यहाँ प्रधान।।

(मण्डलस्योपरि परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ह्रीं पूजा

स्थापना

श्रेष्ठ परम आराध्य ऋद्धियों, का बीजाक्षर ह्रीं कहा।
ऋषभादि चौबिस तीर्थंकर, पिण्डवर्ण संयुक्त रहा।।
वर्ण मातृका सहित दहन विधि, अष्ट ऋद्धि संयुक्त महान।
पञ्च परम गुरु की पूजा सब, चतुर निकाय के देव प्रधान।।
देवि जयादि भक्ति करके, करती हैं जिसका गुणगान।
ऐसे अनुपम अर्थ का ज्ञायक, ह्रीं का हम करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायप्रभृतिपरिकरोद्योतक ह्रीं बीजाक्षर ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

जग में हम भटके सदियों से, न भाव शुद्ध हो पाए हैं।
अब निर्मलता पाकर मन में, जन्मादि नशाने आए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छाएँ पूर्ण न हो पाई, मन में संताप बढ़ाए हैं।
अब इच्छाओं की शांति करके, संताप नशाने आए हैं।।

बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मन खण्डित मण्डित हुआ सदा, आखिर अखण्ड पद न पाए।
अब इच्छाओं की शांति करके, अक्षत चढ़ाने आए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम बाण से विद्ध रहे, न भोगों से बच पाए हैं।
अब काम रोग के नाश हेतु, यह पुष्प सुगन्धित लाए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा ने हमें सताया है, न जीत उसे हम पाए हैं।
अब नाश हेतु हम क्षुधा रोग, नैवेद्य चढ़ाने आए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह तिमिर से अंध हुए, निज का स्वरूप न लख पाए।
निज ज्ञानदीप की ज्योति लगे, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के धूम से इस जग के, सारे ही जीव अकुलाए हैं।
अब कर्म नाश करने हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।।

बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का फल पाकर प्राणी, सारे जग में भटकाए हैं।
अब रत्नत्रय का फल पाएँ, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह द्रव्य भाव में कारण है, उससे हम अर्घ्य बनाए हैं।
अब पद अनर्घ पाने हेतु, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– ह्रीं बीजाक्षर में रहे, पञ्च परमपद जान।
करके जयमाला विशद, बने स्वयं गुणवान।।

(शम्भू छंद)

वर्ण ह कार चार का वाची, है र कार द्वितीय स्थान।
चौबीस अंकों के ज्ञायक यह, चौबिस जिन के रहे महान।।
शून्य सिद्ध का दर्शायक है, खं वत आत्म विशुद्धिवान।
गण का ईश बताए ई शुभ, साधक साधु उपाध्याय जान।।
ह्रीं रहा परमेष्ठी वाचक, इसकी अर्चा करो महान।
वर्ण बनाया ऋषिमण्डल है, स्वर वर्णादि का स्थान।।
परमेष्ठी रत्नत्रय पाए, धारे आप दिगम्बर भेष।
गणधर श्रुतावधि के धारी हैं, मुक्ति का देते संदेश।।

इन सबको उत्कृष्ट मानकर, जिनकी पूजा करते देव।
पूजा करें भाव से मानव, दुःख हों उनके क्षार सदैव।।
गुण का चिन्तन करने से हो, मानव के परिणाम विशुद्ध।
विशद ज्ञान को पाने वाले, हो जाते हैं प्राणी बुद्ध।।
पुण्य प्रकृतियाँ उदय में आके, रस देती अनुपम सुखकार।
शांति प्राप्त होती तन–मन में, मानव की इच्छा अनुसार।।
पाप कर्म भी परिवर्तित हो, पुण्य रूप होते शुभकार।
होते कर्म संक्रमित क्षण में, साता रूप श्रेष्ठ मनहार।।
संसारी जीवों को जग में, शान्ति साधन रहा प्रधान।
बीजाक्षर शुभ ह्रीं के जैसा, और नहीं कोई स्थान।।
भाव सहित हम भी करते हैं, श्रेष्ठ ह्रीं का शुभ गुणगान।
विशद भावना मन में मेरे, बना रहे मेरा श्रद्धान।।
सुख–दुःख की घड़ियों में हरदम, करता रहूँ ह्रीं का ध्यान।
अन्तिम यही भावना मेरी, हो जाए आतम कल्याण।।

दोहा– शान्ति का हेतु परम, बीजाक्षर शुभ ह्रीं।
सुख, शान्ति आनन्द का, जानो कोष असीम।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– उभय लोक में शान्ति का, है अनुपम स्थान।
विशद हृदय के भाव से, करना है गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

द्वितीय वलयः

दोहा– शब्द ब्रह्म इस लोक में, मंगलमयी महान।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण।।

(मण्डलस्य परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री आदिनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर ।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्तशरण में आकर के, प्रभु करते उर से आह्वानन् ।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

क्षीर नीर सम जल अति निर्मल, रत्न कलश भर लाए हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, तव चरणों में आए हैं।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनि की गंध मनोहर, मन मयूर प्रमुदित करती।
भव आताप निवारण करके, सरल भावना से भरती।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ जी अष्टापद से, अक्षय निधि को पाए हैं।
अक्षय निधि को पाने हेतु, अक्षय अक्षत लाए हैं।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर जीवन की कलिका, क्षण-क्षण में मुरझाती है।
काम वेदना नशते मन की, चंचलता रुक जाती है।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री आदि प्रभु ने, एक वर्ष उपवास किए।
त्याग किए नैवेद्य सभी वह, क्षुधा वेदना नाश किए।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीपक जगमग जलकर, बाहर का तम हरता है।
ज्ञान दीप जलकर मानव को, पूर्ण प्रकाशित करता है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला में जलकर, हमने संसार बढ़ाया है।
प्रभु तप अग्नि में कर्मों की, शुभ धूप से धूम उड़ाया है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोक्ष सुख से हम वंचित, मोक्ष महाफल दान करो।
श्री फल अर्पित करता हूँ प्रभु, शिव पद हमें प्रदान करो।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश करो प्रभु, अष्ट गुणों को पाना है।
अर्घ्य समर्पित करते हैं प्रभु, अष्टम भूपर जाना है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य (शम्भू छन्द)

दूज कृष्ण आषाढ़ माह की, मरुदेवी उर अवतारे।
रत्नवृष्टि छह माह पूर्व कर, इन्द्र किए शुभ जयकारे।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, नगर अयोध्या जन्म लिया।
नाभिराय के गृह इन्द्रों ने, आनंदोत्सव महत् किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, राग त्याग वैराग्य लिया।
संबोधन करके देवों ने, भाव सहित जयकार किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

फाल्गुन बदि एकादशी को प्रभु, कर्म घातिया नाश किए।
लोकोत्तर त्रिभुवन के स्वामी, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी को, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
सुर नर किन्नर विद्याधर ने, आकर किया विशद गुणगान।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

नाभिराय मरूदेवि के नन्दन, वृषभनाथ प्रभु जगत महान्।
नगर अयोध्या जन्म लिये हैं, अष्टापद गिरि से निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज मैं विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच सहस योजन ऊँचाई, बारह योजन गोलाकार।
तप्त स्वर्ण सम समवशरण में, आदिनाथ शोभें मनहार।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आयु लाख चौरासी पूरव, की है प्रभु छियालिस गुणवान।
धनुष पाँचसौ है ऊँचाई, ऋषभ चिन्ह पाए भगवान।।
दिव्य देशना देकर करते, श्री जिन भक्तों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते श्री जिन का गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभ नाथ के समवशरण में, 'वृषभसेन' गणधर स्वामी।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, हुए मोक्ष के अनुगामी।।

दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री वृषभनाथस्य 'वृषभसेनादि' चतुरशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – धर्म प्रवर्तक आदि जिन, मैटे भव जञ्जाल।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य के, हेतु कहूँ जयमाल।।

सुर नर पशु अनगार मुनि यति, गणधर जिनको ध्याते हैं।
श्री आदिनाथ भगवान आपकी, महिमा भक्तामर गाते हैं।।
जो चरण वंदना करते हैं, वह सुख शांति को पाते हैं।
जो पूजा करते भाव सहित, उनके संकट कट जाते हैं।।
तुमने कलिकाल के आदि में, तीर्थंकर बन अवतार लिया।
इस भरत भूमि की धरती का, आकर तुमने उपकार किया।।
जब भोगभूमि का अंत हुआ, लोगों को यह आदेश दिया।
षट्कर्म करो औ कष्ट हरो, जीवों को यह संदेश दिया।।
तुमने शरीर निज आतम के, शाश्वत स्वभाव को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, चेतन स्वरूप पहिचाना है।।
तुमने संयम को धारण कर, छह माह का ध्यान लगाया है।
ले दीक्षा चार सहस्र भूप, उनको भी वन में पाया है।।
जब क्षुधा तृषा से अकुलाए, फल फूल तोड़ने लगे भूप।
तब हुई गगन से दिव्य गूंज, यह नहीं चले निर्ग्रंथ रूप।।
फिर छाल पात कई भूपों ने, अपने ही तन पर लपटाईं।
तब खाने पीने की विधियाँ, उन लोगों ने कई अपनाईं।।
जब चर्या को निकले भगवन्, तब विधि किसी ने न जानी।
छह सात माह तक रहे घूमते, आदिनाथ मुनिवर ज्ञानी।।

राजा श्रेयांस ने पूर्वाभास से, साधु चर्या को जान लिया।
पड़गाहन करके आदिराज को, इच्छुरस का दान दिया।।
विधि दिखाकर आदि प्रभु ने, मुनि चर्या के संदेश दिए।
अक्षय हो गई अक्षय तृतिया, देवों ने पंचाश्चर्य किए।।
प्रभुवर ने शुद्ध मनोबल से, निज आतम ध्यान लगाया है।
चउ कर्म घातिया नाश किए, शुभ केवलज्ञान जगाया है।।
देवों ने प्रमुदित भावों से, शुभ समवशरण था बनवाया।
सौधर्म इन्द्र परिवार सहित, प्रभु पूजन करने को आया।।
सुर नर पशुओं ने जिनवर की, शुभ वाणी का रसपान किया।
श्रद्धान ज्ञान चारित पाकर, जीवों ने स्वपर कल्याण किया।।
कैलाश गिरि पर योग निरोध कर, सब कर्मों का नाश किया।
फिर माघ कृष्ण चौदस को प्रभु ने, मोक्ष महल में वास किया।।
तब निर्विकल्प चैतन्य रूप, शिव का स्वरूप प्रभु ने पाया।
अब उस पद को पाने हेतु, प्रभु विशद भाव मन में आया।।
जो शरण आपकी आता है, वह खाली हाथ न जाता है।
जो भक्तिभाव से गुण गाता है, वह इच्छित फल को पाता है।।
हे दीनानाथ ! अनाथों के, हम पर भी कृपा प्रदान करो।
तुमने मुक्ति पद को पाया, वह 'विशद' मोक्ष फल दान करो।।

(आर्या छन्द)

हे आदिनाथ ! तुमको प्रणाम, हे ज्ञानसरोवर ! मुक्ति धाम।
हे धर्म प्रवर्तक ! तीर्थंकर, शिवपद दाता तुमको प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – आदिनाथ को आदि में, कोटि–कोटि प्रणाम।
'विशद' सिंधु भव सिंधु से, पाऊँ मैं शिवधाम।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अजितनाथ पूजन

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ति की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

सागर का जल पीकर भी हम, तृषा शांत न कर पाए।
जन्मादि जरा के रोग मैटने, प्रासुक जल भरकर लाए।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन के वन में रहकर भी, ताप शांत न कर पाए।
संताप नशाने भव-भव का, शुभ गंध चढ़ाने हम लाए।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अक्षय पद पाने हेतु हम, सदा तरसते आए हैं।
अब अक्षय पद पाने को भगवन्, अक्षय अक्षत लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे ! भगवन् मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

व्याकुल होकर कामवासना, से हम बहु अकुलाए हैं।
अब काम बाण के नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सब जीव रहे व्याकुल, जो क्षुधा से बहु अकुलाए हैं।
हो क्षुधा वेदना नाश प्रभो !, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोह महा, उसके सब जीव सताए हैं।
हम मोह तिमिर के नाश हेतु, यह अतिशय दीपक लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के तीव्र सघन वन से, यह धूप जलाने लाए हैं।
हो अष्ट कर्म का शीघ्र नाश, हम साता पाने आए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की चाहत में सदियों से, सारे जग में हम भटकाए ।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, अत एव चढ़ाने फल लाए।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदि अष्ट द्रव्य, हम श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
हो पद अनर्घ शुभ प्राप्त हमें, हम चरण शरण में आए हैं।।

अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ माह की तिथि अमावस, अजितनाथ लीन्हें अवतार।
धन्य हुई विजया माताश्री, गृह में हुए मंगलाचार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

माघ कृष्ण दशमी को जन्मे, जिनवर अजितनाथ तीर्थेश।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराए, इन्द्र सभी मिलकर अवशेष।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दशमी शुभ माघ बदी पावन, अजितेश तपस्या धारी है।
इस जग का मोह हटाया है, यह संयम की बलिहारी है।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चौपाई)

पौष शुक्ल एकादशी आई, केवलज्ञान जगाए भाई।
तीर्थंकर अजितेश कहाए, सुर-नर वंदन करने आए।।
जिसपद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि चैत्र पञ्चमी जानो, सम्मेद शिखर से मानो।
अजितेश जिनेश्वर भाई, शुभ घड़ी में मुक्ति पाई।।

प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाते, शुभभाव से महिमा गाते।
हम मोक्ष कल्याणक पाएँ, बस यही भावना भाएँ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

मात विजयसेना जितशत्रु, के सुत अजितनाथ भगवान।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत् विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं अजितनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अजित नाथ का समवशरण है साढ़े ग्यारह योजन मान।
तप्त स्वर्ण सम शोभित होते, जिसमें तीर्थंकर भगवान।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं अजितनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अस्सी लाख वर्ष की आयु, अजितनाथ जी पाए महान।
ऊँचाई है धनुष चार सौ, अरू पचास छियालिस गुणवान।।
दिव्य देशना देकर श्रीजिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्यं चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।

ॐ ह्रीं अजितनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नब्बे गणधर अजितनाथ के, 'सिंहसेन' जी रहे प्रधान।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, का हम करते हैं सम्मान।।
दु:ख हर्ता सुख कर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री अजितनाथस्य 'सिंहसेनादि' नवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन पूजा के भाव से, कटे कर्म का जाल।
अजित नाथ जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

(छन्द मोतियादाम)

जय लोक हितंकर देव जिनेन्द्र, सुरासुर पूजे इन्द्र नरेन्द्र।
करें अर्चन कर जोर महेन्द्र, करें पद वन्दन देव शतेन्द्र।।
प्रभु हैं जग में सर्वमहान, करूँ मैं भाव सहित गुणगान।
गर्भ के पूरव से छह मास, बने सुर इन्द्र प्रभु के दास।।
करें रत्नों की वृष्टि अपार, करें पद वन्दन बारम्बार।
मनाते गर्भ कल्याणक आन, करें नित भाव सहित गुणगान।।
प्रभु का होवे जन्म कल्याण, करें पूजा तब देव महान।
ऐरावत लावें इन्द्र प्रधान, करें गुणगान सुरासुर आन।।
करें अभिषेक सभी मिल देव, सुमेरू गिरि के ऊपर एव।
बढ़े जग में आनन्द अपार, रही महिमा कुछ अपरम्पार।।
रहे जग में बन के नर नाथ, झुकाते चरणों में सब माथ।
मिले जब प्रभु को कोई निमित्त, लगे तब संयम में शुभ चित्त।।
गिरि कन्दर शिखरों पर घोर, सुतप धारें अति भाव विभोर।
जगे फिर प्रभु को केवलज्ञान, करें सुर नर पद में गुणगान।।
करें उपदेश प्रभु जी महान, करें सुन के प्राणी कल्याण।
करें प्रभु जी फिर कर्म विनाश, प्रभु करते शिवपुर में वास।।
बने अविकार अखण्ड विशुद्ध, अजरामर होते पूर्ण प्रबुद्ध।
जगी मन में मेरे यह चाह, मिले हमको प्रभु सम्यक् राह।।
करे जो अर्चा भाव विभोर, बढ़े वह मुक्ति पथ की ओर।
'विशद' वह पाए केवल ज्ञान, बने वह शिवपुर का मेहमान।।

(छन्द घत्तानंद)

जय-जय उपकारी संयमधारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
सद्गुण के धारी जिन अविकारी, सर्व दोष के परिहारी।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यं पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – अजितनाथ से नाथ का, कौन करे गुणगान।
चरण वन्दना कर मिले, उभय लोक सम्मान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री संभवनाथ पूजन

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिनपद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ कृपाकर भक्तों पर, मुक्ति का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वेसरी छन्द)

प्रासुक जल के कलश भराए, चरण चढ़ाने को हम लाए।
जन्म जरा मृत्यु भयकारी, नाश होय प्रभु शीघ्र हमारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर घिसकर लाए, चरण शरण में हम भी आए।
विशद भावना हम यह भाए, भव संताप नाश हो जाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर अक्षत थाल भराए, जिन अर्चा को हम ले आए।
हम भी अक्षय पद पा जाएँ, चतुर्गति में न भटकाएँ।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चावल रंग कर पुष्प बनाए, हमको जरा नहीं वह भाए।
यहाँ चढ़ाने को हम लाए, काम वासना मम नश जाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस यह नैवेद्य बनाए, बार-बार खाके पछताए।
क्षुधा शांत न हुई हमारी, नाश करो तुम हे ! त्रिपुरारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय घृत के दीप जलाए, यहाँ आरती करने लाए।
छाया मोह महातम भारी, उससे मुक्ति होय हमारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मबन्ध करते हम आए, भव-भव में कई दुःख उठाए।
धूप जलाने को हम लाए, कर्म नाश करने हम आए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय हमने न पाया, तीन लोक में भ्रमण कराया।
सरस चढ़ाने को फल लाए, मोक्ष महाफल पाने आए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म विशद है मंगलकारी, हम भी उसके हैं अधिकारी।
पद अनर्घ पाने को आए, अर्घ्य चढ़ाने को हम लाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को प्रभु, सम्भव जिन अवतार लिये।
मात सुसेना के उर आए, जग-जन का उपकार किये।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को प्रभु, जन्मे सम्भव जिन तीर्थेश।
न्हवन और पूजन करवाये, इन्द्र सभी मिलकर अवशेष।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंगसिर सुदी पूर्णमासी को, संभव जिन वैराग्य लिए।
निज स्वजन और परिजन सारे, वैभव से नाता तोड़ दिए।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम् जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

चौथ कृष्ण कार्तिक की जानो, संभवनाथ जिनेश्वर मानो।
केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए, सुर-नर वंदन करने आए।।

जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी सुदि चैत्र की आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई।
संभव जिनवर मुक्ति पाए, हम चरणों शीश झुकाए।।
प्रभु चरणों हम अर्घ्य चढ़ाते, शुभभावों से महिमा गाते।
हम भी मोक्ष कल्याणक पाएँ, अन्तिम यही भावना भाएँ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

पिता जितारि मात सुसेना, के सुत सम्भव नाथ कहे।
श्रावस्ती में जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद से मोक्ष गहे।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह योजन समवशरण है, सम्भव नाथ का विस्मयकार।
तप्त स्वर्ण सम रंग प्रभु का, परमौदारिक है अविकार।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस परश्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलाकार।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आयु लाख साठ पूरव की, सम्भव नाथ की रही महान।
ऊँचाई है धनुष चार सौ, छियालिस गुण धारी भगवान।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ दैवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्यः जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर पञ्च एक सौ जानो, श्री सम्भव जिनवर के साथ।
'चारूदत्त' गणधर मुनिवर कई, के पद झुका रहे हम माथ।।
दुःख हर्त्ता सुख कर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री संभवनाथस्य 'चारूदत्तादि' पंचोत्तरशतम् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – सम्भव नाथ जिनेन्द्र के, चरणों में चितधार।
जयमाला गाते विशद, पाने भव से पार।।

(छन्द चामर)

पूर्व पुण्य का सुफल, जिनेन्द्र देव धारते।
तीर्थंकर श्रेष्ठ पद, आप जो सम्हालते।।
पुष्प वृष्टि देव आन, करते हैं भाव से।
जन्म समय इन्द्र सभी, न्हवन करें चाव से।।
चिन्ह देख इन्द्र पग, नाम जो उच्चारते।
जय जय की ध्वनि तब, इन्द्र गण पुकारते।।
क्षुद्र सा निमित्त पाय, संयम प्रभु धारते।
चेतन का चिन्तन शुभ, चित्त से विचारते।।
विश्व वन्दनीय जो, पाप शेष नाशते।
ॐकार रूप दिव्य देशना प्रकाशते।।
श्री जिनेन्द्र ज्ञान ज्ञेय, सर्व लोक जानते।
द्रव्य तत्त्व पुण्य पाप, धर्म को बखानते।।
सर्व दोष भागते हैं, दूर-दूर आपसे।
सर्व दुःख दूर हों, आप नाम जाप से।।
आप सर्व लोक में, अनाथ के भी नाथ हो।

ध्यान करे आपका उन सबके तुम साथ हो।।
इन्द्र और नरेन्द्र और गणेन्द्र आपको भजैं।
सर्वलोक वर्ति जीव, चरण आपके जजैं।।
आपके चरणारविन्द में, करूँ ये प्रार्थना।
तीन काल आपकी, प्राप्त हो आराधना।।
हे जिनेन्द्र ध्यान दो, ज्ञान दो वरदान दो।
कर रहे हम प्रार्थना, प्रार्थना पे ध्यान दो।।
लोक यह अनन्त है, अनन्त का न अन्त है।
जीव ज्ञानवन्त है, शक्ति से भगवन्त है।।
ज्ञान का प्रकाश हो, मोह तिमिर नाश हो।
स्वस्वरूप प्राप्त हो, स्वयं में निवास हो।।
धर्म शुक्ल ध्यान हो, आत्मा का भान हो।
सर्व कर्म हान हो, स्वयं की पहचान हो।।
घातिया हों कर्म नाश, होय ज्ञान का प्रकाश।
अष्ट गुण प्राप्त कर, शिवपुर में होय वास।।
भावना है यह जिनेश, और नहीं कोई शेष।
धर्म जैन है विशेष, सब अधर्म हैं अशेष।।
जैन धर्म धारकर, भव सिन्धु पार कर।
ज्ञान 'विशद' पाएँगे, शिवपुर को जाएँगे।।

(छन्द घत्तानन्द)

सम्भव जिन स्वामी, अन्तर्यामी, मोक्ष मार्ग के पथगामी।
शिवपुर के वासी, ज्ञान प्रकाशी,त्रिभुवन पति हे जगनामी!।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – पुष्प समर्पित कर रहे, जिनवर के पदमूल।
मोक्ष महल की राह में, साधक जो अनुकूल।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

श्री अभिनन्दननाथ पूजन

स्थापना

जय–जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय–जय मुक्ति वधु के स्वामी।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा है मनभावन।
भाव सहित हम करते वन्दन, करते हैं उर में आह्वानन।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय हो अन्तर्यामी।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अष्टक)

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

क्षीर नीर के कलश मनोहर, भरकर के हम लाए हैं।
जन्म मरण के नाश हेतु हम, पूजा करने आए हैं।
भव की तृषा मिटाने वाली, अर्चा है भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

कश्मीरी केसर में चन्दन, हमने श्रेष्ठ घिसाया है।
जिसकी परम सुगन्धि द्वारा, मन मधुकर हर्षाया है।

भव आताप नशाने वाली अर्चा है, भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

कर्म बन्ध के कारण प्राणी, जग के सब दु:ख पाते हैं।
जन्म जरा मृत्यु को पाकर, भव सागर भटकाते हैं।
अक्षय पद देने वाली है, अर्चा जिन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

काम वासना में सदियों से, तीन लोक भटकाए हैं।
पुष्प सुगन्धित लेकर चरणों, मुक्ति पाने आए हैं।
श्री जिनेन्द्र की पूजा पावन, आतम के कल्याण की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

क्षुधा रोग की बाधाओं से, जग में बहुत सताए हैं।

नाश हेतु हम बाधाओं के, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
क्षुधा नाश करने वाली है, पूजा श्री भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

मोह तिमिर में फँसकर हमने, जीवन कई बिताए हैं।
मोह महातम नाश होय मम्, दीप जलाने लाए हैं।
मम अन्तर में होय प्रकाशित, ज्योति सम्यक् ज्ञान की।।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

इन्द्रिय के विषयों में फंसकर, निजानन्द सुख छोड़ दिया।
आत्मध्यान करने से हमने, अपने मुख को मोड़ लिया।
अष्ट कर्म की नाशक होती, अर्चा जिन भगवान की।।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

कर्म शुभाशुभ जो भी करते, उसके फल को पाते हैं।
भेद ज्ञान के द्वारा प्राणी, आतम ज्ञान जगाते हैं।
मोक्ष महाफल देने वाली, पूजा है भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

लोकालोक अनादि शाश्वत, पर द्रव्यों से युक्त कहा।
सप्त तत्व अरु पुण्य पाप की, श्रद्धा के बिन बना रहा।
पद अनर्घ देने वाली है, अर्चा जिन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य (शम्भू छन्द)

छठी शुक्ल वैशाख माह का, शुभ दिन आया मंगलकार।
माँ सिद्धार्था के उर श्री जिन, अभिनंदन लीन्हें अवतार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय–जयकार।
शीष झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ शुक्ल चौदश को जग में, अतिशय हुआ था मंगलगान।
जन्म लिए अभिनन्दन स्वामी, इन्द्र किए तब प्रभु गुणगान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय–जयकार।
शीष झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनदंननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वादशी शुभम् थी माघ सुदी, प्रभु अभिनंदन संयम धारे।
ले चले पालकी में नर–सुर, वह सब बोले जय–जयकारे।।
हम वन्दन करते चरणों में, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनदंननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

चौदस सुदी पौष की आई, अभिनंदन तीर्थंकर भाई।
पावन केवलज्ञान जगाए, सुर–नर वंदन करने आए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अभिनदंननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी शुक्ल वैशाख पिछानो, सम्मेदाचल गिरि से मानो।
अभिनंदन जिन मुक्ति पाए, कर्म नाशकर मोक्ष सिधाए।।
हम भी मुक्तिवधु को पाऐं, पद में सादर शीश झुकाए।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिवपद के धारी।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अभिनदंननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

अभिनन्दन जिन माँ सिद्धार्था, संवर नृप के पुत्र महान।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े दश योजन अभिनन्दन, समवशरण पाए शुभकार।
तप्त स्वर्ण की आभा वाले, बन्दर चिन्ह रहा मनहार।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं।

आयु पचास लाख पूरब की, अभिनन्दन जी पाए हैं।
धनुष तीन सौ अरू पचास के, ऊँचे जिन कहलाए हैं।।
दिव्य देशना देकर करते, श्री जिन भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते श्री जिन का गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन दैवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अभिनन्दन जिनवर के गणधर, 'वज्रादि' हैं एक सौ तीन।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, कहे गये हैं ज्ञान प्रवीण।।
दु:ख हर्त्ता सुख कर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री अभिनन्दन नाथस्य 'वज्रादि' त्र्याधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – अभिनन्दन वन्दन करूँ, भाव सहित नतभाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(सखी छन्द)

जय अभिनन्दन त्रिपुरारी, जय–जय हो मंगलकारी।
तुम जग के संकटहारी, जय–जय जिनेश अविकारी।।
प्रभु अष्टकर्म विनसाए, अष्टम वसुधा को पाए।
तव चरण शरण को पाएँ, भव बन्धन से बच जाएँ।।

हमने भव–भव दुख पाए, अब उनसे हम घबराये।
तुम भव बाधा के नाशी, हो केवल ज्ञान प्रकाशी।।
तव गुण का पार नहीं है, तुम सम न कोई कहीं है।
भव–भव में शरणा पाई, पर आप शरण न भाई।।
यह थे दुर्भाग्य हमारे, जो तुम सम तारणहारे।
मन में मेरे न भाए, अतएव जगत भरमाए।।
अब जागे भाग्य हमारे, जो आए द्वार तुम्हारे।
तव श्रेष्ठ गुणों को गाएँ, न छोड़ कहीं अब जाएँ।।
अर्चा कर ध्यान लगाएँ, तुमको निज हृदय सजाएँ।
तव चरणों में रम जाएँ, जब तक न मुक्ति पाएँ।।
है विनती यही हमारी, हे त्रिभुवन के अधिकारी।
वश यही भावना भाते, प्रभु सादर शीश झुकाते।।
भक्तों पर करुणा कीजे, अब और सजा न दीजे।
हम सेवक बन कर आए, अपनी यह अर्ज सुनाए।।
कई जीव प्रभु तुम तारे, भव सागर पार उतारे।
हे त्रिभुवन के सुख दाता, हे जिनवर ! भाग्य विधाता।।
हे मोक्ष महल के स्वामी ! त्रिभुवन के अन्तर्यामी।
तुमने शिव पद को पाया, यह रही धर्म की माया।।

छन्द घत्तानन्द

हे जिन ! अभिनन्दन, पद में वन्दन, करने हम द्वारे आये।
मेटो भव क्रन्दन, पाप निकन्दन, अर्घ्य चढ़ाने हम लाए।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – भाव सहित वन्दन करूँ, अभिनन्दन जिन देव।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, पूजों तुम्हें सदैव।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

श्री सुमतिनाथ पूजन

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।
सुमतिनाथ पद माथ झुकाकर, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

मोक्ष मार्ग के अनुपम नेता, करते हैं जग का कल्याण।
तीन लोक में मंगलकारी, जिनका गाते सब यशगान।
प्रासुक निर्मल जल के द्वारा, करते हम उनका अर्चन।
जन्म जरा के नाश हेतु हम, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व में सर्वद्रव्य के, ज्ञाता श्री जिन देव कहे।
विशद विनय के साथ चरण में, वन्दन करते भक्त रहे।
परम सुगन्धित चन्दन द्वारा, करते हम प्रभु का अर्चन।
भव संताप नाश करने को, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मुनी गणधर विद्याधर, का जो करते आराधन।
मुक्ति पाने हेतू करते, मूलगुणों का जो पालन।
ललित मनोहर अक्षय अक्षत, से करते प्रभु का अर्चन।
अक्षय पद को पाने हेतु, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव सागर से पार लगाने, हेतू अनुपम पोत कहे।
विशद मोक्ष के पथ पर जिसने, अथक काम के बाण सहे।
वकुल कमल कुन्दादि पुष्प से, करते हम उनका अर्चन।
काम बाण विध्वंश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके ध्यान और चिन्तन से, मिटती भव की पीड़ाएँ।
भूत प्रेत नर पशु शांत हो, करते मनहर क्रीड़ाएँ।।
बावर फैनी मोदक आदि, से जिनका करते अर्चन।
क्षुधा वेदना नाश होय मम, करते हम शत्-शत वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद ज्ञान उद्योतित करते, मोह तिमिर हरने वाले।
मोक्ष मार्ग के राही चरणों, गुण गाते हो मतवाले।
घृत के दीप जलाकर करते, जिनवर के पद में अर्चन।
मोह तिमिर के नाश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मोही होकर के प्रभु ने, मोह पास का नाश किया।
काल अनादि से कर्मों का, बन्धन पूर्ण विनाश किया।
अगर तगर की धूप बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की श्रेष्ठ साधना, कर उत्तम फल पाया है।
चतुर्गति का भ्रमण त्यागकर, शिवपुर धाम बनाया है।
श्री फल, केला, लौंग, इलायची, से करते प्रभु का अर्चन।
मोक्ष महाफल प्राप्त हमें हो, करते हम शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शिला पर वास हेतु प्रभु, अष्ट कर्म का नाश किए।
क्षायिक ज्ञान प्रकट कर अनुपम, पद अनर्घ में वास किए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करता मैं सम्यक् अर्चन।
पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

द्वितिया शुक्ल माह श्रावण की, मात मंगला उर आए।
सुमतिनाथ की भक्ति में रत, देव सभी मंगल गाए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल एकादशि को प्रभु, जन्में सुमतिनाथ भगवान।
जय जयगान हुआ धरती पर, इन्द्र किए अभिषेक महान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी नौमी पावन, श्री सुमतिनाथ दीक्षाधारी।
श्री शिवसुख देने वाली है शुभ, सर्व जगत् मंगलकारी।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(चौपाई)

चैत शुक्ल एकादशी जानो, सुमतिनाथ तीर्थंकर मानो।
केवलज्ञान प्रभु जी पाये, समवशरण सुर नाथ रचाए।।

जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी एकादशी आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई।
सुमतिनाथ जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ती पाए।।
हम भी मुक्तिवधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिवपद के धारी।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

मेघराज नृप मात मंगला, के उर जन्मे सुमति जिनेश।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, तीर्थराज निर्वाण विशेष।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश योजन का समवशरण है, सुमति नाथ का श्रेष्ठ महान।
तप्त स्वर्ण सम अतिशय सुन्दर, प्रभु हैं सर्व गुणों की खान।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है मंगलकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं।

चालिस लाख पूर्व की आयु, सुमति नाथ की रही विशेष।
धनुष तीन सौ है ऊँचाई, केवलज्ञानी रहे जिनेश।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित, हम करते जिनवर का गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ दैवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तौटक' आदि एक सौ सोलह, सुमतिनाथ के रहे गणेश।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष।।
दुःखहर्त्ता सुख कर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री सुमतिनाथस्य 'तौटक' षोडशाधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – मति सुमति करके प्रभु, हो गये आप निहाल।
सुमतिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(सखी छन्द)

जय सुमतिनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तुम हो मुक्ति पथगामी, तुम सर्व लोक में स्वामी।।

प्रभु हो प्रबोध के दाता, जग में जन-जन के त्राता।
तुम सम्यक् ज्ञान प्रदाता, इस जग में आप विधाता।।

है समवशरण सुखकारी, भविजन को आनन्द कारी।
शुभ देवों की बलिहारी, करते हैं अतिशय भारी।।

वह प्रतिहार्य प्रगटाते, भक्ति कर मोद मनाते।
परिवार सहित सब आते, अर्चा करके हर्षाते।।

सुनते जिनवर की वाणी, जो जन-जन की कल्याणी।
प्रभु वीतराग विज्ञानी, आनन्द सुधामृत दानी।।

तुमरी महिमा हम गाते, प्रभु सादर शीश झुकाते।
हम चरण-शरण में आते, आशीष आपका पाते।।

जब से तव दर्शन पाया, प्रभु जी श्रद्धान जगाया।
फिर भेद ज्ञान को पाया, हमने यह लक्ष्य बनाया।।

हम भी सौभाग्य जगाएँ, प्रभु मोक्ष मार्ग अपनाएँ।
तव चरणों शीश झुकाएँ, रत्नत्रय निधि पा जाएँ।।

बनके सम्यक् तपधारी, हो जावें हम अविकारी।
हम बने प्रभु अनगारी, है विशद भावना भारी।।

प्रभु कर्म निर्जरा होवे, अघ कर्म हमारे खोवे।
मम आतम भी शुचि होवे, सब कर्म कालिमा धोवे।।

प्रभु अनन्त चतुष्ट पावें, तव केवल ज्ञान जगावें।
फिर शिवपुर को हम जावें, अरू मुक्ति वधु को पावें।।

हम यही भावना भाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।
हम भाव सहित गुण गाते, प्रभु द्वार आपके आते।।

(छन्द घत्तानन्द)

तुम हो हितकारी, सब दुखहारी, सुमतिनाथ जिनअविकारी।
हे समताधारी ! ज्ञान पुजारी, मोक्ष महल के अधिकारी।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – सर्व कर्म को नाशकर, बने मोक्ष के ईश।
'विशद' ज्ञान पाने प्रभु, चरण झुकाऊँ शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

मति जिन की हुई सु मति धर्म से,
हो गये हैं रहित जो वसु कर्म से।
शांति पायेंगे जो करते प्रभु का मनन,
उनके चरणों में हो विशद सिरसा नमन्।।

श्री पदमप्रभु पूजन

(स्थापना)

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर।।
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन।
ग्रह रवि अरिष्ट नाशक जिन का, हम करते उर में आह्वानन्।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र !अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल जल को प्रासुक करके, अनुपम सुन्दर कलश भराय।
जन्मादि के दुःख मैटन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का चन्दन शीतल, कंचन झारी में भर ल्याय।
भव आताप मिटावन कारण, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक जल से धोकर तन्दुल, परम सुगन्धित थाल भराय।
अक्षय पद को पाने हेतु, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर सुरभित और मनोहर, भाँति-भाँति के पुष्प मँगाय।
कामबाण विध्वंश करन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत से पूरित परम सुगन्धित, शुद्ध सरस नैवेद्य बनाय।
क्षुधा नाश का भाव बनाकर, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित ले दीप मालिका, घृत कपूर की ज्योति जलाय।
मोह तिमिर के नाशन हेतु, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दस प्रकार के द्रव्य सुगंधित, सर्व मिलाकर धूप बनाय।
अष्टकर्म चउगति नाशन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला केला और सुपारी, आम अनार श्री फल लाय।
पाने हेतु मोक्ष महाफल, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक नीर सुगंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले दीप जलाय।
धूप और फल अष्ट द्रव्य ले, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।

रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

माघ कृष्ण की षष्ठी तिथि को, पद्मप्रभु अवतार लिए।
मात सुसीमा के उर आए, जग में मंगलकार किए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को, पृथ्वी पर नव सुमन खिला।
भूले भटके नर-नारी को, शुभम एक आधार मिला।।
जन्म कल्याणक की पूजा, हम करके भाग्य जगाते हैं।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

त्रयोदशी कार्तिक बदि पावन, जग से नाता तोड़ चले।
पद्मप्रभु स्वजन परिजन धन, सबकी आशा छोड़ चले।।
हम भाव सहित वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

(चौपाई)

पूनम चैत्र शुक्ल की आई, पद्मप्रभु तीर्थंकर भाई।
सारे कर्म घातिया नाशे, क्षण में केवलज्ञान प्रकाशे।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।
पद्मप्रभु जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ति पाए।।

हम भी मुक्तिवधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाए।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिव पद के धारी।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

मात सुसीमा धारण नृप के, पद्म प्रभु जी पुत्र महान।
कौशाम्बी में जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि.स्वाहा।

साढ़े नौ योजन का जानो, पद्म प्रभु का समवशरण।
लाल कमल सम तन शोभित है, मैटा प्रभु ने जन्म मरण।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि.स्वाहा।

तीस लाख पूरब की आयु, पद्म प्रभु की रही महान।
धनुष ढाई सौ की ऊँचाई, लाल कमल प्रभु की पहचान।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वज्रचमर' आदि दश इक सौ, पद्मप्रभु के हुए गणेश।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री पद्मनाथस्य 'वज्रचमरादि' दशधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - पद्मप्रभ के चरण में, होती पूरण आस।
कल्मश होंगे दूर सब, है पूरा विश्वास।।

तीन योग से प्रभु पद, वन्दन करूँ त्रिकाल।
पूजा करके भाव से, गाता हूँ जयमाल।।

जय पद्मनाथ पद माथ नमस्ते, जोड़-जोड़ द्वय हाथ नमस्ते।
ज्ञान ध्यान विज्ञान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।
भव भय नाशक देव नमस्ते, सुर-नर कृत पद सेव नमस्ते।
पद्मप्रभ भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।
आतम ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते।
पद झुकते शत इन्द्र नमस्ते, ज्ञान पयोदधि चन्द्र नमस्ते।।
भवि नयनों के नूर नमस्ते, धर्म सुधारस पूर नमस्ते।
धर्म धुरन्धर धीर नमस्ते, जय-जय गुण गम्भीर नमस्ते।।
भव्य पयोदधि तार नमस्ते, जन-जन के आधार नमस्ते।
रागद्वेष मद हनन नमस्ते, गगनाङ्गण में गमन नमस्ते।।
जय अम्बुज कृत पाद नमस्ते, भरत क्षेत्र उपपाद नमस्ते।
मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, कामजयी महावीर नमस्ते।।
विघ्न विनाशक देव नमस्ते, देव करें पद सेव नमस्ते।
सिद्ध शिला के कंत नमस्ते, तीर्थंकर भगवन्त नमस्ते।।
वाणी सर्व हिताय नमस्ते, ज्ञाता गुण पर्याय नमस्ते।
वीतराग अविकार नमस्ते, मंगलमय सुखकार नमस्ते।।
'विशद' ज्ञान के ईश नमस्ते, झुका चरण में शीश नमस्ते।
जोड़ रहे द्वय हाथ नमस्ते, शिवपद दो हे नाथ ! नमस्ते।।

(छंद घत्तानन्द)

जय जय हितकारी करुणाधारी, जग उपकारी जगत् विभु।
जय नित्य निरंजन भव भय भंजन, पाप निकन्दन पद्मप्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - पद्म प्रभ के चरण में, झुका भाव से माथ।
रोग शोक भय दूर हों, कृपा करो हे नाथ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री सुपार्श्वनाथ पूजन

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन करते प्रभो, आये खाली हाथ।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभु स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हम जन्म जन्म के प्यासे हैं, जल से निज प्यास बुझाई है।
मम प्यास शांत न हो पाई, अत एव शरण तव पाई है।।
न जन्म मरण होवे फिर-फिर, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से तप्त हुए, चन्दन से शीतलता पाई।
आताप शांत न हुआ प्रभो, अत एव शरण हमने पाई।।
हो भव आताप का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अव एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन गंध चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव में पद की लालच से, अपना पुरुषार्थ गंवाया है।
पर अक्षय शुभ अविनाशी पद, न हमें कभी मिल पाया है।।
अब अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह अक्षत धवल चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम अग्नि की ज्वाला में, सदियों से जलते आये हैं।
न काम वासना शांत हुई, हमने कई जन्म गंवाएँ हैं।।

हो काम बाण विध्वंस प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
भोजन हमने दिन रात किया, न क्षुधा शांत हो पाई है।
पुद्गल ने पुद्गल को जोड़ा, न चेतन की सुधि आई है।
हो क्षुधा रोग का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, ताजा नैवेद्य चढ़ाते हैं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हम मोह जाल में अटक रहे, न मुक्ति उससे मिल पाई।
इस तन के साज सम्हालों में, न आतम की निधि खिल पाई।
हो मोह अंध का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन दीप जलाते हैं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्मों के बन्धन से अब तक, स्वाधीन नहीं हो पाए हैं।
हमने संसार सरोवर में, फिर-फिर कर गोते खाए हैं।
हो अष्ट कर्म का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह मनहर धूप जलाते हैं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु मोक्ष महाफल न पाया, फल और सभी हमने पाए।
हम सर्व लोक में भटक लिए, अब नाथ शरण में हम आए ।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, हम फल यह विविध चढ़ाते हैं ।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।
संसार सुखों की चाहत में, मन मेरा बहु ललचाया है।
हम भ्रमर बने भटके दर-दर, पर पद अनर्घ न पाया है।
अब प्राप्त हमें हो पद अनर्घ, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

शुक्ल पक्ष भादव की षष्ठी, हुई लोक में मंगलकार।
श्री सुपार्श्व माता वसुन्धरा, के उर आ कीन्हें उपकार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।
ॐ ह्रीं भाद्रपक्षशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
ज्येष्ठ सुदी द्वादशी तिथि को, श्री सुपार्श्व जी जन्म लिए।
सुप्रतिष्ठ नृप माता पृथ्वी, को आकर प्रभु धन्य किए।।
जन्म कल्याणक की पूजा हम, करके भाग्य जगाते हैं।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादशां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
ज्येष्ठ सुदी द्वादशी सुहावन, श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थेश।
केशलोंच कर दीक्षा धारे, प्रभु ने धरा दिगम्बर भेष।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम् जीवन मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

(चौपाई)

षष्ठी फाल्गुन की अंधियारी, चार घातिया कर्म निवारी।
जिन सुपार्श्व ने ज्ञान जगाया, इस जग को संदेश सुनाया।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी को, जिन सुपारसनाथ जी।
मोक्ष गिरि सम्मेद गिरि से, पाए मुनि कई साथ जी।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

कौशाम्बी में जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।
सुप्रतिष्ठ नृप माता पृथ्वी, श्री सुपार्श्व जिन पुत्र महान।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नौ योजन का समवशरण है, जिन सुपार्श्व का गोलाकार।
मरकत मणिसम आभा प्रभु की, स्वस्तिक चिन्ह रहा सुखकार।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बीस लाख पूरव की आयु, जिन सुपार्श्व की रही महान।
दो सौ धनुष रही ऊँचाई, तन की छियालिस हैं गुणवान।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पञ्च ऊन इक शतक गणी थे, श्री सुपार्श्व जिनवर के साथ।
'बलदत्तादी' अन्य मुनीश्वर, को हम झुका रहे हैं माथ।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री सुपार्श्वनाथस्य 'बलदत्तादि' पंचनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन सुपार्श्व की अब यहाँ, गाने को जयमाल।
भक्त चरण में आए हैं, मिलकर बालाबाल।।

(काव्य छन्द)

श्री सुपार्श्व जिनराज, सर्व दुखों के हर्ता।
भक्तों के सरताज, सौख्य समृद्धि कर्त्ता।।

भव रोगों से तृप्त, जीव के हैं प्रभु त्राता।
जिन अनाथ के नाथ, जगत को देते साता।।
नृप प्रतिष्ठ के लाल, पृथ्वी देवी माता।
नगर बनारस जन्म, लिए जिन भाग्य विधाता।।
षष्ठी भादव शुक्ल, गर्भ में आये स्वामी।
अन्तिम पाये गर्भ, मोक्ष के हो अनुगामी।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को, जन्मे श्री जिन देवा।
करते सह परिवार, इन्द्र जिनवर की सेवा।।
स्वर्गों से सौधर्म इन्द्र, ऐरावत लाया।
पाण्डुक शिला पे जाके, प्रभु का न्हवन कराया।।
स्वस्तिक देखा चिन्ह, इन्द्र ने दांये पग में।
जिन सुपार्श्व का जयकारा, गूंजा इस जग में।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को, जिनवर संयम धारे।
केशों का लुन्चन करके, प्रभु वस्त्र उतारे।।
छठी कृष्ण फाल्गुन को, घाती कर्म नशाए।
अक्षय अनुपम अविनाशी, प्रभु ज्ञान जगाए।।
सातें कृष्ण फाल्गुन को, प्रभु जी मोक्ष सिधाए।
तीर्थराज सम्मेद शिखर से, मुक्ति पाए।।
हे सुपार्श्व ! तव चरणों में, हम शीश झुकाते।
विशद मोक्ष हो प्राप्त हमें, हम तव गुण गाते।।

दोहा – पार्श्वमणि सम हैं प्रभु, जिन सुपार्श्व है नाम।
हमको भी निज सम करो, शत्–शत् बार प्रणाम।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

जिन सुपार्श्व हमको मुक्तिवर दीजिए, भव बाधा मेरी जिनवर हर लीजिए।
चरण कमल में करते हैं हम अर्चना, तीन योग से पद में करते वन्दना।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री चन्द्रप्रभु पूजन

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभु ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुःख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

भव सिन्धु में भटका फिरा, अब पार पाने के लिए।
क्षीरोदधि का जल ले आया, मैं चढ़ाने के लिए।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चतुर्गति में भ्रमण कर, दुःख अति ही पाए हैं।
हम चउ गति से छूट जाएँ, गंध सुरभित लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके जगत् में कर्म के वश, दुःख से अकुलाए हैं।
अब धाम अक्षय प्राप्ति हेतु, धवल अक्षत लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोग से उद्विग्न हो, कई दुःख हमने पाए हैं।
अब छूटने को भव दुखों से, पुष्प चरणों लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन की इच्छाएं मिटी न, व्यंजन अनेकों खाए हैं।
अब क्षुधा व्याधि नाश हेतु, सरस व्यंजन लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व अरु अज्ञान से, हम जगत में भ्रमाए हैं।
अब ज्ञान ज्योति उर जले, शुभ रत्न दीप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अघ कर्म के आतंक से, भयभीत हो घबराए हैं।
वसु कर्म के आघात हेतु, अग्नि में धूप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक सभी फल खाए लेकिन, मोक्ष फल न पाए हैं।
अब मोक्षफल की भावना से, चरण श्री फल लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदिक द्रव्य वसु ले, अर्घ्य शुभम् बनाए हैं।
शाश्वत सुखों की प्राप्ति हेतु, थाल भरकर लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

सोलह स्वप्न देखती माता, हर्षित होती भाव विभोर।
रत्न वृष्टि करते हैं सुरगण, सौ योजन में चारों ओर।।
चैत बदी पंचम तिथि प्यारी, गर्भ में प्रभुजी आये थे।
चन्द्रपुरी नगरी को, सुन्दर, आकर देव सजाए थे।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशि पावन, महासेन नृप के दरबार।
जन्म हुआ था चन्द्रप्रभु का, होने लगी थी जय-जयकार।।
बालक को सौधर्म इन्द्र ने, ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, मन मयूर तब हर्षाया।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष बदी ग्यारस को प्रभु ने, राज्य त्याग वैराग्य लिया।
पञ्च मुष्टि से केश लुञ्च कर, महाव्रतों को ग्रहण किया।।
आत्मध्यान में लीन हुए प्रभु, निज में तन्मय रहते थे।
उपसर्ग परीषह बाधाओं को, शांतभाव से सहते थे।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन बदी सप्तमी के दिन, कर्म घातिया नाश किए।
निज आतम में रमण किया अरु, केवल ज्ञान प्रकाश किए।।
अर्ध अधिक वसु योजन परिमित, समवशरण था मंगलकार।
इन्द्र नरेन्द्र सभी मिल करते, चन्द्रप्रभु की जय-जयकार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ललितकूट सम्मेदशिखर पर, फाल्गुन शुक्ल सप्तमी वार।
वसुकर्मों का नाश किया अरु, नर जीवन का पाया सार।।
निर्वाण महोत्सव किया इन्द्र ने, देवों ने बोला जयकार।
चन्द्रप्रभु ने चन्द्र समुज्ज्वल सिद्धशिला पर किया विहार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

जन्म बनारस नगरी पाए, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।
चन्द्र प्रभु जी चन्द्रपुरी में, महासेन नृप के दरबार।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े आठ योजन का भाई, चन्द्र प्रभु का समवशरण।
उदित चाँद सम कान्ति प्रभु की, सुर नर वन्दन करें चरण।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आयु शुभ दश लाख पूर्व की, चन्द्र प्रभु जी पाए हैं।
धनुष ड़ेढ़ सौ के ऊँचे प्रभु, चिन्ह चाँद प्रगटाए हैं।
दिव्य देशना देकर करते श्री जिन भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते श्री जिन का गुणगान।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन अधिक नव्वे गणधर थे, चन्द्र प्रभु के साथ महान।
'दत्तादि' कई अन्य मुनीश्वर, का हम करते हैं गुणगान।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं ह्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री चंद्रप्रभस्य 'दत्तादि' त्रिनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – चन्द्रप्रभु के चरण में, करता हूँ नत भाल।
गुणमणि माला हेतु मैं, कहता हूँ जयमाल।।

ऋषि मुनि यतिगण सुरगण मिलकर, जिनका ध्यान लगाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दु:ख उनके पास न आते हैं।
जो चरण शरण में रहते हैं, उनके संकट कट जाते हैं।।
अघ कर्म अनादि से मिलकर, भव वन में भ्रमण कराते हैं।
जो चरण शरण प्रभु की पाते, वह उनके पास न आते हैं।।
अध्यात्म आत्मबल का गौरव, उनका स्वमेव वृद्धि पाता।
श्रद्धान ज्ञान आचरण सुतप, आराधन में मन रम जाता।।
तुमने सब बैर विरोधों में, समता का ही रस पान किया।
उस समता रस को पाने हेतु, मैंने प्रभु का गुणगान किया।।
तुम हो जग में सच्चे स्वामी, सबको समान कर लेते हो।
तुम हो त्रिकालदर्शी भगवन्, सबको निहाल कर देते हो।।
तुमने भी तीर्थ प्रवर्तन कर, तीर्थंकर पद को पाया है।
तुम हो महान् अतिशयकारी, तुममें विज्ञान समाया है।।
तुम गुण अनन्त के धारी हो, चिन्मूरत हो जग के स्वामी।
तुम शरणागत को शरणरूप, अन्तर ज्ञाता अन्तर्यामी।।
तुम दूर विकारी भावों से, न राग द्वेष से नाता है।

जो शरण आपकी आ जाए, मन में विकार न लाता है।।
सूरज की किरणों को पाकर ज्यों, फूल स्वयं खिल जाते हैं।
फूलों की खूशबू को पाने, मधुकर मधु पाने आते हैं।।
हे चन्द्रप्रभु ! तुम चंदन हो, जग को शीतल कर देते हो।
चन्दन तो रहा अचेतन जड़, तुम पर की जड़ता हर लेते हो।।
सुनते हैं चन्द्र के दर्शन से, रात्रि में कुमुदनी खिल जाती।
पर चन्द्र प्रभु के दर्शन से, चित्त चेतन की निधि मिल जाती।।
तुम सर्व शांति के धारी हो, मेरी विनती स्वीकार करो।
जैसे तुम भव से पार हुए, मुझको भी भव से पार करो।।
जो शरण आपकी आता है, मन वांछित फल को पाता है।
ज्यों दानवीर के द्वारे से, कोइ खाली हाथ न आता है।।
जिसने भी आपका ध्यान किया, बहुमूल्य सम्पदा पाई है।
भगवान आपके भक्तों में, सुख साता आन समाई है।।
जो भाव सहित पूजा करते, पूजा उनको फल देती है।
पूजा की पुण्य निधि आकर, संकट सारे हर लेती है।।
जिस पथ को तुमने पाया है, वह पथ शिवपुर को जाता है।
उस पथ का जो अनुगामी है, वह परम मोक्ष पद पाता है।।
यह अनुपम और अलौकिक है, इसका कोई उपमान नहीं।
वह जीव अलौकिक शुद्ध रहे, जग में कोई और समान नहीं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय–जय जिन चन्दा, पाप निकन्दा, आनन्द कन्दा सुखकारी।
जय करूणाधारी, जग हितकारी, मंगलकारी अवतारी।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – शिवमग के राही परम, शिव नगरी के नाथ।
शिवसुख को पाने विशद, चरण झुकाते माथ।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पुष्पदन्त पूजन

(स्थापना)

सुर नर किन्नर विद्याधर भी, पुष्पदंत को ध्याते हैं।
महिमा जिनकी जग में अनुपम, उनके गुण को गाते हैं।।
पुष्पदंत हैं कन्त मोक्ष के, उनके चरणों में वंदन।
'विशद' भाव से करते हैं हम, श्री जिनवर का आह्वानन्।।
हे जिनेन्द्र ! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
हे पुष्पदंत ! हे कृपावन्त !, प्रभु हमको दर्श दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

कर्मोंदय के कारण हमने, विषयों का व्यापार किया।
मिथ्या और कषायों के वश, हेय तत्त्व से प्यार किया।।
जन्म जरादि नाश हेतु हम, चरणों नीर चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

योगों की चंचलता द्वारा, कर्मों का आस्रव होता।
अशुभ कर्म के कारण प्राणी, जग में खाता है गोता।।
भव आतप के नाश हेतु हम, चंदन चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषय रहे क्षणभंगुर, बिजली सम अस्थिर रहते।
पुण्य के फल से मिल पाते हैं, पापी कई इक दुःख सहते।।
पद अखंड अक्षय पाने को, अक्षत चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शील विनय जप तप व्रत संयम, प्राप्त नहीं कर पाया है।
मोह महामद में फंसकर के, जीवन व्यर्थ गंवाया है।।
काम बाण के नाश हेतु हम, चरणों पुष्प चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों की मृग तृष्णा में ही, सारे जग में भ्रमण किया।
विषयों की ज्वाला में जलकर, जन्म लिया अरु मरण किया।।
क्षुधा व्याधि के नाश हेतु हम, व्यंजन सरस चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव शास्त्र गुरु सप्त तत्त्व में, जिसको भी श्रद्धान नहीं।
भवसागर में रहे भटकता, उसका हो निर्वाण नहीं।।
मोह तिमिर के नाश हेतु हम, मणिमय दीप जलाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म का फल है दुष्फल, निष्फल जो पुरुषार्थ करे।
अष्ट गुणों को हरने वाले, प्राणी का परमार्थ हरे।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, अनुपम धूप जलाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कर्मों के फल से जग के, सारे फल हमने पाए।
मोक्ष महाफल नहीं मिला यह, फल खाकर के पछताए।।
मोक्ष महाफल प्राप्ति हेतु हम, श्रीफल चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल जल सम शुद्ध हृदय, चंदन सम मनहर शीतलता।
अक्षत सम अक्षय भाव रहे, है सुमन समान सुकोमलता।।
हैं मिष्ठ वचन मोदक जैसे, दीपक सम ज्ञान प्रकाश रहा।
यश धूप समान सुविकसित कर, फल श्रीफल जैसे सुफल अहा।।
अपने मन के शुभ भावों का, यह चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

फाल्गुन कृष्ण पक्ष की नौमी, काकंदीपुर में भगवान।
पुष्पदंत अवतार लिए हैं, रमा मात के उर में आन।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन शुक्ला प्रतिपदा को, जन्में पुष्पदंत भगवान।
नृप सुग्रीव रमा माता के, गृह में हुआ था मंगलगान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन माह शुक्ल की एकम्, दीक्षा धारे जिन तीर्थेश।
पुष्पदंतजी हुए विरागी, राग रहा न मन में लेश।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

कार्तिक शुक्ल दोज पहिचानो, पुष्पदंत तीर्थंकर मानो।
केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए, समवशरण तब इन्द्र बनाए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

अष्टमी शुभ आश्विन शुक्ला, सम्मेदगिरि से ध्यान कर।
पुष्पदंत जिन मोक्ष पहुँचे, जगत् का कल्याण कर।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

काकन्दीपुर जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।
नृप सुग्रीव रमा माता के, सुत हैं पुष्पदन्त भगवान।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ योजन का समवशरण है, पुष्प दन्त जिन का मनहार।
कुन्द पुष्प सम देह सुसुन्दर, मगर चिन्ह पग में शुभकार।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आयु शुभ दो लाख पूर्व की, पुष्पदन्त पाए भगवान।
हाथ चार सौ है ऊँचाई, प्रभु जी हैं छियालिस गुणवान।।
दिव्य देशना देकर करते श्री, जिन भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते श्री जिन का गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आठ अधिक अस्सी गणधर शुभ, पुष्पदन्त के साथ रहे।
'श्री नंगादि' अन्य मुनीश्वर, श्रेष्ठ प्रभु के भक्त कहे।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री पुष्पदंतस्य 'नंगादि' अष्टाशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – मुक्ति वधू के कंत तुम, पुष्पदंत भगवान।
गुण गाऊँ जयमाल कर, पाऊँ मोक्ष निधान।।

(पद्धडि छन्द)

जय-जय जिनवर श्री पुष्पदंत, तुम मुक्ति वधु के हुए कंत।
जय शीश झुकाते चरण संत, जय भवसागर का किए अंत।।

जय फाल्गुन बदि नौमी सुजान, सुरपति कीन्हे प्रभु गर्भ कल्याण।
जय मगसिर बदि एकम् सुकाल, जय जन्म लिया प्रभु प्रात:काल।।

जय जन्म महोत्सव इन्द्र देव, खुश होकर करते हैं सदैव।
जय ऐरावत सौधर्म लाय, जय मेरू गिरि अभिषेक कराय।।

जय वज्रवृषभ नाराच देह, जय सहस आठ लक्षण सुगेह।
प्रभु दीर्घकाल तक राज कीन, मगसिर सित एकम् सुपथ लीन।।

जय पुष्पक वन पहुँचे सुजाय, प्रभु सालिवृक्ष ढिग ध्यान पाय।
जय कर्म घातिया किए नाश, निज आतम शक्ति कर प्रकाश।।

जय कार्तिक सुदि द्वितिया महान्, प्रभु पाये केवलज्ञान भान।
जय-जय भविजन उपदेश पाय, प्रभु के चरणों में शीश नाय।।

प्रभु दीजे जग को ज्ञानदान, पाते कई प्राणी दृढ़ श्रद्धान।
कई ज्ञान सहित चारित्रधार, करुणाकर जग जन जलधिसार।।

जय भादों सुदि आठें प्रसिद्ध, प्रभु कर्म नाश कर हुए सिद्ध।
जय-जय जगदीश्वर जगत् ईश, तव चरणों में नत नराधीश।।

जय द्रव्यभाव नो कर्म नाश, जय सिद्ध शिला पर किए वास।
जय ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप, तुम हो अनंत चैतन्य रूप।।

निर्द्वन्द्व निराकुल निराधार, निर्मल निष्कल प्रभु निराकार।
श्री जिन के गुण का नहीं पार, भक्तों के हो प्रभु कर्ण धार।।

जो ध्याये तुमको हे जिनेश, वह गुण पाए जग में विशेष।
जो चरण झुकाए 'विशद' शीश, वह शिव रमणी का बने ईश।।

दोहा– आलोकित प्रभु लोक में, तव परमात्म प्रकाश।
आनंदामृत पानकर, मिटे आस की प्यास।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

सोरठा– पुष्पदंत भगवान, ज्ञान सुमन प्रभु दीजिए।
पुष्पांजलि अर्पित विशद, नाथ क्लेश हर लीजिए।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

विधि को सु विधि करके सुविधि जिन हुये,
लोक के शीश को आप जाकर छुये।
सन्त हो अन्त कर कन्त शिव के परम,
तब चरण द्वय में हो विशद शिरसा नमन्।।

श्री शीतलनाथ पूजन

(स्थापना)

शीतलनाथ अनाथों के हैं, स्वामी अनुपम अविकारी।
शांति प्रदायक सब सुखकर्त्ता, ग्रह अरिष्ट पीड़ाहारी।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा अनुपम, करे कर्म का पूर्ण शमन।
भाव सहित हम करतें प्रभु का, हृदय कमल में आह्वानन्।।
यह भक्त खड़े हैं आश लिए, उनकी विनती स्वीकार करो।
तुम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, वश इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज - सोलहकारण की)

चरण चढ़ाऊ निर्मल नीर, त्रयधारा देकर गंभीर।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
जन्मादि का रोग नशाय, कर्म नाश मुक्ति पद पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसकर के चन्दन गोशीर, मैटे जो भव-भव की पीर।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
प्राणी का भवताप नशाय, अतिशयकारी सौख्य दिलाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अमल अखण्ड महान, पद पाए हम हे भगवान!
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
सुरभित अक्षत धोकर लाय प्रभु चरणों में दिए चढ़ाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित ले मनहार, रंग बिरंगे विविध प्रकार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
काम बाण का रोग नशाय, चेतन की शक्ति खिल जाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के ताजे ले पकवान, चढ़ा रहे करके गुणगान।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
क्षुधा रोग मेरा नश जाय, तव चरणों की भक्ति पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर का होय विनाश, पाएँ सम्यक् ज्ञान प्रकाश।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
रत्नमयी शुभ दीप जलाय, प्रभु के चरणों दिए चढ़ाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध युत धूप महान, करने अष्ट कर्म की हान।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
अष्ट कर्म को पूर्ण नशाय, सिद्ध शिला हमको मिल जाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला आम अनार, भांति-भांति के ले मनहार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
श्री जिनेन्द्र के चरण चढ़ाय, मोक्ष सुफल पाने को भाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य ले मंगलकार, अर्घ्य चढ़ाए अपरम्पार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
पद अनर्घ हमको मिल जाय, रत्नत्रय पा मुक्ति पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

चैत बदी आठें शीतल जिन, मात सुनंदा उर धारे।
रत्नवृष्टि करके इन्द्रों ने, बोले प्रभु के जयकारे।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय–जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ बदी द्वादशी सुहावन, भद्दलपुर में शीतलनाथ।
मात सुनंदा के गृह जन्मे, जिनके चरण झुकाऊँ माथ।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय–जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण द्वादशी सुहावन, जिनवर श्री शीतल स्वामी।
जैन दिगम्बर दीक्षा धारे, बने मोक्ष के अनुगामी।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पौष कृष्ण की चौदश आई, शीतलनाथ जिनेश्वर भाई।
बने उसी दिन केवलज्ञानी, ज्ञान सुधामृत के वरदानी।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

अश्विन शुक्ला अष्टमी, जिन श्री शीतलनाथ जी।
मोक्ष गिरि सम्मेद से, पाए कई मुनि साथ जी।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

मात सुनन्दा दृढ़रथ के सुत, शीतल नाथ जिनेन्द्र कहे।
भद्दलपुर में जन्में प्रभुजी, तीर्थराज से मोक्ष गहे ।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाये नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े सात योजन का अनुपम, शीतल जिन का समवशरण।
तप्त स्वर्ण सम आभा वाले, नाशे जग का जन्म मरण।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक लाख पूरव की आयु, पाए शीतल नाथ जिनेश।
नब्बे धनुष रही ऊँचाई, कल्पवृक्ष पग चिन्ह विशेष।
दिव्य देशना देकर करते, श्री जिन भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते श्री जिन का गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक अधिक अस्सी गणधर शुभ, शीतलनाथ के हुए महान।
'अनगारादी' अन्य मुनीश्वर, का हम करते हैं सम्मान।।
दुःखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शीतलनाथस्य 'अनगारादि' एकाशीतिः गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – तीन लोक में पूज्य हैं, शीतल नाथ त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, उनकी हम जयमाल।।

(पद्धरि छन्द)

जय शीतलनाथ सुधीर धीर, जय ज्ञान सुधामृत धरणधीर।
जय धर्म शिरोमणि परम वीर, जय भव सागर के श्रेष्ठ तीर।।

जय भद्दलपुर में जन्म लीन, जय दृढ़रथ नृप शुभ राज कीन।
जय मात सुनन्दा गर्भ पाय, सपने सोलह देखे सुखाय।।

जय चैत कृष्ण आठे जिनेश, जिन गर्भ प्राप्त कीन्हे विशेष।
जय माघ बदी बारस सुजान, प्रभु जन्म लिए जग में महान।।

खुशियाँ छाई जग में अपार, वन्दन कीन्हे सुर बार–बार।
सौधर्म इन्द्र तव चरण आय, ऐरावत अपने साथ लाय।।

आई थी उसके शची साथ, लीन्हा बालक को स्वयं हाथ।
पाण्डुक वन को चल दिया इन्द्र, थे साथ वहाँ पर कई सुरेन्द्र।।

फिर न्हवन किए प्रभु का अपार, महिमा का जिसकी नहीं पार।
तव कल्पवृक्ष लक्षण सुजान, भक्ति कीन्हीं प्रभु की महान।।

चरणों में सब कीन्हे प्रणाम, प्रभु का शीतल जिन दिए नाम।
फिर माघ बदी बारस सुजान, प्रभु तप धारे जग में महान।।

कीन्हें जिन आतम का सुध्यान, फिर पाए केवल ज्ञान भान।
तिथि पौष बदी चौदस जिनेश, शत् इन्द्र किए भक्ति विशेष।।

तव समवशरण रचना महान, सुरगण मिलकर कीन्हें प्रधान।
फिर दिव्य देशना दिए नाथ, गणधर झेले तब झुका माथ।।

तब भव्य जीव पाए सुज्ञान, संयम धारे कई जीव आन।
फिर अश्विन सुदि आठे जिनेश, जिन कर्म नाश कीन्हे अशेष।।

सम्मेद शिखर से मुक्ति पाय, फिर सिद्ध शिला पहुँचे जिनाय।
शिवपुर का कीन्हे प्रभु राज, जिन पर हम करते सभी नाज।।

दोहा – शीतल नाथ जिनेन्द्र के, चरण झुकाऊँ माथ।
मोक्ष मार्ग में दीजिए, हम सबका प्रभु साथ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा – भाव सहित वन्दन करूँ, चरणों में हे ईश।
विशद भाव से पाद में, झुका रहे हम शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री श्रेयांसनाथ पूजन

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम, अन्तर में जिनके चमक रहा।
भव्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा।
संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में
वह तीर्थंकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में।
हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही।
प्रभु बढ़े आप जिस मारग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जन्मादि जरा से हारे, इस जग के प्राणी सारे।
हम उससे बचने आये, ये नीर चढ़ाने लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भाई संसार असारा, सन्तप्त जगत है सारा।
हम चन्दन श्रेष्ठ घिसाते, चरणों में नाथ चढ़ाते।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद कभी न पाया, प्राणी जग में भटकाया।
यह अक्षत श्रेष्ठ धुलाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयतान् पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है काम वासना भाई, सारे जग में दुःखदायी।
हम उससे बचने आए, प्रभु पुष्प चढ़ाने लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सब क्षुधा रोग के रोगी, हैं साधु योगी भोगी।
अब मैटो भूख हमारी, नैवेद्य चढ़ाते भारी।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह महातम भारी, मोहित है दुनियाँ सारी।
हम मोह नशाने आए, प्रभु दीप जलाकर लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन को दिया हवाला, कर्मों ने घेरा डाला।
हम कर्म नशाने आये, यह सुरभित गंध जलाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोक्ष महाफल पाएँ, भव बाधा पूर्ण नशाएँ।
यह फल ताजे हम लाए, चरणों में श्रेष्ठ चढ़ाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पद अनर्घ को पाये, हम अनुपम थाल भराये।
यह आठों द्रव्य मिलाते, प्रभु चरणों श्रेष्ठ चढ़ाते।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ बदी षष्ठी है पावन, सिंहपुरी नगरी में आन।
गर्भकल्याण प्राप्त किए शुभ, श्री श्रेयांसनाथ भगवान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन बदी तिथि ग्यारस को, पाए जन्म श्रेयांस कुमार।
विमलराज रानी विमला के, गृह में हुआ मंगलाचार।।
जन्म कल्याणक की पूजा हम, करते भक्ति भाव से।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, रत्नत्रय की नाव से।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशी फाल्गुन कृष्णा की, श्री श्रेयांसनाथ भगवान।
राग-द्वेष तज दीक्षा धारे, सर्व लोक में हुए महान्।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयासंनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द चामर)

माघ कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम्।
श्री श्रेयांस तीर्थेश, आप हुए सुमंगलम्।।

कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णमासी माह श्रावण, सम्मेदगिरि से ध्यान कर।
श्रेय जिन स्वधाम पहुँचे, जगत् का कल्याण कर।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

विमल राय विमला के नन्दन, श्री श्रेयांस जिनराज महान।
सिंहपुरी में जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांस नाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सात योजन का समवशरण शुभ, पाए श्रेयांस नाथ भगवान।
तप्त स्वर्ण सम काया वाले, गेंडा चिन्ह रही पहिचान।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांस नाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाख चौरासी वर्ष की आयु, जिन श्रेयांस की रही महान।
अस्सी धनुष की ऊँचाई, गुण अनन्त पाए भगवान।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'सौधर्मादि' रहे सतत्तर, जिन श्रेयांस के गणधर साथ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, को हम झुका रहे हैं माथ।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री श्रेयांसनाथस्य 'सौधर्मादि' सप्तसप्तति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – इन्द्र सुरासुर चरण में, झुकते हैं भूपाल।
श्री श्रेयांस जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

(काव्य छन्द)

जय-जय श्रेयांसनाथ, प्रभु आप कहाए।
जय-जय जिनेन्द्र आप, तीर्थेश पद पाए।।
प्रभु सिंहपुरी नगरी में, जन्म लिया है।
विमला श्री माता को, प्रभु धन्य किया है।।
राजा विमल प्रभु के, प्रभु लाल कहाए।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण, अष्टमी को गर्भ में आए।।
फाल्गुन बदी ग्यारस, प्रभु जन्म पाए हैं।
सौधर्म आदि इन्द्र, चरण सिर झुकाए हैं।।
पाण्डुक शिला पे जाके, अभिषेक कराया।
गेण्डा का चिन्ह देख, सारे जग को बताया।।
श्रेयांस नाथ जिनवर का, नाम तब दिया।
आके शची ने प्रभु का, श्रृंगार शुभ किया।।
इक्कीस लाख वर्ष का, कुमार काल है।
युवराज सुपद पाया, प्रभु ने विशाल है।।

अस्सी धनुष की जिनवर, शुभ देह पाए हैं।
आयु चौरासी लाख वर्ष की गिनाए हैं।।
श्री का विनाश देख, वैराग्य धर लिया।
फाल्गुन बदी सुग्यारस, प्रभु ध्यान शुभ किया।।
जाके मनोहर वन में, तेला किए प्रभो।
फिर घातिया विनाश करके, हो गये विभो।।
शुभ माघ की अमावस का, दिन शुभम रहा।
कैवल्य ज्ञान पाये, श्रेयांस जिन अहा।।
रचना समवशरण की, तब देव शुभ किए।
प्रभु के चरण में ढोक आके, देव सब दिए।।
ॐकार रूप दिव्य ध्वनि, दीन्हे प्रभु अहा।
जीवों के लिए धर्म का, साधन महा रहा।।
धर्मादि सात सत्तर, गणधर थे पास में।
जो दिव्य देशना की, रहते थे आस में।।
करके विहार जिनवर, सम्मेद गिरि गये।
आश्चर्य वहाँ देवों ने, किए कुछ नये।।
श्रावण की पूर्णिमा को, सब कर्म नसाए।
फिर सिद्ध शिला पर, अपना धाम बनाए।।
शाश्वत अखण्ड सुख फिर, पाए प्रभु अहा।
वह सौख्य प्राप्त करने का, भाव मम रहा।।

दोहा – श्री श्रेयांस जिनदेव जी, करो श्रेय का दान।
दाता तीनों लोक के, श्रेयस् करो प्रदान।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – जो पद पाया आपने, शाश्वत रहा महान।
वह पद पाने के लिए, किया 'विशद' गुणगान।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री वासुपूज्य पूजन

(स्थापना)

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतिदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम, मम् उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

हम काल अनादि से जग में, कर्मों के नाथ सताए हैं।
तुम सम निर्मलता पाने को, प्रभु निर्मल जल भर लाए हैं।।
हम नाश करें मृतु जन्म जरा, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के विषय भोग सारे, हमने भव-भव में पाए हैं।
हम स्वयं भोग हो गये मगर, न भोग पूर्ण कर पाए हैं।।
हम भव तापों का नाश करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल अनंत अक्षय अखंड, अविनाशी पद प्रभु पाए हैं।
स्वाधीन सफल अविचल अनुपम, पद पाने अक्षत लाए हैं।।
अक्षय स्वरूप हो प्राप्त हमें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जग में बलशाली प्रबल काम, उस काम को आप हराए हैं।
प्रमुदित मन विकसित पुष्प प्रभु, चरणों में लेकर आए हैं।।
हम काम शत्रु विध्वंस करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषयों की लालच से, चारों गति में भटकाए हैं।
यह क्षुधा रोग न मैट सके, अब क्षुधा मैटने आये हैं।।
नैवेद्य समर्पित करते हम, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मोह महा मिथ्या कलंक, आदि सब दोष नशाए हैं।
त्रिभुवन दर्शायक ज्ञान विशद, प्रभु अविनाशी पद पाए हैं।।
मोहांधकार क्षय हो मेरा, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है कर्म जगत् में महाबली, उसको भी आप हराए हैं।
गुप्ति आदि तप करके क्षय, कर्मों का करने आये हैं।।
हम धूप अनल में खेते हैं, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग से अति भिन्न अलौकिक फल, निर्वाण महाफल पाये हैं।
हम आकुल व्याकुलता तजने, यह श्री फल लेकर आये हैं।।
हम मोक्ष महाफल पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सद् असद् द्रव्य जो हैं, उन सबके अर्घ बताए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, हम अर्घ बनाकर लाए हैं।।

हम पद अनर्घ को पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ति दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

छटवीं कृष्ण अषाढ़ की, हुआ गर्भ कल्याण।
सुर नर किन्नर भाव से, करते प्रभु गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, जन्मे श्री भगवान।
सुर नर वंदन कर रहे, वासुपूज्य पद आन।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, तप धारे अभिराम।
सुर नर इन्द्र महेन्द्र सब, करते चरण प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपो मंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों कृष्ण द्वितिया तिथि, पाये केवलज्ञान।
समवशरण में पूजते, सुर नर ऋषि महान्।।4।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण द्वितीयायां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों शुक्ला चतुर्दशी, प्रभु पाए निर्वाण।
पाँचों कल्याणक हुए, चंपापुर में आन।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्ष मंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

वसुपूज्य नृप जयावती सुत, वासुपूज्य जी कहलाए।
चम्पापुर में गर्भ जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष प्रभु जी पाए।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाये नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े छह योजन का भाई, वासुपूज्य का समवशरण।
लाल रंग में शोभा पाते, श्री जिनेन्द्र भव ताप हरण।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जी अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लाख बहत्तर वर्ष की आयु, वासुपूज्य की कही विशेष।
सत्तर धनुष रही ऊँचाई, भैंसा लक्षण पाए जिनेश।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री मंदर आदि छियासठ शुभ, गणधर वासुपूज्य के साथ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, को हम झुका रहे हैं माथ।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री वासुपूज्यस्य 'मंदरादि' षट्षष्ठि गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– वासुपूज्य वसुपूज्य सुत, जयावती के लाल।
वसु द्रव्यों से पूजकर, करूँ विशद जयमाल।।

(छंद मोतियादाम)

प्रभु प्रगटाए दर्शन ज्ञान, अनंत सुखामृत वीर्य महान्।
प्रभु पद आये इन्द्र नरेन्द्र, प्रभु पद पूजें देव शतेन्द्र।।
प्रभु सब छोड़ दिए जग राग, जगा अंतर में भाव विराग।
लख्यो प्रभु लोकालोक स्वरूप, झुके कई आन प्रभु पद भूप।।
तज्यो गज राज समाज सुराज, बने प्रभु संयम के सरताज।
अनित्य शरीर धरा धन धाम, तजे प्रभु मोह कषाय अरु काम।।

ये लोक कहा क्षणभंगुर देव, नशे क्षण में जल बुद-बुद एव।
अनेक प्रकार धरी यह देह, किए जग जीवन मांहि सनेह।।
अपावन सात कुधातु समेत, ठगे बहु भांति सदा दुख देत।
करे तन से जिय राग सनेह, बंधे वसु कर्म जिये प्रति येह।।
धरें जब गुप्ति समिति सुधर्म, तबै हो संवर निर्जर कर्म।
किए जब कर्म कलंक विनाश, लहे तब सिद्ध शिला पर वास।।
रहा अति दुर्लभ आतम ज्ञान, किए तिय काल नहीं गुणगान।
भ्रमे जग में हम बोध विहीन, रहे मिथ्यात्व कुतत्त्व प्रवीण।।
तज्यो जिन आगम संयम भाव, रहा निज में श्रद्धान अभाव।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल, सुभाव मिले नहिं तीनों काल।।
जग्यो सब योग सुपुण्य विशाल, लियो तब मन में योग सम्हाल।
विचारत योग लौकांतिक आय, चरण पद पंकज पुष्प चढ़ाय।।
प्रभु तब धन्य किए सुविचार, प्रभु तप हेतु किए सुविहार।
तबै सौधर्म 'सु शिविका' लाय, चले शिविका चढ़ि आप जिनाय।।
धरे तप केश सुलौंच कराय, प्रभु निज आतम ध्यान लगाय।
भयो तब केवल ज्ञान प्रकाश, किए तब सारे कर्म विनाश।।
दियो प्रभु भव्य जगत उपदेश, धरो फिर प्रभु ने योग विशेष।
तभी प्रभु मोक्ष महाफल पाय, हुए करुणानिधि अनंत सुखाय।।
रचें हम पूजा सुभाव विभोर, करें नित वंदन द्वयकर जोर।
मिले हमको शिवपुर की राह, 'विशद' जीवन में ये ही चाह।।

(छंद घत्तानंद)

जय-जय जिनदेवं हरिकृत सेवं, सुरकृत वंदित शीलधरं।
भव भय हरतारं शिव कर्त्तारं, शीलागारं नाथ परं।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- चम्पापुर में ही प्रभु, पाए पंच कल्याण।
गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाए पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री विमलनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

विमलनाथ के चरण कमल में, सादर हम करते वन्दन।
पुष्पाञ्जलि करके चरणों में, करते हैं हम अभिनन्दन।।
विमल गुणों के धारी जिन प्रभु, भाव सहित करते अर्चन।
हृदय कमल के सिंहासन पर, करते हम प्रभु आह्वानन।
चरण कमल में आए हम प्रभु, तुमसे है कुछ अपनापन।
तीन योग से तीन काल में, करते हम शत् बार नमन।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज - चौबीसी पूजन की)

होवे जन्मादि विनाश, निर्मल जल लाए।
चरणों में तव हे नाथ ! चढ़ाने को आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हो भव आताप विनाश, चन्दन घिस लाए।
तव पद चर्चन को नाथ, चरणों में आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद पाने हेतु, प्रभु चरणों आए।
यह उत्तम अक्षत नाथ ! चढ़ाने को लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हो काम वासना नाश, भावना हम भाए।
यह पुष्प सुगन्धित नाथ, चढ़ाने को लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हो क्षुधा व्याधि का नाश, चरणों सिर नाए।
लेकर ताजे नैवेद्य, चढ़ाने को आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो मोह तिमिर का नाश, चरणों हम आए।
यह घृत के पावन दीप, जलाकर हम लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो वसु कर्मों का नाश, शरण में हम आए।
यह अष्ट गंध शुभ साथ, जलाने को लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो मोक्ष महल में वास, चढ़ाने फल लाए।
राखो प्रभु मेरी लाज, भक्त चरणों आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

पाएँ हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य देने लाए।
होवे सिद्धों में वास, भावना यह भाए।।

हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

दोहा

ज्येष्ठ बदी दशमी प्रभु, सुश्यामा उर आन।
नगर कम्पिला अवतरे, विमलनाथ भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ बदी द्वादशी को, विमलनाथ भगवान।
नगर कम्पिला जन्म से, हो गया सर्व महान्।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छन्द)

सुदि माघ चौथ विमलेश, जिन दीक्षा धारी।
पाए प्रभु सुगुण विशेष, जगत् मंगलकारी।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चामर छन्द)

आषाढ़ माह शुक्ल पक्ष, तिथि षष्ठी मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र विमलनाथ, ज्ञान रूप मंगलम्।।

कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्ण षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

विमलनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ।
कृष्ण पक्ष आठें आषाढ़ की, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धि पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन (शम्भू छन्द)

माँ श्यामा सुव्रत वर्मा के, पुत्र कहे श्री विमल जिनेश।
नगर कम्पिला जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद से मोक्ष विशेष।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह योजन के समवशरण में विमलनाथ जी शोभ रहे।
तप्त स्वर्ण सम आभा वाले, सूकर लक्षण युक्त कहे।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साठ लाख वर्षों की आयु, विमल नाथ की रही महान।
साठ धनुष तन की ऊँचाई, गुण अनन्त पाए भगवान।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विमल नाथ के 'जय' आदि शुभ, पचपन गणधर रहे महान।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, को हम झुका रहे हैं माथ।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री विमलनाथस्य 'जयादि' पंचपंचाशत गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **विमल गुणों के कोष हैं, विमल नाथ भगवान।**
गाते हैं जयमालिका, करने निज कल्याण।।

(काव्य छन्द)

विमल नाथ जी विमल गुणों के धारी रे।
तीर्थंकर पदवी के जो अधिकारी रे।।
महिमा जिनकी इस जग से है न्यारी रे।
सर्व जगत में जिनवर मंगलकारी रे।।
दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य के धारी रे।
सुख अनन्त के होते जिन अधिकारी रे।।
तीर्थंकर जिन होते हैं अविकारी रे।
महिमा जिनकी होती विस्मयकारी रे।।
समवशरण होता है महिमाशाली रे।
भवि जीवों को देता है खुशहाली रे।।
अष्ट भूमियाँ जिसमें सुन्दरआली रे।
गंधकुटी है तीन पीठिका वाली रे।।
तीन गति के जीव सभा में भाई रे।
पूजा का सौभाग्य जगाते भाई रे।।
मुनि आर्यिका देव देवियां भाई रे।
नर पशु के सब इन्द्र मिले सुखदायी रे।।

देव कई अतिशय दिखलाते भाई रे।
करते है गुणगान हृदय हर्षाई रे।।
प्रातिहार्य वसु प्रगटित होते भाई रे।
तरू अशोक है शोक निवारी भाई रे।।
भामण्डल सिंहासन अनुपम भाई रे।
देव दुन्दुभि बजती है सुखदायी रे।।
चौसठ चँवर ढौरते सुरपति भाई रे।
गंधोदक की वृष्टि हो सुखदायी रे।।
छत्र त्रय की शोभा कही न जाई रे।
दिव्य देशना खिरती जग सुखदायी रे।।
कमलाशन पर अधर विराजे भाई रे।
जग में अनुपम है प्रभु की प्रभुताई रे।।
सर्व कर्म का नाश किए जिनराई रे।
सिद्ध शिला पर वास किए तब भाई रे।।
जिनकी महिमा जिनवाणी में गाई रे।
सौख्य अनन्तानन्त प्रभु उपजाई रे।।
हमने भी यह शुभम् भावना भाई रे।
मुक्ति वधु को हम भी पाएँ भाई रे।।
मोक्ष मार्ग की विधि, श्रेष्ठ अपनाई रे।
आज परम यह श्रेष्ठ घड़ी शुभ आई रे।।

दोहा – विमल नाथ के चरण में, पूरी होगी आस।
मोक्ष महल को पाएँगे, है पूरा विश्वास।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – तव चरणों में आए हम, विमल गुणों के नाथ।
विमल नाथ तव चरण में, विशद झुकाते माथ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अनन्तनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

प्रभु अनन्त गुण पाने वाले, जिन अनन्त कहलाए हैं।
ध्यान योग के द्वारा प्रभु जी, अनन्त चतुष्टय पाए हैं।
हे अनन्त ! भगवन्त आपके, चरणों हम करते अर्चन।
मोक्ष महल का पंथ दिखाओ, करते उर में आह्वानन्।
मिला और न कोई हमको, मोक्ष मार्ग का राही नाथ।
आकर हमको मार्ग दिखाओ, नाथ निभाओ मेरा साथ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल नन्दीश्वर)

यह प्रासुक निर्मल नीर, कलशा पूर्ण भरूँ।
पाऊँ भवदधि का तीर, धारा तीन करूँ।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन ले केसर गार, कंचन पात्र भरूँ।
चरणों में चर्चूं नाथ !, भव संताप हरूँ।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ले तन्दुल अमल अखण्ड, अनुपम थाल भरूँ।
पाऊँ अक्षय पद नाथ !, चरणों पुञ्ज धरूँ।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह परम सुगन्धित पुष्प, चढ़ाकर हर्षाए।
करने भव ताप विनाश, चरणों हम आए।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ ! भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे घृत के नैवेद्य, थाली भर लाए।
हो क्षुधा रोग का नाश, चढ़ाने को आए।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रजाल, अग्नि में जारी।
हो मोह ताप का नाश, मिथ्या तमहारी।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में खेऊँ धूप, सुरभित मनहारी।
करके कर्मों का नाश, होऊँ अविकारी।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल ले रसदार, थाली भर लाए।
पाने मुक्ति फल सार, चढ़ाने को आए।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन आदि मिलाय, अर्घ्य बनाते हैं।
पद पाने हेतु अनर्घ, श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

दोहा

अनंतनाथ भगवान का, हुआ गर्भ कल्याण।
एकम् कार्तिक कृष्ण की, जयश्यामा उर आन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की द्वादशी, सिंहसेन दरबार।
जन्मे प्रभो अनंत जिन, हुआ मंगलाचार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छन्द)

बारस बदि ज्येष्ठ महान्, हुए प्रभु अविकारी।
श्री अनंतनाथ भगवान, बने थे अनगारी।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द चामर)

चैत कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र अनंतनाथ, ज्ञान रूप मंगलम्।।
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

श्री अनंत जिन चैत अमावस, मोक्ष कई मुनियों के साथ।
गिरि सम्मेद शिखर से भगवन्, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन (शम्भू छंद)

हरिषेण सुरजा माँ के गृह, नगर अयोध्या जन्म लिए।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ति, अनन्तनाथ जी प्राप्त किए।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े पाँच योजन का सुन्दर, अनन्त नाथ का समवशरण।
तप्त स्वर्ण सम आभा तन की, छियालिस मूलगुण किए वरण।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आयु तीस लाख वर्षों की, अनन्तनाथ की रही महान।
धनुष पचास रही ऊँचाई, सेही प्रभु की है पहचान।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री अनन्त जिनवर के गणधर, आगम में बतलाए पचास।
'अरिष्टादि' कई अन्य मुनीश्वर, के पद में हो मेरा वास।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री अनन्तनाथस्य 'अरिष्टादिक' पंचाशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – चिन्मय चिंतामणि प्रभु, गुण अनन्त की खान।
गाते हम जय मालिका, हे अनन्त ! भगवान।।

(छन्द चामर)

दर्श करके आपका, यह कमाल हो गया।
अर्च के पादारविन्द, मैं निहाल हो गया।।
धन्य यह घड़ी हुई, व धन्य जन्म हो गया।
धन्य नेत्र हो गये, प्रभु धन्य शीश हो गया।।
पूज्य नाथ आप हैं, मैं पुजारी हो गया।
देशना से आपकी, मोह दूर हो गया।।
धन्य आत्म तत्त्व का भी, ज्ञान प्राप्त हो गया।
मोह व मिथ्यात्व नाथ, आज मेरा खो गया।।
आत्मा अनन्त है, अनन्त दीप्तिमान है।
गुण अनन्त की निधान, आत्म कीर्तिमान है।।
दर्शज्ञान वीर्य शुभ, अनन्त सौख्यवान है।

निर्विकार चेतना स्वरूप की निधान है।।
आत्मज्ञान ध्यान से, सर्व कर्म नाश हो।
एक आत्म ज्ञान से, राग का विनाश हो।।
आत्म ज्ञान हीन जीव, लोक में भ्रमाएगा।
साम्यभाव हीन कभी, मोक्ष नहीं पाएगा।।
मोक्ष धाम दे यही, कोइ अन्य से न पाएगा।
स्वात्म ज्ञान ध्यान हीन, ठोकरें ही खाएगा।।
सौख्य दुःख जन्म मृत्यु, शत्रु कोई मित्र हो।
लाभ या अलाभ में भी, साम्यता पवित्र हो।।
साम्य भाव प्राप्त हो, न राग न विकार हो।
कोई भी उपसर्ग हो, शत्रु का प्रहार हो।।
नाथ आप पादमूल, एक ही है चाहना।
मोक्ष मार्ग प्राप्त हो बस, और कोई चाह ना।।
कर रहे हैं आप से हम, नाथ यही प्रार्थना।
अष्ट द्रव्य साथ ले प्रभु, कर रहे हम अर्चना।।
बार-बार हाथ जोड़, कर रहे हम वन्दना।
अष्ट कर्म का प्रभु अब, होय कभी बन्ध ना।।

दोहा - ब्रह्मा तुम विष्णु तुम्हीं, नारायण तुम राम।
तुम ही शिव जिनवर-तुम्हीं, चरणों 'विशद' प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(आडिल्य छन्द)

जिन अनन्त भगवान आपका नाम है।
चरणों प्रभु अनन्तानन्त प्रणाम है।।
तव गुण पाने आए हैं हम भाव से।
पूजा अर्चा वन्दन करते चाव से।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री धर्मनाथ जिन पूजन

स्थापना (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ ! हे धर्मतीर्थ !, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ।
तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ।।
तुमने मुक्ति पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन।
मम हृदय कमल के बीच कर्णिका, में आकर तिष्ठो भगवन्।।
भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ति के हेतु पुकारा है।
न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

हम निर्मल जल भर लाएँ, चरणों में धार कराएँ।
जन्मादि रोग नशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन यह श्रेष्ठ घिसाए, पद में अर्चन को लाए।
संसार ताप विनशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय अक्षत लाए, अक्षय पद पाने आए।
प्रभु अक्षय पदवी पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन के पुष्प मँगाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए।
प्रभु काम बाण नश जाए, भव से मुक्ति मिल जाए।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य बनाए, हम क्षुधा नशाने आये।
प्रभु क्षुधा रोग नश जाए, भव से मुक्ति मिल जाए।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह नशाने आए, अनुपम यह दीप जलाए।
प्रभु मोह नाश हो जाए, भव से मुक्ति मिल जाये।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजी यह धूप बनाए, अग्नि से धूम उड़ाएँ।
प्रभु कर्म नाश हो जाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विविध सरस फल लाए, ताजे हमने मँगवाए।
हम मोक्ष महाफल पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आठों द्रव्य मिलाए, यह पावन अर्घ्य बनाए।
हम पद अनर्घ पा जाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

तेरस शुक्ल वैशाख की, मात सुव्रता जान।
जिनके उर में अवतरे, धर्मनाथ भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला त्रयोदश्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी तेरस तिथि, जन्मे धर्म जिनेन्द्र।
करते हैं अभिषेक सब, सुर-नर-इन्द्र महेन्द्र।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छन्द)

तेरस सुदि माघ महान्, प्रभो दीक्षा धारे।
श्री धर्मनाथ भगवान, बने मुनिवर प्यारे।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

पौष शुक्ला पूर्णिमा को, हुए मंगलकार हैं।
धर्म जिन तीर्थेश ज्ञानी, कर्म घाते चार हैं।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल पक्ष की, धर्मनाथ जिनवर स्वामी।
गिरि सम्मेद शिखर से जिनवर, बने मोक्ष के अनुगामी।।
अष्ट गुणों की सिद्धि पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्तिपथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन (शम्भू छन्द)

मात सुव्रता भानुराय गृह, जन्मे धर्म नाथ भगवान।
रत्नपुरी को धन्य किए प्रभु, गिरि सम्मेदशिखर निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच योजन का समवशरण है, धर्मनाथ का अतिशयकार।
तप्त स्वर्ण सम आभा तन की, वज्रदण्ड लक्षण मनहार।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्यः जलादि अर्घ्यं नि.स्वाहा।

आयु है दश लाख वर्ष की, छियालिस मूलगुणों के नाथ।
एक सौ अस्सी हाथ प्रभु का, अवगाहन भी जानो साथ।।

ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा हम, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'अरिष्ट सेनादि' तैतालिस, धर्मनाथ के कहे गणेश।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष।।
दुःखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री धर्मनाथस्य 'अरिष्टसेनादि' त्रिचत्वारिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – पूजा कर जिन राज की, जीवन हुआ निहाल।
धर्मनाथ भगवान की, गाते अब जयमाल।।

(तर्ज – भक्ति बेकरार है)

धर्मनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त की खान हैं।
दिव्य देशना देकर प्रभु जी, करते जग कल्याण हैं।।
सर्वार्थ–सिद्धि से चय करके, रत्नपुरी में आये जी।
मात सुव्रता भानु नृप के, गृह में मंगल छाये जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

रत्नपुरी में देवों ने कई, रत्न श्रेष्ठ वर्षाए जी।
दिव्य सर्व सामग्री लाकर, नगरी खूब सजाए जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

चौथ कृष्ण की ज्येष्ठ माह में, सारे कर्म नशाए जी।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर पदवी पाए जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

हम भी शिव पद पाने की शुभ, विशद भावना भाते जी।
तीन योग से प्रभु चरणों में, सादर शीश झुकाते जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

त्रयोदशी शुभ माघ शुक्ल की, जन्मोत्सव प्रभु पायाजी।
पाण्डुक वन में इन्द्रों द्वारा, शुभ अभिषेक कराया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
वज्र दण्ड लख दांये पग में, नामकरण शुभ इन्द्र किया।
धर्म ध्वजा के धारी अनुपम, धर्मनाथ शुभ नाम दिया।।
धर्मनाथ भगवान ...
अष्ट वर्ष की उम्र प्राप्त कर, देशव्रतों को धारा जी।
युवा अवस्था में राजा पद, प्रभु ने श्रेष्ठ सम्हारा जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
त्रयोदशी को माघ शुक्ल की, संयम पथ अपनाया जी।
पंच मुष्ठि से केश लुंचकर, रत्नत्रय शुभ पाया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
उभय परिग्रह त्याग प्रभु ने, आतम ध्यान लगाया जी।
धर्म ध्यान कर शुक्ल ध्यान का, अनुपम शुभ फल पाया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
चार घातिया कर्मनाश कर, केवल ज्ञान जगाया जी।
रत्नमयी शुभ समवशरण तब, इन्द्रों ने बनवाया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
गंध कुटी में कमलासन पर, प्रभु ने आसन पाया जी।
दिव्य देशना देकर प्रभु ने, सब का मन हर्षाया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

दोहा – धर्मनाथ जी धर्म का, हमें दिखाओ पंथ।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, होय कर्म का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – रत्नत्रय की नाव से, पार करें संसार।
विशद भावना बस यही, पावें भव से पार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री शांतिनाथ पूजन

(स्थापना)

हे शांतिनाथ ! हे विश्वसेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन।
हे कामदेव ! हे चक्रवर्ति ! है तीर्थंकर पद अभिनन्दन।।
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतिमय हो।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ ! शीघ्र उनका क्षय हो।।
यह शीश झुकाते चरणों में, आशीष आपका पाने को।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को।।
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं।
आह्वानन् करने हेतु नाथ !, यह पुष्प मनोहर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

हे नाथ ! नीर को पीकर हम, इस तन की प्यास बुझाते हैं।
किन्तु कुछ क्षण के बाद पुनः, फिर से प्यासे हो जाते हैं।।
है जन्म जरा मृत्यु दुखकर, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।
हम नीर चढ़ाते चरणों में, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! हमारे इस तन को, चन्दन शीतल कर देता है।
आता है मोह उदय में तो, सारी शांति हर लेता है।।
हम भव आतप से तप्त हुए, हे नाथ ! पूर्ण इसका क्षय हो।
यह चन्दन अर्पित करते हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! लोक में क्षयकारी, सारे पद हमने पाए हैं।
न प्राप्त हुआ है शाश्वत पद, उसको पाने हम आए हैं।।
हम पूजा करते भाव सहित, इस पूजा का फल अक्षय हो।
शुभ अक्षत चरण चढ़ाते हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! सुगन्धी पुष्पों की, मन के मधुकर को महकाए।
किन्तु सुगन्ध यह क्षयकारी, जो हमको तृप्त न कर पाए।।
है काम वासना दुखकारी, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।
हम पुष्प चढ़ाते हैं पुष्पित, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन से नाथ सदा, हम क्षुधा शांत करते आए।
किन्तु हम काल अनादि से, न तृप्त अभी तक हो पाए।।
यह क्षुधा रोग करता व्याकुल, इसका हे नाथ ! शीघ्र क्षय हो।
नैवेद्य समर्पित करते हैं, मम् जीवन भी मंगलमय हो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक से हुई रोशनी तो, खोती है बाह्य तिमिर सारा।
छाया जो मोह तिमिर जग में, वह रोके ज्ञान का उजियारा।।
मोहित करता है मोह महा, यह मोह नाथ मेरा क्षय हो।
हम दीप जलाकर लाए हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में गंध जलाने से, महकाए चारों ओर गगन।
किन्तु कर्मों का कभी नहीं, हो पाया उससे पूर्ण शमन।।
हैं अष्ट कर्म जग में दुखकर, उनका अब नाथ मेरे क्षय हो।
हम धूप जलाने आए हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फल को पाने भटक रहे, जग के सब फल निष्फल पाए।
हम भटक रहे हैं सदियों से, वह फल पाने को हम आए।।
दो श्रेष्ठ महाफल मोक्ष हमें, हे नाथ ! आपकी जय जय हो।
हैं विविध भांति के फल अर्पित, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अष्ट द्रव्य हम लाए हैं, हमने शुभ अर्घ्य बनाया है।
पाने अनर्घ पद प्राप्त प्रभु, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाया है।।
हमको डर लगता कर्मों से, हे नाथ ! दूर मेरा भय हो।
हम अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित मम् जीवन भी शांतिमय हो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य (शम्भू छन्द)

माह भाद्र पद कृष्ण पक्ष की, तिथि सप्तमी रही महान्।
चय कीन्हे सर्वार्थसिद्धि से, पाए आप गर्भ कल्याण।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूंजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तम्यां गर्भमङ्गल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष में, चतुर्दशी है सुखकारी।
तीन लोक में शांति प्रदाता, जन्म लिए मंगलकारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी शुभ रही महान् ।
केश लुंच कर दीक्षाधारी, हुआ आपका तप कल्याण।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष माह में शुक्ल पक्ष की, दशमी हुई है महिमावान।
चार घातिया कर्म विनाशी, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।।

स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय–जय कार।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानमङ्गल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी मंगलकारी।
गिरि सम्मेद शिखर से अनुपम, मोक्ष गये जिन त्रिपुरारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय जय कार।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष मङ्गलमण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

विश्वसेन ऐरा देवी के, शांतिनाथ जी पुत्र महान।
नगर हस्तिनापुर में जन्मे, तीर्थराज पर है निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्यो: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति नाथ के समवशरण का, साढ़े चार योजन विस्तार।
तप्त स्वर्ण सम तन अति सुन्दर, हिरण चिन्ह शोभे मनहार।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लाख वर्ष की आयु अनुपम, पाए शांतिनाथ जिनेश।
चालिस धनुष की ऊँचाई शुभ, त्रय पद पाए प्रभु विशेष।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांतिनाथ स्वामी के गणधर, 'चक्रायुध' आदी छत्तीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री शांतिनाथस्य 'चक्रायुधादि' षट्त्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – शान्तिनाथ की भक्ति से, शान्ति होय त्रिकाल।
वन्दन करते भाव से, गाते हैं जयमाल ।।

(तर्ज – मेरे मन मंदिर में आन पधारो ...)

मेरे हृदय कमल पर आन, विराजो शांतिनाथ भगवान।
सुर नर मुनिवर जिनको ध्याते, इन्द्र नरेन्द्र भी महिमा गाते ।।
जिनका करते निशदिन ध्यान – विराजो ...।
प्रभु सर्वार्थ सिद्धि से आए, देवों ने तब हर्ष मनाए ।
भारी किया गया यशगान – विराजो ... ।।
प्रभु का जन्म हुआ मन भावन, रत्न वृष्टि तब हुई सुहावन ।
जग में हुआ सुमंगल गान – विराजो ... ।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, देवों ने उत्सव करवाया ।
मिलकर हस्तिनागपुर आन – विराजो ... ।।
काम देव पद तुमने पाया, छह खण्डों पर राज्य चलाया ।
पाई चक्रवर्ति की शान – विराजो ... ।।
यह सब भोग जिन्हें न भाए, सभी त्याग जिन दीक्षा पाए ।
जाकर वन में कीन्हा ध्यान – विराजो ... ।।
तीर्थंकर पदवी के धारी महिमा जिनकी जग से न्यारी ।
तुमने पाए पञ्चकल्याण – विराजो ... ।।

तुमने कर्म घातिया नाशे, क्षण में लोकालोक प्रकाशे ।
पाये क्षायिक केवल ज्ञान – विराजो... ।।
ॐकार मय जिनकी वाणी, जन–जन की जो है कल्याणी ।
सारे जग में रही महान् – विराजो ... ।।
शेष कर्म भी न रह पाए, पूर्ण नाश कर मोक्ष सिधाए ।
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण – विराजो ... ।।
जो भी शरणागत बन आया, उसको प्रभु ने पार लगाया ।
प्रभु जी देते जीवन दान – विराजो ... ।।
शांति नाथ शांति के दाता, अखिल विश्व के आप विधाता ।
सारा जग गाये यशगान – विराजो ... ।।
शरणागत बन शरण में आए, तव चरणों में शीष झुकाए ।
करलो हमको स्वयं समान – विराजो ... ।।
रोम–रोम में वास तुम्हारा, ऋणी रहेगा तव जग सारा ।
तुम हो जग में कृपा निधान – विराजो ... ।।
प्रभु जग मंगल करने वाले, दुखियों के दुख हरने वाले ।
तुमने किया जगत कल्याण – विराजो ... ।।
सारा जग है झूठा सपना, व्यर्थ करे जग अपना–अपना ।
प्राणी दो दिन का मेहमान – विराजो ... ।।
शांति नाथ हैं शांति सरोवर, शांति का बहता शुभ निर्झर ।
तुमसे यह जग ज्योर्तिमान – विराजो ... ।।

(आर्या छन्द)

शांति नाथ अनाथों के हैं, नाथ जगत में शिवकारी।
चरण शरण को पाने वाला, होता जग मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशक परम शान्ति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा – शांति मिले विशेष, पूजा कर जिनराज की।
रहे कोई न शेष, दु:ख दारिद्र सब दूर हों।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री कुन्थुनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

कुन्थु जिन की अर्चना को, भाव से हम आए हैं।
पुष्प यह अनुपम सुगन्धित, साथ अपने लाए हैं।
कामदेव चक्री जिनेश्वर, तीन पद के नाथ हैं।
जोड़कर द्वय हाथ अपने, पद झुकाते माथ हैं।
हे नाथ ! हमको मोक्ष पथ का, मार्ग शुभ दर्शाइये।
प्रभु करुण होकर हृदय में, आज मेरे आईये।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौबोला छन्द)

छानके निर्मल जल भर लाए, उसको गरम कराते हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, जिन पद श्रेष्ठ चढ़ाते है।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का पावन चंदन, केसर संग घिसा लाए।
भव आताप मिटाने हेतु, चरण चढ़ाने हम आए।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वासमती के अक्षय अक्षत, श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
अक्षय पद पाने को भगवन्, चरण शरण में आए हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन से शुभ पुष्प सुगन्धित, चुनकर के हम लाए हैं।
काम बाण की महावेदना, शीघ्र नशाने आए हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए हैं।
क्षुधा वेदना नाश हेतु प्रभु, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय घृत के दीप मनोहर, अतिशय यहाँ जलाते हैं।
मोह महातम नाश हेतु हम, जिनवर के गुण गाते हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध मय धूप जलाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, चरण शरण को पाते हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे-ताजे श्रेष्ठ सरस फल, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतु, भाव सहित गुण गाए हैं।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्पादि, चरुवर दीप जलाते हैं।
धूप और फल साथ मिलाकर, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य (दोहा)

श्रीमती के गर्भ में, कुंथुनाथ भगवान।
सावन दशमी कृष्ण की, पाए गर्भ कल्याण।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम् सुदी वैशाख माह में, कुंथुनाथ जी जन्म लिए।
मात श्रीमती से जन्मे प्रभु, हस्तिनागपुर धन्य किए।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हो हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

वैशाख सुदी एकम् तिथि पाय, दीक्षा पाए कुंथु जिनाय।
हुए स्वात्म रस में लवलीन, कर्म किए प्रभु क्षण में क्षीण।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

चैत्र शुक्ला तीज स्वामी, कुंथु जिन तीर्थेश जी।
ज्ञान केवल प्राप्त कीन्हें, दिए शुभ संदेश जी।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला तृतीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

कुंथुनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ।
एकम् सुदी वैशाख माह को, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

(शम्भू छन्द)

भूप शूरप्रभ श्रीमति के, कुन्थुनाथ जी पुत्र महान।
नगर हस्तिनापुर में जन्मे, गिरि सम्मेद है मुक्तिधाम।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार योजन का समवशरण शुभ, कुन्थुनाथ का रहा महान।
अतिशय आभा तप्त स्वर्ण सम, बकरा है प्रभु की पहचान।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस पंच कम लाख वर्ष की, आयु पाए कुन्थु जिनेश।
चौंतिस धनुष रही ऊँचाई, त्रय पद पाए प्रभु विशेष।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा हम, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुन्थुनाथ जिनवर के गणधर, 'अमृतसेनादी' पैतीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
दुःखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री कुंथुनाथस्य 'अमृतसेनादि' पंचत्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – गुण गाते जिनदेव के, गुण पाने मनहार।
जयमाला गाते यहाँ, प्रभु की बारम्बार।।

(वेसरी छन्द)

कुन्थुनाथ तीर्थंकर स्वामी, केवल ज्ञानी अंतर्यामी।
उनकी हम जयमाला गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
सर्वार्थ–सिद्धि से चय कर आये, नगर हस्तिनापुर उपजाए।
माता श्रीमती को जानो, सूर्यसेन नृप पितु पहिचानो।।
प्रभु ने अतिशय पुण्य कमाया, तीर्थंकर पदवी को पाया।
कामदेव की पदवी पाई, चक्रवर्ति पद पाए भाई।।
तप्त स्वर्ण सम तन था प्यारा, मोहित जो करता था न्यारा।
चक्ररत्न प्रभु ने प्रगटाया, छह खण्डों पर राज्य चलाया।।
होकर नव निधियों के स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।

चौदह रत्न आपने पाए, त्याग सभी संयम अपनाए।।
तृण की भांति सब कुछ छोड़ा, सारे जग से नाता तोड़ा।
भोगों में जो नहीं लुभाए, परिजन उन्हें रोक न पाए।।
केश लौंचकर दीक्षाधारी, संयम धार बने अनगारी।
निज आतम का ध्यान लगाए, संवर और निर्जरा पाए।।
कर्म घातिया प्रभु ने नाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।
समवशरण तब देव बनाए, भक्ति करके वह हर्षाए।।
पाँच हजार धनुष ऊँचाई, समवशरण की जानो भाई।
बीस हजार सीढ़ियाँ जानों, अष्ट भूमिया अतिशय मानो।।
कमलासन पर जिन को जानो, अधर विराजें ऐसा मानो।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, जन-जन के मन तब हर्षाए।।
प्रातिहार्य तब प्रगटे भाई, यह है जिन प्रभु की प्रभुताई।
कोई सद्श्रद्धान जगाते, कोई संयम को पा जाते।।
लगें सभाएँ बारह भाई, जिनकी महिमा कही न जाई।
मुनि आर्यिका गणधर आवें, देव देवियाँ भाग्य जगावें।।
मानव और पशु भी आते, भाव सहित प्रभु के गुण गाते।
योग निरोध प्रभु जी कीन्हें, कर्म नाश शिव पदवी लीन्हें।।

दोहा - भाते हैं यह भावना, शिव नगरी के नाथ।
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - चक्री काम कुमार जी, तीर्थंकर जिनदेव।
यही भावना है 'विशद', अर्चा करूँ सदैव।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अरहनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए।।
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ।।
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द - भुजंग प्रयात)

प्रभो ! नीर निर्मल ये प्रासुक कराके।
चढ़ाने को लाये हैं कलशा भरके।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! गंध केशर घिसा के हम लाए।
भवताप के नाश हेतु हम आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

परम थाल तन्दुल के हमने भराए।
विशद भाव अक्षय सुपद के बनाए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सलौने सुगन्धित खिले फूल लाए।
प्रभो ! काम बाधा नशाने को आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य हमने सरस ये बनाए।
क्षुधा रोग के नाश हेतु चढ़ाए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! दीप घृत के मनोहर जलाए।
महामोह तम नाश करने को आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! धूप हमने दशांगी जलाई।
सुधी नाश कर्मों की मन में जगाई।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! श्रेष्ठ ताजे सरस फल मँगाए।
महामोक्ष फल प्राप्त करने को आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

मिलाके सभी द्रव्य का अर्घ्य लाए।
परम श्रेष्ठ शाश्वत सुपद पाने आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

फाल्गुन शुक्ला तीज को, अरहनाथ भगवान।
मात मित्रसेना वती, उर अवतारे आन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

अगहन शुक्ला चतुर्दशी को, भूप सुदर्शन के दरबार।
हस्तिनागपुर अरहनाथ जी, जन्म लिए हैं मंगलकार।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हो हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

अगहन सुदी दशमी जिनराज, धारे प्रभु संयम का ताज।
भेष दिगम्बर धारे नाथ, जिनके चरण झुकाऊँ माथ।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

द्वादशी कार्तिक सुदी की, कर्म नाशे चार हैं।
जिन अरह तीर्थेश ज्ञानी, हुए मंगलकार हैं।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

चैत कृष्ण की तिथि अमावस, गिरि सम्मेदशिखर शुभ धाम।
अरहनाथ जिन मोक्ष पधारे, तिनके चरणों करूँ प्रणाम।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

भूप सुदर्शन माँ मित्रा के, सुत हैं अरहनाथ शुभ नाम।
नगर हस्तिनापुर जन्मे प्रभु, गिरि सम्मेद है मुक्तिधाम।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ के समवशरण का, साढ़े तीन योजन विस्तार।
तप्त स्वर्ण वत् आभा तन की, नहीं गुणों का प्रभु के पार।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस चौरासी वर्ष प्रभु की, आयु का है श्रेष्ठ कथन।
तीस धनुष तन की ऊँचाई, त्रय पद का भी है वर्णन।।

ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अरहनाथ जिनवर के गणधर, 'श्री सुषेण' आदी थे तीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री अरहनाथस्य 'श्री सुषेणादि' त्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जयमाला गाते परम, भाव सहित हे नाथ!
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।

(छन्द टप्पा)

काम देव चक्री पद पाया, बने मोक्ष गामी।
तीर्थंकर की पदवी पाए, कुन्थुनाथ स्वामी।।
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
फाल्गुन कृष्ण तीज अवतारे, हस्तिनापुर स्वामी।
मात सुमित्रा के उर आये, अपराजित गामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
मगसिर शुक्ला चौदस तिथि को, जन्म लिए स्वामी।
इन्द्रों ने अभिषेक कराया, जिनवर का नामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर है ... ।।
कार्तिक शुक्ल द्वादशी तिथि को, बने विशद ज्ञानी।

समवशरण में कमलासन पर, अधर हुए स्वामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
चैत्र कृष्ण की तिथि अमावस, बने मोक्ष गामी।
अक्षय अनुपम सुख पाये तब, शिवपुर के स्वामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ति, पाये जिन स्वामी।
सिद्ध शुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्ध बने नामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पावें स्वामी।
रत्नत्रय को पाकर हम भी, बने मोक्ष गामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
संयम त्याग तपस्या करना, कठिन रहा स्वामी।
फिर भी हमने लक्ष्य बनाया, बन के अनुगामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय–जय हितकारी, संयमधारी, गुण अनन्त के अधिकारी।
तुम हो अविकारी, ज्ञान पुजारी, सिद्ध सनातन अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – अरहनाथ के साथ में, हुए जीव कई सिद्ध।
सिद्ध दशा हमको मिले, जो है जगत् प्रसिद्ध।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री मल्लिनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश।।
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, करते हम आह्वान।।
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ!
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

इन्द्रिय के विषयों की आशा, हम पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
हे नाथ ! अतीन्द्रिय सुख पाने, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवभोगों में फंसे रहे हम, मुक्त नहीं हो पाए हैं।
भव आताप से मुक्ति पाने, चन्दन घिसकर लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके तीनों लोको में पर, स्वपद प्राप्त न कर पाए।
प्रभु अक्षय पद पाने हेतु यह, अक्षय अक्षत हम लाए।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पीड़ित हो काम व्यथा से कई, हम जन्म गंवाते आए हैं।
हो काम वासना नाश प्रभो, हम पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा वेदना से व्याकुल, भव-भव में होते आए हैं।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोह कर्म, हम उसके नाथ सताए हैं।
अब नाश हेतु इस शत्रु के, यह दीप जलाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म के बन्धन में, बँधकर जग में भटकाए हैं।
अब नाश हेतु उन कर्मों के, यह धूप जलाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल है कितने सारे जग में, गिनती भी न कर पाए हैं।
वह त्याग मोक्ष फल पाने को, यह फल अर्पण को लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

संसार वास दुखकारी है, हम इससे अब घबराए हैं।
पाने अनर्घ पद नाथ परम, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

प्रभावती के गर्भ में, मल्लिनाथ भगवान।
चैत शुक्ल की प्रतिपदा, हुआ गर्भ कल्याण।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

अगहन शुक्ला ग्यारस को प्रभु, जन्में मल्लिनाथ भगवान।
प्रभावति माँ कुंम्भराज के, गृह में हुआ था मंगलगान।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हों हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

मगसिर सुदी ग्यारस जिनदेव, मल्लिनाथ तप धारे एव।
केशलुंच कर तप को धार, छोड़ दिया सारा आगार।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

पौष कृष्णा दूज मल्लि, नाथ जिनवर ने अहा।
कर्मघाती नाश करके, ज्ञान पाया है महा।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल टप्पा)

फाल्गुन शुक्ला तिथि पञ्चमी, मल्लिनाथ स्वामी।
गिरि सम्मेदशिखर से जिनवर, बने मोक्षगामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

(शम्भू छंद)

प्रभावति मां कुम्भराज सुत, मिथिला नगरी जन्म लिए।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ति, मल्लिनाथ जी प्राप्त किए।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाणेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन योजन के समवशरण में, शोभित होते मल्लीनाथ।
तप्त स्वर्ण सम तन की शोभा, कलश चिन्ह है पग में साथ।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पचपन सहस वर्ष की आयु, पाकर किए कर्म का नाश।
पच्चिस धनुष रही ऊँचाई, अनन्त चतुष्टय किए प्रकाश।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मल्लिनाथ जिनवर के गणधर, 'श्री विशाख' आदि अठबीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
दुःखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री मल्लिनाथस्य 'विशाखाचार्यादि' अष्टाविंशति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – आतम के हित में प्रभु, छोड़ दिए जगजाल।
मल्लिनाथ भगवान की, गातें हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

जय–जय तीर्थंकर मल्लिनाथ, जय–जय शिव पदवी के धारी।
जय रत्नत्रय के सूत्र धार, जय मोक्ष महल के अधिकारी।।
तुम अपराजित से चय करके, मिथिलापुर नगरी में आए।
नृप कुम्भराज माँ प्रभावति, के गृह में बहु खुशियाँ लाए।।
सुदि चैत माह की तिथि एकम्, अश्विनी नक्षत्र जानो पावन।
प्रभु गर्भ में आए इसी समय, वह घड़ी हुई शुभ मनभावन।।
नव माह गर्भ में रहे प्रभु, शचियाँ कई सेवा को आईं।
हर्षित होकर प्रभु भक्ति में, कई दिव्य सामग्री भी लाईं।।
फिर मगसिर सुदी एकादशी को, प्रभु मल्लिनाथ ने जन्म लिया।
शुभ पुण्य के वैभव से प्रभु ने, तीनों लोकों को धन्य किया।।
शचियों ने जात कर्म कीन्हा, फिर इन्द्र ऐरावत ले आया।
शचि ने बालक को लेकर के, माया मयी बालक पधराया।।

फिर पाण्डुक शिला पर ले जाकर, इन्द्रों ने जय-जय कार किया।
अभिषेक कराया भाव सहित, तब पुण्य सुफल शुभ प्राप्त किया।।
अनुक्रम से वृद्धि को पाकर, प्रभु युवा अवस्था को पाए।
विद्युत की चंचलता को लखकर, संयम को प्रभु जी अपनाए।।
शुभ मगसिर सुदि एकादशि को, पौर्वाह्ण काल अतिशय जानो।
प्रभु बैठ जयन्त पालकी में, शाली वन में पहुँचे मानो।।
फिर नृपति तीन सौ के संग में, दीक्षा धर तेला धार लिया।
होकर एकाग्र प्रभु ने अनुपम, निज चेतन तत्त्व का ध्यान किया।।
फिर पौष कृष्ण की द्वितिया को, प्रभु केवल ज्ञान प्रकट कीन्हे।
तब देव बनाए समवशरण, प्रभु दिव्य देशना शुभ दीन्हे।।
शुभ फाल्गुन शुक्ल पञ्चमी को, अश्वनी नक्षत्र प्रभु जी पाए।
सम्मेद शिखर पर जाकर के, प्रभु मुक्ति वधु को प्रगटाए।।
प्रभु का दर्शन अघ नाशक है, अनुपम सौभाग्य प्रदायक है।
जो बोधि समाधि का कारण, शुभ मोक्ष मार्ग दर्शायक है।।
जो भाव सहित अर्चा करता, वह अतिशय पुण्य कमाता है।
सुख शांति प्राप्त कर लेता है, फिर मोक्ष महल को जाता है।।
प्रभु के गुण होते हैं अनन्त, गणधर भी नहिं कह पाते हैं।
गुणगान करें जो भव्य जीव, प्रभु के गुण वह प्रगटाते हैं।।
शुभ महिमा सुनकर हे प्रभुवर ! तव चरण शरण में आए हैं।
हम अष्ट गुणों को पा जाएँ, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय उपकारी संयम धारी, तीन लोक में पूज्य अहा।
त्रिभुवन के स्वामी 'विशद' नमामी, तव शासन यह पूज्य रहा।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - मल्लिनाथ निज हाथ से, दीजे शुभ आशीष।
चरण शरण के भक्त यह, झुका रहे हैं शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दन।।
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, प्रभु करते हैं हम आह्वानन्।।
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

है अनादि की मिथ्या भ्रांति, समकित जल से नाश करूँ।
नीर सु निर्मल से पूजा कर, मृत्यु आदि विनाश करूँ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

द्रव्य भाव नो कर्मों का, मैं रत्नत्रय से नाश करूँ।
शीतल चंदन से पूजा कर, भव आताप विनाश करूँ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अविनश्वर पद पाने, निज स्वभाव का भान करूँ।
अक्षय अक्षत से पूजा कर, आतम का उत्थान करूँ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

संयम तप की शक्ति पाकर, निर्मल आत्म प्रकाश करूँ ।
पुष्प सुगंधित से पूजा कर, कामबली का नाश करूँ ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं ।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पंचाचार का पालन करके, शिवनगरी में वास करूँ ।
सुरभित चरु से पूजा करके, क्षुधा रोग का ह्रास करूँ ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं ।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पुण्य पाप आस्रव विनाश कर, केवल ज्ञान प्रकाश करूँ ।
दिव्य दीप से पूजा करके, मोह महातम नाश करूँ ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं ।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्ट गुणों की सिद्धि करके, अष्टम भू पर वास करूँ ।
धूप सुगन्धित से पूजा कर, अष्ट कर्म का नाश करूँ ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं ।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाकर भगवन्, आतम धर्म प्रकाश करूँ ।
विविध फलों से पूजा करके, मोक्ष महल में वास करूँ ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं ।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

भेद ज्ञान का सूर्य उदय कर, अविनाशी पद प्राप्त करूँ ।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उर अनर्घ पद व्याप्त करूँ ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं ।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य (चौपाई)

श्रावण कृष्णा दोज सुजान, देव मनाए गर्भ कल्याण।
श्यामा माता के उर आन, राजगृही नगरी सु महान्।।
तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशमी कृष्ण वैशाख सुजान, सुर नर किए जन्म कल्याण।
नृप सुमित्र के घर में आन, सबको दिए किमिच्छित दान।।
तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कृष्ण दशम वैशाख महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
चंपक तरु तल पहुँचे नाथ, मुनि बनकर प्रभु हुए सनाथ।।
तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नवमी कृष्ण वैशाख महान्, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
सुरनर करते प्रभु गुणगान, मंगलकारी और महान्।।

तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण द्वादशी महान्, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
मोक्ष पधारे श्री भगवान, नित्य निरंजन हुए महान्।।
तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन (शम्भू छंद)

नृप सुमित्र माता श्यामा के, सुत का मुनिसुव्रत है नाम।
राजगृही में जन्म लिए प्रभु, तीर्थराज है मुक्ति धाम।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढाई योजन का समवशरण शुभ, मुनिसुव्रत का रहा महान।
कछुआ चिन्ह शोभता पग में, श्याम वर्ण के हैं भगवान।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीस हजार वर्ष की आयु, बतलाए प्रभु वीर जिनेश।
बीस धनुष तन की ऊँचाई, अतिशय पाये कई विशेष।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मुनिसुव्रत के गणधर जानो, अष्टादश 'धारण' आदी।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, हरते है सबकी व्याधी।।
दु:ख हर्त्ता सुख कर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री मुनिसुव्रतनाथस्य 'धारण' आदि अष्टादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – मुनिसुव्रत मुनिव्रत धरूँ, त्याग करूँ जगजाल।
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, करता हूँ जयमाल।।

(पद्धरि छंद)

जय मुनिसुव्रत जिनवर महान्, जय किए कर्म की प्रभु हान।
जय मोह महामद दलन वीर, दुर्द्धर तप संयम धरण धीर।।
जय हो अनंत आनन्द कंद, जय रहित सर्व जग दंद फंद।
अघ हरन करन मन हरणहार, सुखकरण हरण भवदु:ख अपार।।
जय नृप सुमित्र के पुत्र नाथ, पद झुका रहे सुर नर सुमाथ।
जय श्यामादेवी के गर्भ आय, सावन बदि दुतिया हर्ष दाय।।
जय–जय राजगृही जन्म लीन, वैशाख कृष्ण दशमी प्रवीण।
जय जन्म से पाए तीन ज्ञान, जय अतिशय भी पाये महान्।।
तन सहस आठ लक्षण सुपाय, प्रभु जन्म लिए जग के हिताय।
सौधर्म इन्द्र को हुआ भान, राजगृह नगरी कर प्रयाण।।
जाके सुमेरु अभिषेक कीन, चरणों में नत हो ढोक दीन।
वैशाख कृष्ण दशमी सुजान, मन में जागा वैराग्य भान।।

कई वर्ष राज्य कर चले नाथ, इक सहस सु नृप भी चले साथ ।
शुभ अशुभ राग की आग त्याग, हो गए स्वयं प्रभु वीतराग ।।
नित आतम में हो गए लीन, चारित्र मोह प्रभु किए क्षीण ।
प्रभु ध्यानी का हो क्षीण राग, वह भी हो जाए वीतराग ।।
तीर्थंकर पहले बने संत, सबने अपनाया यही पंथ ।
जिनधर्म का है बस यही सार, प्रभु वीतराग को नमस्कार ।।
वैशाख बदी नौमी सुजान, प्रभु ने पाया कैवल्य ज्ञान ।
सुर समवशरण रचना बनाय, सुर नर पशु सब उपदेश पाय ।।
जय-जय छियालिस गुण सहित देव, शत् इन्द्र भक्ति वश करें सेव ।
जय फाल्गुन बदि द्वादशी नाथ, प्रभु मुक्ति वधु को किए साथ ।।
जय 'विशद' ज्ञान के बने ईश, तव इन्द्र झुकाएँ चरण शीश।
शिवपद पाए जिनवर विशेष, न रहे कर्म कोई अशेष।।

(छन्द घत्तानन्द)

मुनिसुव्रत स्वामी, अन्तर्यामी, सर्व जहाँ में सुखकारी।
जय भव भय हारी आनंदकारी, रवि सुत ग्रह पीड़ा हारी।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - मुनिसुव्रत के चरण का, बना रहूँ मैं दास।
भाव सहित वन्दन करूँ, होवे मोक्ष निवास।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

ज्ञान से ज्ञान पाकर हुये ज्ञानधर,
दृष्टा ज्ञाता हुये प्रभु जी दर्श कर।
दर्श ज्ञानाचरण दो मुनिसुव्रत नाथ जिन,
तव चरण में करे विशद शिरसा नमन्।।

श्री नमिनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

हे तीर्थंकर ! केवल ज्ञानी, हे नमीनाथ जिनवर स्वामी।
यह भक्त पुकारें भाव सहित, हे त्रिभुवन पति ! अन्तर्यामी।।
आह्वानन् करते हैं उर में, बनने तव आये अनुगामी।
सन्निकट होव मेरे भगवन्, तव बन जाएँ हम पथगामी।।
हम भक्त शरण में आए हैं, हे भगवन् ! यह अरदास लिए।
हमको शुभ मार्ग दिखाओगे, हम आये यह विश्वास लिए।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

कर्मों की ज्वाला धधक रही, हे नाथ ! बुझाने आये हैं।
हों जन्म जरादि रोग नाश, हम नीर चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमिनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से तप्त हुए, हम ताप नशाने आये हैं।
हो भव आताप विनाश प्रभो ! हम गंध चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमिनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

न लोकालोक का अन्त कहीं, हम चतुर्गति भटकाए हैं।
अब अक्षय पद हो प्राप्त हमें, अक्षत अर्पण को लाए हैं।।
हे नमिनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है काम वासना दुखदायी, उसमें सदियों से भरमाए।
वह काम बाण विध्वंश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने हम लाए ।।
हे नमिनाथ जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु क्षुधा रोग से व्याकुल हो, सब द्रव्य चराचर खाए हैं।
अब क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमिनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह पास में फँसे हुए, पर वस्तु में अटकाए हैं।
अब मोह कर्म के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
हे नमिनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों के बन्धन से, हम मुक्त नहीं हो पाए हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।।
हे नमिनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम इच्छा करके निज फल की, निष्फल फल पाते आए हैं।
अब मोक्ष महाफल हेतु प्रभो !, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमिनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

हम अवगुण को ही नाथ सदा, निज के गुण कहते आए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।

हे नमिनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

आश्विन बदी द्वितिया तिथि, नमिनाथ जिनदेव।
माँ विपुला उर अवतरे, पूजूँ उन्हें सदैव।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चौपाई)

दशमी कृष्ण आषाढ़ महान्, जन्में नमिनाथ भगवान।
भूप विजयरथ के गृहद्वार, भारी हुआ मंगलाचार।।
विशद हृदय से भाव विभोर, वन्दन करते हम कर जोर।
मन में जगी हमारे चाह, मोक्ष महल की पावें राह।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अषाढ़ बदी दशमी को पाय, दीक्षा धारे नमि जिनाय।
अविकारी हो वन में वास, आत्म तत्त्व का किए प्रकाश।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(हरि छन्द गीता)

मगसिर शुक्ला तिथि ग्यारस, नमी जिनवर ने अहा।
कर्मघाती नाश कीन्हें, ज्ञान पाया है महा।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(टप्पा छन्द)

चतुर्दशी वैशाख कृष्ण की, नमिनाथ स्वामी।
मोक्ष गये सम्मेद शिखर से, जिन अंतर्यामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन (शम्भू छंद)

भूप विजय रथ विपुला के सुत, का है नमिनाथ शुभ नाम।
मिथिला नगरी जन्म लिए हैं, गिरि सम्मेद है मुक्तिधाम।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नमिनाथ के समवशरण का, दो योजन जानो विस्तार।
नील कमल है चिन्ह प्रभु का, तप्त स्वर्ण सम तन मनहार।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश हजार वर्षों की आयु, पाकर किए कर्म विध्वंश।
पन्द्रह धनुष रही ऊँचाई, नहीं रहा दोषों का अंश।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नमिनाथ के सत्रह गणधर, जानो भाई 'सोमादी'।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, हरते हैं सबकी व्याधी।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इर्वी श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री नमिनाथस्य 'सोमादि' सप्तदश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – तीर्थंकर बनकर सभी, नाशे कर्म कराल।
नमिनाथ की हम यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

श्री जिनवर ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
तीर्थंकर पदवी प्रगटाए, यह प्रभुता पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
पूर्वभवों में त्याग तपस्या, प्रभु ने अपनाई।
तीर्थंकर की प्रकृति बांधी, अतिशय सुखदायी।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
विजयसेन गृह अपराजित से, मिथिलापुर भाई।
चयकर आये मात वप्रिला, के उर जिनराई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
दशें कृष्ण आषाढ़ बदी को, जन्म लिए भाई।
क्षीर नीर से मेरू गिरि पर, न्हवन हुआ भाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
श्वेत कमल शुभ लक्षण देखा, इन्द्र ने सुखदायी।
नमिराज तव नाम पुकारा, जय ध्वनि गुंजाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
दशें कृष्ण आषाढ़ बदी को, जाति स्मृति पाई।
अनुप्रेक्षा का चिन्तन करके, संत बने भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

मोक्ष मार्ग के अभिनेता, ने महिमा दिखलाई। जि...
निज आतम का ध्यान लगाकर, शक्ति प्रगटाई।
कर्म घातिया नशते केवल, ज्ञान जगा भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
समवशरण में दिव्य ध्वनि तब, प्रभु ने गुंजाई।
सम्यक् दृष्टि संयमधारी, बने जीव भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
मगसिर शुक्ला एकादशि को, शिव पदवी पाई।
मोक्ष महल के स्वामी हो गये, नमिनाथ भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
अनुक्रम से हम मोक्ष मार्ग, पर बढ़े शीघ्र भाई।
वह पदवी हम भी पा जाएँ, जो प्रभु ने पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
विशद लोक में हे प्रभु तुमने, प्रभुता दिखलाई।
अतः लोकवर्ति प्राणी सब, पूज रहे भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय जिन स्वामी, अन्तर्यामी, धर्म ध्वजा के अधिकारी।
जय शिवपुर वासी, ज्ञान प्रकाशी, तीन लोक मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – जिनवर तीनों लोक में, जिन शासन सुखकार।
मंगलमय मंगल कहा, नमूँ अनन्तो बार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नेमिनाथ जिनपूजा

(स्थापना)

नेमिनाथ के श्रीचरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

विषयों के विष की प्याला को, पीकर के जन्म गँवाया है।
नहिं जन्म मरण के दुःखों से, हमको छुटकारा मिल पाया है।।
हम मिथ्या मल धोने प्रभुजी, शुभ कलश में जल भर लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादि कषायों के कारण, संताप हृदय में छाया है।
मन शांत रहे मेरा भगवन, यह भक्त चरण में आया है।।
संसार ताप के नाश हेतु, हम शीतल चंदन लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर वैभव जान प्रभु, तुमने सब राग नशाया है।
व्रत संयम तेज तपस्या से, अभिनव अक्षय पद पाया है।।
हो अक्षय पद प्राप्त हमें, हम अक्षय अक्षत लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रबल काम शत्रु जग में, तुमने उसको ठुकराया है।
यह भक्त समर्पित चरणों में, तुमसा बनने को आया है।।
प्रभु कामबाण के नाश हेतु, यह प्रमुदित पुष्प चढ़ाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! भोग की तृष्णा ने, अरु क्षुधा ने हमें सताया है।
मन मर्कट सब पदार्थ खाकर, भी तृप्त नहीं हो पाया है।।
प्रभु क्षुधा रोग के शमन हेतु, यह व्यंजन सरस ले आए हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहांध महा अज्ञानी हूँ, जीवन में घोर तिमिर छाया।
मैं रागी द्वेषी बना रहा, निज के स्वभाव से बिसराया।।
मोहांधकार का नाश करूँ, यह दीप जलाने लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सेना ने कैसा, यह चक्र व्यूह रचवाया है।
मुझ भोले-भाले प्राणी को, क्यों उसके बीच फँसाया है।।
अब अष्ट कर्म की धूप जले, यह धूप जलाने लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चित् चेतन का चिंतन, अरु मनन नहीं कर पाया है।
सद्दर्शन ज्ञान चरित का फल, शुभ फल निर्वाण न पाया है।।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल अनर्घ पद पाने का प्रभु, हमने अब भाव जगाया है।
अत एव प्रभु वसु द्रव्यों का, अनुपम यह अर्घ्य बनाया है।।

दो पद अनर्घ हमको स्वामी, यह अर्घ्य संजोकर लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

नेमिनाथ भगवान, कार्तिक शुक्ला षष्ठमी।
पाए गर्भ कल्याण, शिवा देवी उर आ बसे।।
तीन लोक के ईश, अर्घ्य चढ़ाते भाव से।
झुका रहे हम शीश, चरण कमल में आपके।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठभ्यां गर्भ मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
शौर्य पुरी नगरी शुभम्, समुद्र विजय हर्षित हुए।।
तीन लोक के ईश, अर्घ्य चढ़ाते भाव से।
झुका रहे हम शीश, चरण कमल में आपके।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठभ्यां जन्म मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस्र आम्रवन बीच, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
पशु आक्रंदन देख, तप धारे गिरनार पर।।
तीन लोक के ईश, अर्घ्य चढ़ाते भाव से।
झुका रहे हम शीश, चरण कमल में आपके।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठभ्यां तप कल्याणक मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ ज्ञान कल्याण, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा।
स्वपर प्रकाशी ज्ञान, नेमिनाथ जिन पा लिए।।
तीन लोक के ईश, अर्घ्य चढ़ाते भाव से।
झुका रहे हम शीश, चरण कमल में आपके।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए पद निर्वाण, आठें शुक्ल अषाढ़ की।
हुआ मोक्ष कल्याण, ऊर्जयन्त के शीर्ष से।।
तीन लोक के ईश, अर्घ्य चढ़ाते भाव से।
झुका रहे हम शीश, चरण कमल में आपके।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन (शम्भू छंद)

समुद्र विजय माँ शिवा देवी के, नेमिराज सुत कहे महान।
शौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, ऊर्जयन्त से है निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ड़ेढ़ योजन का समवशरण प्रभु, नेमिनाथ का रहा महान।
श्याम वर्ण है प्रभु के तन का, शंख कहा जिनकी पहचान।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चऊ दिश भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस्त्र वर्ष की आयु पाए, भोगों से जो रहे विरक्त।
कही धनुष दश की ऊँचाई, सुर नर बने प्रभु के भक्त।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'वरदत्तादी' ग्यारह गणधर, नेमिनाथ के साथ कहे।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के चरणों मम माथ रहे।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री नेमिनाथस्य 'वरदत्तादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– समुद्र विजय के लाड़ले, शिवादेवी के लाल।
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

सुरेन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र गणीन्द्र, शतेन्द्र सुध्यान लगाते हैं।
जिनराज की जय जयकार करें, उनका यश मंगल गाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दु:ख उनके सारे हरते हैं।
जो चरण शरण में आ जाते, वह भवसागर से तरते हैं।।
तुम धर्ममई हो कर्मजई, तुममें जिनधर्म समाया है।
तुम जैसा बनने हेतु नाथ !, यह भक्त चरण में आया है।।
प्रभु द्रव्य भाव नोकर्म सभी, अरु राग द्वेष भी हारे हैं।
प्रभु तन में रहते हुए विशद, रहते उससे अति न्यारे हैं।।
जिसको भव सुख की चाह नहीं, वह दु:ख से क्या भय खाते हैं।
वह महाबली जिन धीर वीर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो दयावान करुणाधारी, वात्सल्यमयी गुणसागर हैं।
वह सर्वसिद्धियों के नायक, शुभ रत्नों के रत्नाकर हैं।।
शुभ नित्य निरंजन शिव स्वरूप, चैतन्य रूप तुमने पाया।
उस मंगलमय पावन पवित्र, पद पाने को मन ललचाया।।
कर्मों के कारण जीव सभी, भव सागर में गोते खाते ।
जो शरण आपकी आते हैं, वह उनके पास नहीं आते ।।
तुम हो त्रिकालदर्शी प्रभुवर, तुमने तीर्थंकर पद पाया है।
तुमने सर्वज्ञता को पाया, अरु केवलज्ञान जगाया है।।
तुम हो महान अतिशय धारी, तुम विधि के स्वयं विधाता हो।
सुर नर नरेन्द्र की बात कहाँ, तुम तो जन–जन के त्राता हो।।
तुम हो अनन्त ज्ञाता दृष्टा, चिन्मूरत हो प्रभु अविकारी।
जो शरण आपकी आ जाए, वह बने स्वयं मंगलकारी।।
जो मोह महामद मदन काम, इत्यादि तुमसे हारे हैं।
जो रहे असाता के कारण, चरणों झुक जाते सारे हैं।।

ज्यों तरुवर के नीचे आने से, राही शीतल छाया पाता।
प्रभु के शरणागत आने से, स्वमेव आनन्द समा जाता।।
तुमने पशुओं का आक्रन्दन, लख कर संसार असार कहा।
यह तो अनादि से है असार, इसका ऐसा स्वरूप रहा।।
हे जगत पिता ! करुणा निधान, यह सब तो एक बहाना था।
शायद कुछ इसी बहाने से, राजुल को पार लगाना था।।
राजुल का तुमने साथ दिया, उससे नव भव की प्रीति रही।
पर हमसे प्रीति निभाई न, वह खता तो हमसे कहो सही।।
अब शरण खड़ा है शरणागत, इसका भी बेड़ा पार करो।
कर रहा भक्ति के वशीभूत, हे ! दयासिंधु स्वीकार करो।।
जो शरण आपकी आ जाए, वह भव में कैसे भटकेगा।
जो भक्ति भाव से गुण गाए, वह जग में कैसे अटकेगा।।
तुम तीर्थंकर बाइसवें प्रभु, तुम बाईस परीषह को जीते।
तुमने अनन्त बल सुख पाया, तुम निजानन्द रस को पीते।।
जैसे प्रभु भव से पार हुए, वैसे मुझको भी पार करो।
हमको आलम्बन दे करके, प्रभु इस जग से उद्धार करो।
जो भाव सहित पूजा करते, वह पूजा का फल पाते हैं।।
पूजा के फल से भक्तों के, सारे संकट कट जाते हैं।
हम जन्म-जरा-मृत्यु के संकट से, घबड़ाकर चरणों आये हैं।
अब उभय रूप प्रभु मोक्ष महापद, पाने को शीश झुकाये हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय नेमि जिनेशं, हितउपदेशं, शुद्ध बुद्ध चिद्रूपयति।
जय परमानन्दं, आनन्दकंदं, दयानिकंदं ब्रह्मपति।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- नेमिनाथ के द्वार पर, पूरी होती आश।
मुक्ति हो संसार से, पूरा है विश्वास।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज मैं विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें प्रभु, चरणों में सिर धरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य (त्रिभगी छन्द)

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।
वसु देव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशि, काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर, वाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कलि पौष एकादशि, व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया।
भा बारह भावन, अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ ।।3।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहि क्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अंधेरी, चौथ सवेरी, आप हुए केवलज्ञानी।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।। 4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अतिमन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

अश्वसेन वामा देवी के, सुत का पार्श्वनाथ है नाम।
प्रभु बनारस नगरी जन्में, तीर्थराज है मुक्ति धाम।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि.स्वाहा।

समवशरण शुभ एक योजन का, पार्श्वनाथ का रहा महान।
हरित वर्ण में शोभा पाते, नाग चिन्ह प्रभु की पहचान।।
दिव्य कमल शोभा पाता हैं, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आयु मात्र सौ वर्ष प्रभु की, कठिन साधना किए जिनेश।
ऊँचाई नौ हाथ कही है, श्री जिनेन्द्र की यहाँ विशेष।।
ॐकारमय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गणधर श्रेष्ठ 'स्वयंभू आदि, पार्श्वनाथ के दश जानो।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, मुनियों को भी पहिचानो।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री पार्श्वनाथस्य 'स्वयंभ्वादि' दश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।
विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल ।।1।।

(छंद)

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।2।।
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत्त नमस्ते।।3।।
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।4।।
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।5।।
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करूणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते।।6।।
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते।।7।।
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नत्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।8।।
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते।।9।।

दोहा– भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चरण शरण के भक्त की, भक्ति फले अविराम।
मुक्ति पाने के लिए, करते चरण प्रणाम्।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

महावीराष्टक स्तोत्र

– आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज

ज्ञानादर्श में युगपद दिखते, जीवाजीव द्रव्य सारे।
व्यय, उत्पाद, ध्रौव्य प्रतिभाषित, अंत रहित होते न्यारेङ्क
जग को मुक्ति पथ प्रकटाते, रवि सम जिन अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामीङ्क 1ङ्क

नयन कमल झपते नहिं दोनों, क्रोध लालिमा से भी हीन।
जिनकी मुद्रा शांत विमल है, अंतर बाहर भाव विहीनङ्क
क्रोध भाव से रहित लोक में, प्रगटित हैं अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामीङ्क 2ङ्क

नमित सुरों के मुकुट मणि की, आभा हुई है कांतिमान।
दोनों चरण कमल की भक्ति, भक्तजनों को नीर समानङ्क
दुःखहर्ता सुखकर्त्ता जग में, जन-जन के अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामीङ्क 3ङ्क

हर्षित मन होकर मेढ़क ने, जिन पूजा के भाव किए।
क्षण में मरकर गुण समूह युत, देवगति अवतार लिएङ्क
क्या अतिशय नर भक्ति आपकी, करके हो अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामीङ्क 4ङ्क

स्वर्ण समा तन को पाकर भी, तन से आप विहीन रहे।
पुत्र नृपति सिद्धारथ के हैं, फिर भी तन से हीन रहे।
राग द्वेष से रहित आप हैं, श्री युत हैं अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामीङ्क 5ङ्क

विशद ऋषिमण्डल विधान

जिनके नयनों की गंगा शुभ, नाना नय कल्लोल विमल।
महत् ज्ञान जल से जन-जन को, प्रच्छालित कर करे अमलङ्क
बुधजन हंस सुपरिचित होकर, बन जाते अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामीङ्क 6ङ्क

तीन लोक में कामबली पर, विजय प्राप्त करना मुश्किल।
लघु वय में अनुपम निज बल से, विजय प्राप्त कर हुए विमलङ्क
सुख शांति शिव पद को पाकर, आप हुए अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामीङ्क 7ङ्क

महामोह के शमन हेतु शुभ, कुशल वैद्य हो आप महान्।
निरापेक्ष बंधु हैं सुखकर, उत्तम गुण रत्नों की खानङ्क
भव भयशील साधुओं को हैं, शरण भूत अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामीङ्क 8ङ्क

दोहा

भागचंद भागेन्दु ने, भक्ति भाव के साथ।
महावीर अष्टक लिखा, झुका चरण में माथङ्क
पढ़े सुने जो भाव से, श्रेष्ठ गति को पाय।
भाषा पढ़के काव्य की, 'विशद' वीर बन जायङ्क

* * *

श्री महावीर स्वामी जिनपूजा

(स्थापना)

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हमको सद्राह दिखा जाओ ।
यह भक्त खड़ा है आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ ।।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए ।
हम भक्ति भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाए ।।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए ।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

क्षण भंगुर यह जग जीवन है, तृष्णा जग में भटकाती है ।
स्वाधीन सुखों से दूर करे, निज आत्म ज्ञान बिसराती है ।।
मैं प्रासुक जल लेकर आया, प्रभु जन्म मरण का नाश करो ।
हे महावीर स्वामी ! करु णाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर की गंध महा, मानस मधुकर महकाती है।
आतम उससे निर्लिप्त रही, शुभ गंध नहीं मिल पाती है।।
शुभ गंध समर्पित करते हैं, आतम में गंध सुवास भरो।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने जो दौलत पाई है, क्षण-क्षण क्षय होती जाती है ।
अक्षय निधि जो तुमने पाई, प्रभु उसकी याद सताती है ।
मैं अक्षय अक्षत लाया हूँ, अब मेरा न उपहास करो।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु! आपके तन से शुभ, फूलों सम खुशबू आती है ।
सारे पुष्पों की खुशबू भी, उसके आगे शर्माती है ।।
मैं पुष्प मनोहर लाया हूँ, मम् उर में धर्म सुवास भरो ।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

भर जाता पेट है भोजन से, रसना की आश न भरती है ।
जितना देते हैं मधुर मधुर, उतनी ही आश उभरती है ।।
नैवेद्य बनाकर लाये हम, न मुझको प्रभु निराश करो ।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं सोच रहा सूरज चंदा, दीपक से रोशनी आती है ।
हे प्रभु! आपकी कीर्ति से, वह भी फीकी पड़ जाती है ।।
मैं दीप जलाकर लाया हूँ, मम् अन्तर में विश्वास भरो ।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को सदियों से भगवन् , कर्मों की धूप सताती है ।
कर्मों के बन्धन पड़ने से, न छाया हमको मिल पाती है ।।
यह धूप चढ़ाता हूँ चरणों, मम् हृदय प्रभु जी वास करो ।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।7।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, न तृप्ति हमें मिल पाती है ।
यह फल तो सारे निष्फल हैं, माँ जिनवाणी यह गाती है ।।
इस फल के बदले मोक्ष सुफल, दो हमको नहीं उदास करो।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम राग द्वेष में अटक रहे, ईर्ष्या भी हमें जलाती है ।
जग में सदियों से भटक रहे, पर शांति नहीं मिल पाती है ।।
हम अर्घ्य बनाकर लाए हैं, मन का संताप विनाश करो ।
हे महावीर स्वामी ! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य (चौपाई)

आषाढ़ शुक्ल की षष्ठी आई, देव रत्नवृष्टि करवाई ।
देव सभी मन में हर्षाए, गर्भ में वीर प्रभु जब आए।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की तेरस आई, सारे जग में खुशियाँ छाई ।
प्रभु का जन्म हुआ अतिपावन, सारे जग में जो मन भावन।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मार्ग शीर्ष दशमी दिन आया, मन में तब वैराग्य समाया ।
सारे जग का झंझट छोड़ा, प्रभु ने जग से मुँह को मोड़ा।।3।।

ॐ ह्रीं मंगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख शुक्ल दशमी शुभ आई, पावन मंगल मय अति भाई ।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, इन्द्र ने समवशरण बनवाया।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक की शुभ आई अमावस, प्रभु ने कर्म नाश कीन्हे बस ।
हम सब भक्त शरण में आये, मुक्ति गमन के भाव बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्या मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन (शम्भू छंद)

माँ त्रिशला नृप सिद्धारथ सुत, वर्धमान जी कहलाए।
कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, पांवापुर मुक्ति पाए।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर का समवशरण प्रभु, योजन मात्र बनाए देव।
तप्त स्वर्ण वत् आभा पाए, शेर चिन्ह पाए प्रभु एव।।
दिव्य कमल शोभा पाते है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कही बहत्तर वर्ष की आयु, पंच प्रभु ने पाए नाम।
सात हाथ तन ऊँचाई, प्रभु पद बारम्बार प्रणाम्।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'इन्द्रभूति' आदि गणधर थे, ग्यारह महावीर के साथ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के पद झुका रहे हम माथ।।
दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम:

सन्मति प्राप्त कर सन्मति हो गये,
स्वयं से स्वयं में स्वयं ही खो गये।
हो मति सन्मति हे महावीर ! जिन,
तव चरण द्वय में हो विशद शिरसा नमन्।।

श्री महावीरनाथस्य 'इन्द्रभूत्यादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीन लोक के नाथ को, वन्दन करूँ त्रिकाल।
महावीर भगवान की, गाता हूँ जयमाल।।

(आर्या छन्द)

हे वर्धमान ! शासन नायक, तुम वर्तमान के कहलाए।
हे परम पिता ! हे परमेश्वर! तव चरणों में हम सिर नाए।।

(छंद ताटंक)

नृप सिद्धारथ के गृह तुमने, कुण्डलपुर में जन्म लिया।
माता त्रिशला की कुक्षि को, आकर प्रभु ने धन्य किया।।

शत् इन्द्रों ने जन्मोत्सव पर, मंगल उत्सव महत किया।
पाण्डुक शिला पर ले जाकर के, बालक का अभिषेक किया।।

दायें पग में सिंह चिन्ह लख, वर्धमान शुभ नाम दिया।
सुर नर इन्द्रों ने मिलकर तब, प्रभु का जय जयकार किया।।

नन्हा बालक झूल रहा था, पलने में जब भाव विभोर।
चारण ऋद्धि धारी मुनिवर, आये कुण्डलपुर की ओर।।

मुनिवर का लखकर बालक को, समाधान जब हुआ विशेष।
सन्मति नाम दिया मुनिवर ने, जग को दिया शुभम् सन्देश।।

समय बीतने पर बालक ने, श्रेष्ठ वीरता दिखलाई।
वीर नाम की देव ने पावन, ध्वनि लोक में गुंजाई।।

कुछ वर्षों के बाद प्रभु ने, युवा अवस्था को पाया।
कुण्डलपुर नगरी में इक दिन, हाथी मद से बौराया।।

हाथी के मद को तब प्रभु ने, मार–मार चकचूर किया।

अति वीर प्रभु का लोगों ने, मिलकर के शुभ नाम दिया।।

तीस वर्ष की उम्र प्राप्त कर, राज्य छोड़ वैराग्य लिए।
मुनि बनकर के पञ्च मुनि से, केश लुंच निज हाथ किए।।

परम दिगम्बर मुद्रा धरकर, खड्गासन से ध्यान किया।
कामदेव ने ध्यान भंग कर, देने का संकल्प लिया।।

कई देवियाँ वहाँ बुलाई, उनने कुत्सित नृत्य किया।
हार मानकर सभी देवियों ने, प्रभु पद में ढोक दिया।।

काम–देव ने महावीर के, नाम से बोला जयकारा।
मैंने सारे जग को जीता, पर इनसे मैं भी हारा।।

बारह वर्ष साधना करके, केवल ज्ञान प्रभु पाए।
देव देवियाँ सब मिल करके, भक्ति करने को आए।

धन कुबेर ने विपुलाचल पर, समोशरण शुभ बनवाया।
छियासठ दिन तक दिव्य देशना, का अवसर न मिल पाया।

श्रावण बदी तिथि एकम को, दिव्य ध्वनि का लाभ मिला।
शासन वीर प्रभु का पाकर, 'विशद' धर्म का फूल खिला।

कार्तिक बदी अमावस को प्रभु, पावन पद निर्वाण हुआ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो सभी जन, सबका मार्ग प्रशस्त किया।

दोहा – महावीर भगवान ने, दिया दिव्य संदेश ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो तुम, धार दिगम्बर भेष ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।।

दोहा – कर्म नाश शिवपुर गये, महावीर शिव धाम।
शिव सुख हमको प्राप्त हो, करता चरण प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।।

शब्द ब्रह्म पूजा

स्थापना

आत्म ब्रह्म जाने बिना, परम ब्रह्म न पाते हैं।
लौकिक आगम मात्र जल्पना, बिना शब्द नश जाते हैं।।
अनेकान्त अरु स्याद्वाद शुभ, निश्चिय नय हो या व्यवहार।
शब्द ब्रह्म से ही चलता है, पूज्य पूज्यता का व्यापार।।

दोहा– शब्द ब्रह्म हम पर करो, अपनी कृपा महान।
आ तिष्ठो मम हृदय में, करें विशद आह्वान।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्द ब्रह्म ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छंद–जोगीरासा)

प्रासुक करके नीर कूप का, यहाँ चढ़ाने लाए।
ज्ञानावरणी कर्म नाश कर, ज्ञान जगाने आए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चन्दन श्रेष्ठ सुगन्धित, अर्पित करने लाए।
कर्म दर्शनावरण नाशकर, दर्शन पाने आए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे संसारतापविनाशनाय

चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत धवल सुगन्धित, अर्पित करने लाए।
कर्म नाशकर वेदनीय हम, अव्याबाध गुण पाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प सुगन्धित अनुपम, भाँति–भाँति के लाए।
गुण सम्यक्त्व प्रकट करके हम, मोह नशाने आए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा को नैवेद्य सरस शुभ, ताजे श्रेष्ठ बनाए।
अवगाहन गुण पाने हेतु, कर्मायु नश जाए।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीप जलाकर जगमग, आरति करने लाए।
गुण सूक्ष्मत्व प्रकट हो मेरा, नाम कर्म नश जाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में यह धूप दशांगी, यहाँ जलाने लाए।

अगुरुलघु गुण प्राप्त हमें हो, गोत्र कर्म नश जाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अनुपम ले सरस सुगन्धित, पूजा करने आए।
गुण वीर्यत्व प्राप्त हो हमको, अन्तराय नश जाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ पाने हम अतिशय, अर्घ्य बनाकर लाए।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, सिद्ध सुपद मिल जाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्द ब्रह्म पूजा के अर्घ्य

अकारादि स्वर अर्द्ध मात्रिक, व्यञ्जन रहित कहाते हैं।
सबसे पहले पूर्व दिशा में, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेद सहित अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ स्वरेभ्यः अं अः क ख प फ अयोगवाहेभ्यश्च पूर्वदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वर्ग क वर्ग कहा है, क ख ग घ ङ है नाम।
आग्नेय में पूजा करके, सब सिद्धों को करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं आग्नेय दिशि क ख ग घ ङ इति कवर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ रहा च वर्ग यहाँ पर, च छ ज झ ञ है नाम।

दक्षिण दिशि में स्थापित कर, अर्घ्य चढ़ा के करें प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं दक्षिण दिशि च छ ज झ ञ इति चवर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज रहे ट वर्ग यहाँ पर, दिशा रही नैऋत्य महान।
ट ठ ड ढ ण अक्षर का, करते यहाँ विशद गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं नैऋत्य दिशि ट ठ ड ढ ण इति टवर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त थ द ध न अक्षर का, श्रेष्ठ कहा त वर्ग प्रधान।
पश्चिम दिश में पूज रहे हैं, जिससे बढ़ता सम्यक् ज्ञान।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि त थ द ध न इति तवर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औष्ठ से उच्चारण हो जिसका, वह प वर्ग कहा शुभकार।
प फ ब भ म की पूजा, वायव्य में करते शुभकार।।6।।

ॐ ह्रीं वायव्य दिशि प फ ब भ म इति पवर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

य र ल व चार वर्ग यह, कहलाते अन्तस्थ महान।
उत्तर दिशा में पूजा करके, करते यहाँ विशद गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तर दिशि य र ल व इति अन्तस्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊष्म घोष जिनको कहते हैं, श ष स ह वर्ण प्रधान।
पूजा करते भक्ति भाव से, जिनकी दिशा रही ईशान।।8।।

ॐ ह्रीं ईशान दिशि श ष स ह इति वर्णेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षर क्रमशः आदि में ह भ, य र घ झ स ख जान।
अन्त में ह्म्ल्व्र्यूं को रखकर, आठ मंत्र की हो पहिचान।।
क्रमशः इक इक शोभित होते, आठों कोठों में शुभकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा करके मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रीं हकारादि अष्टाक्षर संयुक्त ह्म्ल्व्र्यूं आदि अष्ट बीजाक्षरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– शब्द ब्रह्म को पूजकर, करना निज उद्धार।

जयमाला गाते यहाँ, पाने भवोदधि पार।।

(चाल छन्द)

स्वर अकारादि जो गाए, अ इ उ ऋ कहलाए।
लृ ए ऐ ओ औ जानो, ह्रस्व दीर्घ प्लुत पहिचानो।।
सब सत्ताइस हो जाते, जो स्वर संज्ञा को पाते।
हैं पंच वर्ग क आदि, अन्तस्थ य र ल वादि।।
श ष स ह ऊष्मक गाये, चउ अयोगवाह कहलाए।
सब चौंसठ अक्षर मानो, जो जैनागम से जानो।।
इनके द्वि आदि संयोगी, कई भेद कहे जिन योगी।
एकट्ठी श्रुत हो जाते, सब द्वादशांग में आते।।
आतम परमातम दोई, के ज्ञान में कारण होई।
श्रुत बोध जनावन हारे, ज्ञानी जन भी उच्चारे।।
आश्रय जो इनका पावें, वह सारे कार्य बनावें।
मन की सब कहते भाई, जाने पर की प्रभुताई।।
इनको जो मन से ध्यावें, मूरख भी ज्ञान बढ़ावें।
बिन स्वर व्यञ्जन के कोई, व्यवहार चले न सोई।।
इनका उपपाद न होई, क्षरना इनका न कोई।
अक्षर इसलिए कहाए, जो काल अनादि गाए।।
ज्यों सिद्ध अनादि गाए, त्यों वर्ण सिद्ध कहलाए।
सिद्धों सम पूजे जाते, नवकार मंत्र में आते।।
शिव कारण पैंतीस जानो, सोलह छह पंच बखानो।
गणधर आदि सब गाते, जिनवाणी में भी आते।।

सब में तुमरी प्रभुताई, शिव मार्ग चलाते भाई।
गुण विशद आपके गाते, पद सादर शीश झुकाते।।

दोहा– शब्द ब्रह्म को पूजकर, पाओ शिव का द्वार।
शब्दों से पूजा रची, जग में मंगलकार।।
आलम्बन नाना कहे, मुक्ति हेतु महान।
हो पदस्थ शुभ ध्यान से, मुक्ति पद की खान।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकट्ठिप्रमाण शब्दब्रह्मणे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शब्द ब्रह्म को पूजकर, पाना है शिव धाम।
विशद भाव से हम यहाँ, करते विशद प्रणाम।।

इत्याशीर्वादः

तृतीय वलयः

दोहा– पञ्च परम पद पूजकर, रत्नत्रय उरधार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, प्राणी हो भव पार।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री अरहंत पूजा

स्थापना

हे परमेष्ठी! हे परमातम! सर्वज्ञ प्रभु केवल ज्ञानी।
हे तीन लोक के अधिनायक! हे धर्म सुधामृत के दानी।।
हे परम शांत जिन वीतराग! प्रभु सर्व चराचर उपकारी।
हे चिदानन्द आनन्द कन्द! अरहन्त प्रभु संकट हारी।।
हे कृपा सिन्धु करुणा निधान! बस इतना सा उपकार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो! अब मेरा भी उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्

आह्वाननं । ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम् । ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

भव-भव में जल पीते-पीते, हम तृषा शान्त न कर पाए।
अब जिन पद की गंगा का जल, पाने प्रभु आज चरण आए।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीष झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।1।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जग के वैभव की चाह दाह, जग में ही भ्रमण कराती है।
प्रभु पद की राह शीघ्रता से, क्षण में भव भ्रमण नशाती है।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीष झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।2।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के कृत कर्म निजातम को, इस भव वन में भटकाते हैं।
अक्षत ले पूजन करने से, अक्षय पद में पहुँचाते हैं।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीष झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।3।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आपकी पूजा शुभ, मन को नित निर्मल करती है।
श्रद्धा के सुमन चढ़ाने से, भव काम वासना हरती है।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीष झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।4।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं

निर्वपामीति स्वाहा ।

व्यंजन तज अनशन करके प्रभु, निज आतमबल प्रगटाए हैं।
नैवेद्य करूँ अर्पित पद में, प्रभु क्षुधा नशाने आए हैं।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीष झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।5।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये दीप शिखा जगमग करती, होता बाहर में उजियारा।
अब अन्तर ज्ञान का दीप जले, नश जाए मोह का अंधियारा।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीष झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।6।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों अंगों में अष्टकर्म, प्रभु मेरे बन्धन डाले हैं।
हम कर्म नशाने हेतु प्रभु, शुभ गंध जलाने वाले हैं।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीष झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।7।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय निधि पाने हेतु प्रभु, शरण हम आपकी आए हैं।
भव भ्रमण नाश मुक्ति पाएँ, इस हेतु विविध फल लाए हैं।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीष झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।8।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह विविध कर्म के पुञ्ज प्रभु, सदियों से सताते आए हैं।
हम अष्ट कर्म के नाश हेतु, वसु द्रव्य सजाकर लाए हैं।।

श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए।
जिन चरणों शीष झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए।।9।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

46 मूलगुण के अर्घ्य

जन्म के 10 अतिशय

Losn jfgr ru ikrs ftuoj] ;s vfr'k; gS lq[kdkjhA
HkDr oanuk djsa Hkko ls] thou gks eaxydkjhAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA1AA

ॐ gzha Losn jfgr lgtkfr'k;/kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf'BH;ks v?;Za fuoZ- LokgkA

xHkZ tUe dks ikrs fQj Hkh] Jh ftu ey ls jfgr dgsA
fdafpr~ ey v# ew= ugha gS] iw.kZ :i ls vey jgsAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA2AA

ॐ gzha uhgkj jfgr lgtkfr'k;/kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf'BH;ks v?;Za fuoZ- LokgkA

'osr #f/kj gksrk gS ru dk] okRlY; n'kkZrk gSA
n'kZu djds Jh ftuoj dk] lcdk eu g"kkZrk gSA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA3AA

ॐ gzha 'osr jDr lgtkfr'k;/kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf'BH;ks v?;Za fuoZ- LokgkA

izHkq dk ru lqanj lqMkSy gS] gksrk gS vfr'k;dkjhA
'kqHk ijek.kq ls fufeZr gS] lepriq"d foLe;dkjhAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA4AA

ॐ gzha lepriq'd lgtkfr'k;/kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf'BH;ks

v?;Za fuoZ- LokgkA

otz o`"kHk ukjkp laguu] tUe le; ls ikrs gSaA
vfr'k; 'kfDr ikus okys] Jh ftusUnz dgykrs gSaAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA5AA

ॐ gzha otz o`"kHk ukjkp laguu lgtkfr'k;/kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf'BH;ks v?;Za fuoZ- LokgkA

ru dh lqanjrk gS bruh] lkjs :i ytkrs gSaA
dkensok Hkh ftuds vkxs] vfr Qhds iM+ tkrs gSaAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA6AA

ॐ gzha vfr'k; :i lgtkfr'k;/kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf'BH;ks v?;Za fuoZ- LokgkA

izHkq ds tUe ds vfr'k; esa] bd ;g Hkh vfr'k; vkrk gSA
vfr lqxa/ke; ru gksrk tks] rhu yksd egdkrk gSAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA7AA

ॐ gzha lqxaf/kr ru lgtkfr'k;/kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf'BH;ks v?;Za fuoZ- LokgkA

lgl vkB y{k.k izHkq ru esa] vfr'k; 'kksHkk ikrs gSaA
lgl uke ds }kjk Hkfotu] mudh efgek xkrs gSaAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA8AA

ॐ gzha ,d gtkj vkB 'kqHk y{k.k lgtkfr'k;/kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf'BH;ks v?;Za fuoZ- LokgkA

vizfer oh;Z dks /kkj jgs 'kqHk] cy gksrk vfodkjh gSA
buds vkxs lqj pØorhZ v#] bUnz dh 'kfDr gkjh gSAA

iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA9AA

ॐ gzha vrqY; cy lgtkfr'k;/kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

izHkq dh fgr fer v# fiz; ck.kh] lcdks larks"k fnykrh gSA
lr~ bUnz pj.k esa vk >qdrs] mu lcdk eu g"kkZrh gSAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA10AA

ॐ gzha fiz; fgr opu lgtkfr'k;/kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

केवलज्ञान के 10 अतिशय

tc dsoyKku izdV gksrk] lqj vfr'k; u;k fn[kkrs gSaA
djds lqfHk{k i`Foh ry dks] lkS ;kstu rd egdkrs gSaAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA11AA

ॐ gzha xO;wfr 'kr~ prq'V; lqfHk{kRo ?kkfr{k;tkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

T;ksa lw;Z mn; gksrk uHk esa] R;ksa izHkq v/kj gks tkrs gSaA
cl ikap gtkj /kuq"k Åij] izHkq xxu xeu dks ikrs gSaAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA12AA

ॐ gzha vkdk'k xeu ?kkfr{k;tkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

izHkq n;k Hkko ds dks"k jgs] vn;k dk uke fu'kku ughaA
tks pj.k 'kj.k ik tkrs gSa] mlds ufga gksrk [ksn dghaAA
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीष झुकाते हैं।।13।।

ॐ gzha vn;kHkko ?kkfr{k;tkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

dsoy Kku dk vfr'k; gS izHkq] doykgkj ugha djrsA
fQj Hkh ru cnu iz'kLr jgs] thoksa ds [ksn lHkh gjrsAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA14AA

ॐ gzha doykgkj jfgr ?kkfr{k;tkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

tc dsoy Kku izdV gksrk] rc ;g vfr'k; gks tkrk gSA
fQj psru vkSj vpsru d`r] milxZ ugha gks ikrk gSAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA15AA

ॐ gzha milxkZHkko ?kkfr{k;tkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

leo'kj.k esa Jhftu dk eq[k] mRrj iwoZ esa jgrk gSA
fn[krk gS pkjksa vksj fo'kn] 'kqHk tSuke ;s dgrk gSAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA16AA

ॐ gzha prqeZq[kRo ?kkfr{k;tkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

izHkq lc fo|k ds bZ'oj gSa v#] loZ dyk dks'ky /kkjhA
tu&tu ij d#.kk djrs gSa] izHkq loZ yksd esa midkjhAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA17AA

ॐ gzha loZ fo|s'oj ?kkfr{k;tkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

gS ijekSnkfjd ru izHkq dk] u iM+rh gS mldh Nk;kA
tks iqn~xy ls gh cuk gqvk] ;g izHkq dh gS dSlh ek;kAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA

lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA18AA

ॐ gzha Nk;k jfgr ?kkfr{k;tkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ–IokgkA

iydsa u dHkh >idrh gSa] izHkq uk'kk ij n`f"V j[krsA
fcu ns[ks nzO; pjkpj ds] og Lo;a Kku ls lc y[krsAA
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद तीर्थंकर पाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीष झुकाते हैं।।19।।

ॐ gzha v{kLian ?kkfr{k;tkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ–IokgkA

;s vfr'k; efgek 'kkyh gS] izHkq dsoy Kku txkrs gSaA
ufga c<+sa ds'k u[k fdafpr~ Hkh] T;ksa ds R;ksa gh jg tkrs gSaA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA20AA

ॐ gzha leku u[k ds'kRo ?kkfr{k;tkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ–IokgkA

14 देवकृत अतिशय

rhFkZadj ftudh fnO; ns'kuk] lokZ/kZekx/kh Hkk"kk esaA
gS peRdkj nsoksa dk ;s] le>ks lqjd`r ifjHkk"kk esaAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA21AA

ॐ gzha lokZ/kZekx/kh; Hkk"kk nsoksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ–IokgkA

ftl vksj izHkq ds pj.k iM+sa] tu&tu esa eS=h Hkko jgsA
lc cSj fojks/k feVs eu dk] d#.kk dk mj ls lzksr cgsAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA22AA

ॐ gzha loZ thoeS=h Hkko nsoksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ–IokgkA

ftuoj dk xeu tgka gksrk] bd lkFk Qwy f[ky tkrs gSaA
lkSjHk lqxa/k ds }kjk og] vouh ry dks egdkrs gSaAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA23AA

ॐ gzha loZrqQyQykfn r#ifj.kke nsoksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ–IokgkA

izHkq pj.k iM+s ftl olq/kk ij] Hkw dapu or~ gks tkrh gSA
T;ksa&T;ksa vkxs c<+rs tkrs] niZ.k or~ gksrh tkrh gSAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA24AA

ॐ gzha niZ.k leHkwfe nsoksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ–IokgkA

vfr'k; ;s nsoksa d`r gksrk] lqjfHkr ok;q vuqdwy jgsA
lc fo"ke O;kf/k dk uk'k djs] 'kqHk ean lqxa/k lehj cgsAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA25AA

ॐ gzha lqxaf/kr fogj.k euqxr ok;qRo nsoksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ–IokgkA

vkuan ljksoj ygjk, eu esa] mRlkg meax HkjsA
izHkq dk n'kZu lkjs tx esa] tu eu dk dYe"k nwj djsAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA26AA

ॐ gzha lokZuan dkjd nsoksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ–IokgkA

ok;q dqekj lqj vkdj ds] vfr'k; ;s [kwc fn[kkrs gSaA
/kwfy daVd ls jfgr Hkwfe] djds izHkq xeu djkrs gSaAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh'k >qdkrs gSaAA27AA

ॐ gzha daVd jfgr Hkwfe nsdksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

lqj es?k dqekj lqo`f"V djs] 'kqHk xa/kksnd o"kkZrs gSaA
es?kksad`r ogh lqxa/kh ls] tu&tu ds eu g"kkZrs gSaAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh"k >qdkrs gSaAA28AA

ॐ gzha es?kdqekjd`r xa/kksnd o`f"V nsdksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

izHkq xxu xeu tc djrs gSa] lqj Lo.kZ dey jprs tkrsA
iUnzg ds oxZ dey jpuk] ;g tSukxe esa crykrsAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh"k >qdkrs gSaAA29AA

ॐ gzha pj.k dey ry jfpr Lo.kZ dey nsdksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

Qy Qwy f[kys lc _rqvksa ds] tgk¡ fturj ds 'kqHk pj.k iM+sA
Qy ls r# Mkyh >qd tkrh] [ksrksa esa /kkU; ds ikS/k c<+sAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh"k >qdkrs gSaAA30AA

ॐ gzha QyHkkj uez 'kkfy nsdksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

loZ fn'kk,a fueZy gksrh] 'kjn dky le gks vkdk'kA
HkfDr Hkko ls djsa vpZuk] gks tkrh gS iwjh vklAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh"k >qdkrs gSaAA31AA

ॐ gzha loZ fn'kk fueZyRo nsdksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

vkvks&vkvks HkfDr dj yks] lcdk djrs vkg~okuuA
Hkko lfgr HkfDr djrs og] pj.kksa esa djrs gSa oanuAA

iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh"k >qdkrs gSaAA32AA

ॐ gzha vkdk'k t;&t;dkj 'kCn nsdksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

/keZ pØ eLrd ij j[kdj] lokZg.; ;{k vkxs pyrkA
;{k Lo;a fn[kykrk vfr'k;] Hkfotu dks vkuan feyrkAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh"k >qdkrs gSaAA33AA

ॐ gzha /keZ pØ prq"V; nsdksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

N= paoj niZ.k /ot Bksuk] ia[kk >kjh dy'k egku~A
v"V nzO; ysdj vkrs gSa] LoxZ yksd ls nso iz/kkuAA
iwoZ iq.; ds izcy ;ksx ls] in rhFkZadj ikrs gSaA
lqj ujsUnz lkS/keZ bUnz uj] pj.kksa 'kh"k >qdkrs gSaAA34AA

ॐ gzha v"Veaxy nzO; nsdksiuhrkfr'k; /kkjd loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

vuar prq"V; ds v?;Z

rhu yksd ds nzO; pjkpj] ,d lkFk gh tku jgsA
xq.k i;kZ; lfgr nzO;ksa dks] lehphu ifgpku jgsAA
Kku vuarkuar izkIr dj] dsoy Kkuh dgyk,A
xq.k vuar ds /kkjh ftu in] oanu djus ge vk,AA35AA

ॐ gzha vuar Kku xq.k izkIrk; Jh loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

deZ n'kZukoj.kh uk'kk] dsoy n'kZu izxVk;kA
fnO; ns'kuk }kjk tx esa] loZ yksd dks n'kkZ;kAA
ik, n'kZ vuar Jh ftu] Kkrk n`"Vk dgyk,A
xq.k vuar ds /kkjh ftu in] oanu djus ge vk,AA36AA

ॐ gzha vuar n'kZu xq.k izkIrk; Jh loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-LokgkA

eksguh; deksZa dks uk'kk] lq[k vuar dks ik;k gSA
u'oj lq[k dks R;kx izHkq us] 'kk'or~ lq[k mitk;k gSAA
ik, lkS[; vuar Jh ftu] vgZar izHkq th dgyk,A
xq.k vuar ds /kkjh ftu in] oanu djus ge vk,AA37AA

³ã gzha vuar lq[k xq.k izkIrk; Jh loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-ikehfr LokgkA

deZ uk'kdj varjk; dks] vkre 'kkS;Z txk;k gSA
vkre dh 'kfDr [kksbZ Fkh] mldks Hkh izHkq us ik;k gSAA
ik, oh;Z vuar Jh ftu] vgZar izHkq th dgyk,A
xq.k vuar ds /kkjh ftu in] oanu djus ge vk,AA38AA

³ã gzha vuar oh;Z xq.k izkIrk; Jh loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-ikehfr LokgkA

अष्ट प्रातिहार्य

'kksd fuokjh r# v'kksd gS] izkfrgk;Z dgykrk gSA
jRu tfM+r gSa Mky ikr lc] eugj iou cgkrk gSAA
izkfrgk;Z olq izHkq us ik,] vgZr~ ftuoj dgyk,A
xq.k vuUr ds /kkjh ftuin] oUnu djus ge vk,AA39AA

³ã gzha r#v'kksd lRizkfrgk;Z lfgr loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-ikehfr LokgkA

iq"io`f"V lqjx.k tc djrs] 'kksHkk gksrh vijaikjA
pkjksa vksj QSyrh lqjfHkr] vfr'k;dkjh xa/k vikjAA
izkfrgk;Z olq izHkq us ik,] vgZr~ ftuoj dgyk,A
xq.k vuUr ds /kkjh ftuin] oUnu djus ge vk,AA40AA

³ã gzha iq"io`f"V lRizkfrgk;Z lfgr loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-ikehfr LokgkA

fnO; /ofu izgfLr gksrh gS] lc Hkk"kke; pkjksa vksjA
Åij dkj e; gqbZ ns'kuk] djrh lcdks Hkko foHkksjAA
izkfrgk;Z olq izHkq us ik,] vgZr~ ftuoj dgyk,A
xq.k vuUr ds /kkjh ftuin] oUnu djus ge vk,AA41AA

³ã gzha fnO; /ofu lRizkfrgk;Z lfgr loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-ikehfr LokgkA

v{k; dks"k iq.; ls Hkjrs] pkSalB pWoj <qkSjdj nsoA
izHkq pj.kksa esa nso lefiZr] rhu ;ksx ls jgs lnSoAA
izkfrgk;Z olq izHkq us ik,] vgZr~ ftuoj dgyk,A
xq.k vuUr ds /kkjh ftuin] oUnu djus ge vk,AA42AA

³ã gzha pra'kf"V pWoj lRizkfrgk;Z lfgr loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-ikehfr LokgkA

jRuksa ls ef.Mr gksrk gS] Jh ftusUnz dk flagkluA
mlds Åij v/kj esa gksrk] rhFkZadj ftu dk vkluAA
izkfrgk;Z olq izHkq us ik,] vgZr~ ftuoj dgyk,A
xq.k vuUr ds /kkjh ftuin] oUnu djus ge vk,AA43AA

³ã gzha flagklu lRizkfrgk;Z lfgr loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-ikehfr LokgkA

Hkwe.My dks eksfgr djrk] Jh ftu dk vkHkk e.MyA
lIr Hkoksa dk fnXn'kZd gS] Jh ftusUnz dk Hkke.MyAA
izkfrgk;Z olq izHkq us ik,] vgZr~ ftuoj dgyk,A
xq.k vuUr ds /kkjh ftuin] oUnu djus ge vk,AA44AA

³ã gzha Hkke.My lRizkfrgk;Z loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-ikehfr LokgkA

nso naqnqfHk ctrh eugj] eu dks vkg~ykfnr djrhA
tM+ gksdj Hkh HkO; tho ds] eu dk lc dYe"k gjrhAA
izkfrgk;Z olq izHkq us ik,] vgZr~ ftuoj dgyk,A
xq.k vuUr ds /kkjh ftuin] oUnu djus ge vk,AA45AA

³ã gzha nso naqnqfHk lRizkfrgk;Z lfgr loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZr ijesf"BH;ks v?;Za fuoZ-ikehfr LokgkA

rhu N= n'kkZ;d gS ;g] Jh ftu jgs f=yksdh ukFkA
rhu yksd ds vf/kuk;d gSa] >qdk jgs ro pj.kksa ekFkAA

izkfrgk;Z olq izHkq us ik,] vgZr~ ftuoj dgyk,A
xq.k vuUr ds /kkjh ftuin] oUnu djus ge vk,AA46AA

ॐ gzha N=; lRizkfrgk;Z lfgr loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf'BH;ks v?;Za fuoZ-Ikkgk A

rksg& iwtu dj vjgUr dh] deZ gks; mi'kkarA
jksx 'kksd dk uk'k gks] dSj&cSj gks 'kkarAA47AA

ॐ gzha loZ?kkfrdeZ fouk'kd prq'k'Bh ewyxq.k izkIr Jh vgZUr ijesf'BH;ks iw.kkZ?;Za fuoZ-Ikkgk A

tki& ॐ gzha Jha Dyha loZ?kkfrdeZ fouk'kd Jh vgZUr ijesf'BH;ks ue% loZ 'kkafr dq# dq# ue% LokgkA

जयमाला

(दोहा)

कर्म घातिया नाशकर, पावें पद अरहंत।
शीष झुकाते चरण में, सुर नर मुनि सब संत।।

तुम जग जीवन के युग दृष्टा, सद्ज्ञान प्रदाता अर्हन्त देव ।
हे धर्म ! तीर्थ के उन्नायक, पुरूषार्थ साध्य साधन सुदेव ।।
हे तीर्थंकर ! तव वाणी का, सर्वत्र गूँजता जयकारा।
हे रत्नत्रय! के सूत्र धार, तुमने जग से जग को तारा ।।
हे अरिनाशक अरिहंत प्रभु !, कई होते चरणो चमत्कार ।
सद् भक्त आपके द्वारे पर, वन्दन करते हैं बार–बार ।।
हे तीन लोक के नाथ प्रभु !, सर्वज्ञ देव जिन वीतराग ।
हे मानवता के मुक्ति दूत!, न तुमको जग से रहा राग ।।
हित मित प्रिय वचनों को जिनेश, यह नियति सदा दोहराएगी ।
हे परम पिता ! हे जगत ईश !, प्रकृति भी तव गुण गाएगी ।।

तव दर्शन करने से जग के, सारे संकट कट जाते हैं ।
जो चरण शरण में आते है, वह मन वांछित फल पाते हैं ।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुःख उनके पास न आते हैं ।
वह भी अर्हत् बन जाते हैं, जो अर्हन्त प्रभु को ध्याते हैं ।।
जो सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण, अरु सम्यक् तप को पाते हैं ।
वह पञ्च महाव्रत समिति पञ्च, पञ्च इन्द्रिय जय भी पाते हैं ।।
मन को स्थिर कर गुप्ति से, षट्आवश्यक का पालन करते ।
निज हाथों करते केश लुंच, शुभ वीतरागता को धरते ।।
करते हैं अतिशय भव्य कई, चरणों में शीष झुकाते हैं ।
तब देवलोक से देव कई, जिन भक्ति करने आते हैं ।।
प्रभु दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य, सुख अनन्त चतुष्टय पाते है ।
फिर केवल ज्ञान प्रगट होता, वसु प्रातिहार्य प्रगटाते हैं ।।
सब ऋद्धि सिद्धियाँ नत होकर, जिनके चरणों में आतीं हैं ।
जो शरणागत बनकर प्रभु पद, में नत होकर के झुक जाती हैं ।।
ऐसा निर्मल पावन पवित्र, जो पद प्रभु तुमने पाया है ।
उस पद, को पाने हेतु प्रभु, मन मेरा भी ललचाया है ।।
जो चलें प्रभु के कदमों पर, वह भी अर्हत् हो जाएगा ।
वह कर्म नाशकर अपने सारे, मुक्ति वधु को पाएगा ।।
हे धर्म ! ध्वजा के अधिनायक ! हे विशद ज्ञान ज्योति ललाम! ।
हे कृपा! सिन्धु करुणा निधान ! चरणों में हो शत्–शत् प्रणाम ।।

(छन्द घत्तानंद)

श्री जिनवर स्वामी, अन्तर्यामी, कोटि नमामि जगदाता।
हे जगत् उपाशक, पाप विनाशक, अर्हंत प्रभु जग के ज्ञाता।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वघाति कर्म विनाशक श्री अरहंत परमेष्ठी जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कवित्त रूपक)

संयम रतन विभूषण भूषित, नाशक दूषण श्री जिनराज।
सुमति रमा रंजन भव भंजन, तीन लोक के प्रभु सरताज।।
अमल अखण्डित सकल सुमंगल, भव तारक अघ हरन जहाज।
तारण तरण श्री जिन चरणों, आए भाव सुमन ले आज।।

।। इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)।।

श्री सिद्ध पूजा

स्थापना

अधिपति हैं प्रभु धवल वन के, स्वर्णिम सौन्दर्य विमल पावन।
अक्षय हैं अनुपम अविनाशी, प्रभु शौर्य आपका मन भावन।।
हे सिद्ध शिला के अधिनायक ! शुभ ज्ञान मूर्ति चैतन्य धाम।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, हे चिर ज्योति ! अमृत ललाम।।
ये भक्त खड़ा है चरणों में, इसकी विनती स्वीकार करो।
तुम हो पतित पावन प्रभुवर, अब मेरा भी उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

हे प्रभु! हमारे मन के सब, कलुषित भावों को निर्मल कर दो।
मैं आया निर्मल नीर लिए, प्रभु सरल भावना से भर दो।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिने जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मैं भटक रहा हूँ सदियों से, संसार ताप का नाश करो।

यह सुरभित चंदन लाया प्रभु, मम् हृदय में ज्ञान सुवास भरो।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिने संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षय तंदुल कर में लाया, अक्षय विश्वास लिए उर में।
मैं भाव सहित गुणगान करूँ, भक्ति के गीत भरो स्वर में।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।3।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

विषयों की ज्वाला भगवन्! मैं आया आज नशाने को।
श्रद्धा के सुन्दर सुमन लिए, अब आया नाथ चढ़ाने को।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगणित व्यंजन खाए लेकिन, मिट सकी न मन की अभिलाषा।
नैवेद्य चरण में लाया हूँ, मिट जाए भोजन की आशा।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अन्तर में मोह तिमिर छाया, इसने जग में भरमाया है।
अब मोह अंध के नाश हेतु, भावों का दीप जलाया है।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।

चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फंस कर के जग मिथ्यामति में, सारे जग को अपनाये हैं।
अब धूप दहन करके भगवन्, भव कर्म जलाने आए हैं।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों में मानस रमता है, पर तृप्त कभी न हो पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, यह भाव सहित फल ले आए।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्ध चक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

होगा अनन्त सुख प्राप्त मुझे, यह भाव बनाकर लाया हूँ।
मैं अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, यह अर्घ्यं बनाकर आया हूँ।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो।
चरणों में दास खड़ा भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सिद्ध प्रभु के आठ गुण, होते आदि अनन्त।
अष्ट कर्म का नाश कर, करते भव का अन्त।।
अष्ट गुणों का भाव ले, आया चरणों नाथ।
पुष्पाञ्जलि अर्पित करूँ, झुका चरण में माथ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सिद्धों के आठ मूलगुण के अर्घ्य

यह मोह कर्म दुखदाई है, उसने जग को भरमाया है।
जिसने उसको ठुकराया है, उसने समकित गुण पाया है।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीष झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ज्ञान प्रकट न होने दे, वह ज्ञानावरणी कर्म कहा।
जो कर्म नाश कर प्रकट करे, वह केवल ज्ञान प्रकाश रहा।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीष झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण जहाँ में, दर्शन गुण का घात करे।
नाश करे इसका जो साधक, केवल दर्शन प्राप्त करे।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीष झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय है कर्म घातिया, सद्गुण का जो नाशी है।
उसका घात किए जिन स्वामी, बल अनन्त की राशि है।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीष झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म का नाश किया प्रभु, गुण सूक्ष्मत्व लिया प्रगटाय।

अविकारी हो गये अमूरत, सिद्ध सिला पर पहुँचे जाय।।
अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, करता सिद्धों का सुमरन।
करके नमित अष्ट अंगों को, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।5।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म का नाश किए प्रभु, अवगाहन गुण उपजाए।
चतुर्गति से मुक्त हुए अरु, इस भव से मुक्ति पाए।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीष झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अवगाहन गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म का नाश किए प्रभु, अगुरूलघु गुण उपजाए।
ऊँच नीच का भेद मेंटकर, सिद्धों के जो सुख पाए।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीष झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघु गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय कर्मों के नाशी, अव्याबाध सुगुण को पाय।
कर्माधीन सुखों को तजकर, निराबाध सुख को उपजाय।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीष झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण आदि कर्मों के, नाशी हैं जो सिद्ध महान्।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, सिद्धि पाने हे भगवन।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।

हम चरणों शीष झुकाते हैं, हे सिद्ध ! शिला के अधिकारी।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक अनन्तानन्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रीं सर्व कर्म रहिताय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- सिद्ध अनन्तानन्त पद, वन्दन करूँ त्रिकाल।
अष्ट मूलगुण प्राप्त जिन, की गाऊँ जयमाल।।

पद्धडि छंद

जय-जय अखण्ड चैतन्य रूप, तुम ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप।
रागादि विकारी भाव हीन, तुम हो चित् चेतन ज्ञान लीन।।
निर्द्वन्द निराकुल निर्विकार, निर्मम निर्मल हो निराधार।
कर राग द्वेष नो कर्म नाश, स्वभाविक गुण में किए वास।।
जय शिव वनिता के हृदय हार, प्रभु नित्य निरंजन निराकार।
कर निज परिणति का सत्य भान, सद्धर्म रूप शुभ तत्व ज्ञान।।
प्रभु अशरीरी चैतन्यराज, अविरूद्ध शुद्ध शिव सुख समाज।
सम्यक्त्व सुदर्शन ज्ञानवान, सूक्ष्मत्व अगुरुलघु सुगुण खान।।
अवगाह वीर्य सुख निराबाध, प्रभु धर्म सरोवर हैं अगाध।
प्रभु अशुभ कर्म को मान हेय, माना चित् चेतन उपादेय।।
रागादि रहित निर्मल निरोग, स्वाश्रित शाश्वत् शुभ सुखद भोग।
कुल गोत्र रहित निस्कुल निश्छल, मायादि रहित निश्चल अविकल।।
चैतन्य पिण्ड निष्कर्म साध्य, तुम हो प्रभु भविजन के अराध्य।
मनसिज ज्ञायक प्रतिभाष रूप, हे स्वयं सिद्ध! चैतन्य भूप।।
चैतन्य विलासी द्रव प्रमाण, नाशे प्रभु सारे कर्म बाण।
प्रभु जान सका मैं तुम्हें आज, हो गये सफल सम्पूर्ण काज।।
प्रगट्यो मम् उर में भेद ज्ञान, न तुम सम है कोई महान।
तुम पर के कर्त्ता नहीं नाथ, हम जोड़ प्रार्थना करें हाथ।।

तुम ज्ञाता सबके एक साथ, तव चरणों में झुक गया माथ।
ये भक्त खड़ा है विनय वन्त, प्रभु करो शीघ्र भव का सुअन्त।।
अब हमने भी यह लिया जान, तुम करते सबको निज समान।
जय वीतराग चैतन्य वान, जय-जय अनन्त गुण के निधान।।
तुममें पर का कुछ नहीं लेश, तुम हो जग के ज्ञायक जिनेश।
जो करें आपका 'विशद' ध्यान, वह पाता है कैवल्य ज्ञान।।
फिर करें कर्म का पूर्ण अन्त, हो जाएँ क्षण में श्री संत।
तब सिद्ध सिला पर हो विश्राम, निज पद ही हो आनन्द धाम।।
मेरे मन आवें यही देव, बन जाऊँ मैं भी विशद एव।
मिट जाए आवागमन नाथ, वह पद पाने पद झुका माथ।।

(छन्द घत्तानन्द)

श्री सिद्ध अनन्ता, शिव तिय कन्ता, वीतराग विज्ञान परं।
जय जग उद्धारं शिव दातारं, सर्व मनोहर सौंख्य करं।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक अनन्तानन्त श्री सिद्ध परिमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा - चिदानन्द चिद् ब्रह्म में, चिर निमग्न चैतन्य।
चित् चिन्तन चिद्रूप हो, चिन्मय चेतन जन्य।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आचार्य परमेष्ठी की पूजन

स्थापना

हे विश्व वंद्य ! हे करुणानिधि ! वात्सल्य मूर्ति हे रत्नाकर !
हे युग प्रधान ! हे वर्धमान ! हे सौम्य मूर्ति ! हे करुणाकर ।।
त्रैलोक्य पूज्य हे समदृष्टा ! हे पुण्य पुंज ! ऋषिवर प्रधान।
हे ज्ञान सूर्य ! आचार्य प्रवर, तव 'विशद' हृदय में आह्वानन्।।
हे गुरुवर ! गुरु गुण के धारी, हमको सद राह दिखा दीजे।

हे मोक्ष मार्ग के अधिनायक !, हमको गुरु चरण-शरण लीजे।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

कर्म कलंक पंक मल धोने, निर्मल जल भर लाये हैं।
जन्म जरा मृत रोग नशाने, गुरु चरणों में आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीष झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो जन्म, जरा, मृत्यु, विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चमक-दमक मय महक मनोहर, मंगल चंदन लाये हैं।
पाप शाप संताप मिटाने, गुरु गुण गाने आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीष झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत अनुपम सुन्दर, अंजलि भरकर लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें गुरु, चरण शरण में आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीष झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

चंदन से रंजित अक्षत हम, फूल मानकर लाये हैं।
काम वासना नाश करो गुरु, पद में सुमन चढ़ाये है।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीष झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

उत्तम धवल श्रीफल द्वारा, नैवेद्य बनाकर लाये हैं।
क्षुधा वेदना शान्त करो गुरु, तव चरणों को ध्याये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीष झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रतन जड़ित शुभ दीप सुमंगल, आरती करने लाये हैं।
निशा नाश हो मोह तिमिर की, तुम सा बनने आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीष झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

महकें दशों दिशायें जिससे, धूप दशांगी लाये हैं।
अष्ट कर्म का दमन करो गुरु, कर्म शमन को आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीष झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ऐला केला आम सुपाड़ी, लोंग श्रीफल लाये हैं।
मोक्ष महाफल पाने को शुभ, भाव बनाकर आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीष झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

जल फलादि वसु द्रव्य सु सुंदर, थाल संजोकर लाये हैं।
पद अनर्घ पाने को गुरुवर, अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीष झुकाये हैं।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – छत्तिस गुण को धारते, गुरु निर्ग्रन्थाचार्य।
पुष्पाञ्जलि से पूजते, उनके पद सब आर्य।।

(अथ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

36 मूलगुण के अर्घ्य

जीवादि तत्त्वों पर करते, दोष रहित जो सद् श्रद्धान्।
प्रथम कषाय अनन्तानुबन्धी, करते मिथ्यातम की हान।।

दर्शनाचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।

ॐ ह्रीं दर्शनाचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

संशय और विमोह त्याग कर, करते है विभ्रम का नाश।
मिथ्या ज्ञान रहित होकर जो, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश।।
ज्ञानाचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

पंच महाव्रत समिति पाँच तिय, गुप्ति का पालन करते।
तेरह विधि चारित्र पालते, अतीचार को भी हरते।।
चारित्राचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।3।।

ॐ ह्रीं चारित्राचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनशन आदि बाह्य सुतप छह, अन्तरंग तप पाल रहे।
द्वादश विधि तप धारण करके, संयम रतन सम्हाल रहे।।
तपाचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।4।।

ॐ ह्रीं तपाचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म नाश करने की शक्ति, में बुद्धि नित करते हैं।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित तप, के भावों से भरते हैं।।
वीर्याचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।5।।

ॐ ह्रीं वीर्याचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीत रहे जो सर्व कषाएँ, करते विषयों का संहार।
क्षुधा वेदना जीत रहे जो, चतुर्विधि त्यागे आहार।।
अनशन तप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।

चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।6।।

ॐ ह्रीं अनशन तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भूख से कम आधा चौथाई, एक ग्रास लेते आहार।
उत्तम मध्यम जघन्य रूप से, होता है जो तीन प्रकार।।
ऊनोदर तप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।7।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चर्या को आहार हेतु जो, व्रत संख्यान करके जावें।
लाभालाभ में तोष रोष नहिं, साम्य भाव मन में पावें।।
व्रत परिसंख्यान पालते हैं तप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।8।।

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कभी एक दो तीन रसों का, छोड़-छोड़ करते आहार।
कभी चार रस कभी पाँच का, कभी छोड़ते सर्व प्रकार।।
रस परित्याग का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।9।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

अनाशक्त रहते विविक्त जो, शैयाशन से तप करते।
शान्त भाव से रहते हैं जो, बाधाओं से नहिं डरते।।
विविक्त शैयाशन का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।10।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैयाशन तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

तन से रहा ममत्व भाव जो, धीरे-धीरे छोड़ रहे।
आत्म ध्यान में रत रह करके, चेतन से नाता जोड़ रहे ।।
कायोत्सर्ग तप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।11।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गमनागमन आदि चर्या में, हो प्रमाद से प्राणी घात।
गुरु के द्वारा लेते प्रायश्चित्, करते दोषों का संघात।।
प्रायश्चित् तप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।12।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित् तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चारित्र रूप है, और विनय उपचार कहा।
यथा योग्य आदर करना ही, इनका विनयाचार रहा।।
विनय सु तप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।13।।

ॐ ह्रीं विनय तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

करें साधना साधक अपनी, उसमें कोइ बाधा आवे।
दूर करें निस्वार्थ भाव से, वैयावृत्ति कहलावे।।
वैयावृत्ति सु तप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।14।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्ति तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुबह शाम दिन रात निरन्तर, स्वाध्याय में रहते लीन।
वाचना पृक्षना अरु अनुप्रेक्षा, आम्नाय उपदेश प्रवीन।।
स्वाध्याय तप पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।15।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होवे यदि उपसर्ग परीषह, शांत भाव से सहते हैं।
आत्म ध्यान में लीन रहें नित, मोह त्याग कर रहते हैं।।
व्युत्सर्ग तप पालन का करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।16।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चिंतन मनन ध्यान जप में जो, रहते हैं निशदिन लवलीन।
आत्म ध्यान नित करें भाव से, होते सम्यक् ज्ञान प्रवीन।।

ध्यान सुतप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्यं चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य।।17।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश धर्म के अर्घ्य

दुष्ट जीव यदि कोई सतावे, तो भी क्रोध नहीं लावे।
समता भाव धारते मन में, क्षमा धर्म वह कहलावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।18।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमाधर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

अहंकार के त्याग भाव से, विनय भाव मन में आवे।
मृदु भाव धारण करने पर, मार्दव धर्म कहा जावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।19।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छल छद्रम माया तजने से, सरल भाव मन में आवे।
समता भाव जगे अन्तर में, आर्जव धर्म कहा जावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।20।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन स्वभाव से अशुचि रहा है, शुद्ध नहीं वह हो पावे।
लोभ त्याग से भाव बने जो, उत्तम शौच कहा जावे ।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।21।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

असद् वचन को पाप कहा है, वह तो जग में भटकावे।
सत्य वचन अभिप्राय जानकर, कहें सत्य वह कहलावे।।

परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।22।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट् कायों की रक्षा करने, इन्द्रिय मन वश में करते।
पंच पाप से निवृत होकर, उभय रूप संयम धरते।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।23।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अन्तरंग बहिरंग उभय तप, द्वादश विधि जो अपनावें।
खेद नहीं करते हैं मन में, उत्तम तप साधु पावें।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।24।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पर द्रव्यों को भिन्न जानकर, उनमें राग नहीं लावे।
राग द्वेष से रहित मुनि के, उत्तम त्याग कहा जावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।25।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बाह्याभ्यन्तर उभय परिग्रह, में जो मोह नहीं पावे।
समतावान मुनि के भाई, आकिन्चन्य कहा जावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।26।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्त्री में आशक्ति तजकर, काम वासना को जीते।
ब्रह्मचर्य व्रत के धारी मुनि, आत्म ध्यान अमृत पीते।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।27।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दुर्ध्यानों का त्याग करें जो, जीवों में समता पावें।
तीन काल करते सामायिक, आवश्यक करते जावें।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।28।।

ॐ ह्रीं समता आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौबिस तीर्थंकर की भक्ति, परमेष्ठी को नित ध्यावें।
सरल सौम्य भावों के द्वारा, स्तुति कर जिन गुण गावें।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।29।।

ॐ ह्रीं स्तुति आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव वन्दना करें भाव से, दोष रहित जिन गुण गावें।
उनके गुण को पाने हेतु, सतत् भावना जो भावें।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।30।।

ॐ ह्रीं वन्दना आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अहोरात्रि में मन, वच, तन से, दोष कोई भी लग जावे।
आलोचन कर प्रायश्चित् लें, प्रतिक्रमण वह कहलावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।31।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मन, वच, तन से त्याग करें जो, नहीं रोष मन में लावें।
प्रत्याख्यान कहा आगम में, साधु नित्य इसे पावें।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।32।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन से ममता भाव त्याग कर, निज आतम को जो ध्यावे।
पावन ध्यान लगावें मन से, कायोत्सर्ग कहा जावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।33।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मन मर्कट होता अति चंचल, यत्र तत्र दौड़ा जावे।
उसको वश में करना भाई, मनो गुप्ति जो कहलावे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।34।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्ति प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हित मित प्रिय जो वचन उचरते, मधुर वचन मुख से बोलें।
करुणा कारी वचन बोलने, हेतु ही जो मुख खोलें।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।35।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्ति प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निज काया को वश में करके, चंचलता को त्याग रहे।
तन में स्थिरता धर के जो, काय गुप्ति में लाग रहे।।
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीष झुकाते हैं ।।36।।

ॐ ह्रीं कायगुप्ति प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – छत्तिस पाए मूल गुण, पाले पंचाचार।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, वन्दूँ बारम्बार।।37।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्ठी मूलगुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं पञ्चाचार प्रदायक श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – भरा हुआ जिनके हृदय, जीवों से अनुराग।
मुक्ति के राही परम, नहीं किसी से राग ।।
भरत भूमि को धन्य कर, लिया आप अवतार।
मात पिता जननी सभी, मान रहे उपकार।।

तर्ज – भक्तामर की (वीर छंद)

सम्यक् श्रद्धा की गुण मणियाँ, मोह तिमिर की हैं नाशक।
चित् स्वरूप चेतन के गुण की, दिनकर सम हैं जो भासक।।
सम्यक् श्रद्धा हम पा जायें, गुरुवर दो हमको आशीष।
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीष।।
लोकालोक प्रकाशित करता, भव्य जनों को सम्यक् ज्ञान।
चेतन और अचेतन का तब, स्वयं आप हो जाता भान।।
सम्यक् ज्ञान निधि देने को, गुरुवर बन जाओ आदीश ।
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीश ।।
कर्म कालिमा का नाशक है, पृथ्वी तल पर सदाचरण ।
सत् संयम पालन करने को, संतों की है श्रेष्ठ शरण ।।
सम्यक् चारित पाने हेतु, चरणों में झुकते आधीश ।
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीश ।।
शीतल आभा से विकसित है, जैसे नभ से चन्द्र किरण ।
चेतन को कुंदन करता है, जग में सम्यक् तपश्चरण ।।
सम्यक् तप की अभिलाषा है, चरण शरण दो हमें मुनीश ।
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीश ।।
निज शक्ति को नहीं छिपाकर, पालन करते वीर्याचार।
शुभ भावों से स्वयं शुद्ध हो, हो जाते हैं भव से पार।।
वीर्याचार करूँ में पालन, गुरुवर ऐसा दो आशीष ।
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीश ।।
पंच महाव्रत समिति गुप्ति तिय, षट् आवश्यक पाल रहे ।
पंचेन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर, पंचाचार संभाल रहे ।।

वाणी से वचनामृत देते, भव्यजनों को हे वागीश !
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीश ।।
उत्तम क्षमा आदि धर्मों का, पालन करते जो निर्दोष ।
द्वादश अनुप्रेक्षा के चिंतक, गुरुवर रत्नत्रय के कोष ।।
रत्नत्रय का दान हमें दो, 'विशद' योग से हे योगीश !।
आचार्य प्रवर के श्री चरणों में, झुका रहे हम अपना शीश ।।

दोहा – छत्तिस गुण धारी परम, करते तुम्हें प्रणाम ।
चरण शरण के दास की, भक्ति फले अविराम ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – चरण शरण के दास की, लगी है मन में आश ।
ज्ञान ध्यान तप शील का, नित प्रति होय विकास ।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

उपाध्याय परमेष्ठी की पूजन

स्थापना

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, धारी जो ज्ञाता विद्वान।
रत्नत्रय का पालन करते, उपाध्याय हैं सर्व महान्।।
वीतराग, निर्ग्रन्थ दिगम्बर, निर्विकार अविकारी हैं।
मोक्षमार्ग के अधिनायक गुरु, जग में मंगलकारी हैं।।
करते ज्ञानाभ्यास निरन्तर, संतों को करवाते हैं।
उपाध्याय का आह्वानन् कर, अपने हृदय बसाते हैं।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय धारक श्री उपाध्याय परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सहज सुनिर्मल जल के अनुपम, कलश भरूँ मंगलकारी।
त्रिविध रोग का नाश होय मम्, पद पाऊँ मैं अविकारी।।
उपाध्याय के चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।

मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण्।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्व.स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान का शीतल चंदन, भव आताप का करता नाश।
मोह महातम हरता है जो, करता ज्ञान स्वरूप प्रकाश।।
उपाध्याय के चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण्।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्व. स्वाहा।

पावन सहज भाव के अक्षत, अक्षय पद प्रगटाते हैं।
पुण्य पाप आस्रव के कारण, उनका नाश कराते है।।
उपाध्याय के चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण्।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान के पुष्पों की शुभ, गंध परम सुखदायी है।
काम बाण की नाशक है जो, महाशील शिवदायी है।।
उपाध्याय के चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण्।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

क्षुधा अग्नि से बहुत दुःखी हम, तृप्त नहीं हो पाते हैं।
परम तृप्ति दायक समभावी, चरुवर परम चढ़ाते हैं।।
उपाध्याय के चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण्।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम विशद ज्ञान के दीपक, मोह महातम नाशक हैं।
मिथ्यातम के पूर्ण विनाशक, लोकालोक प्रकाशक हैं।।
उपाध्याय के चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण्।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

केवल ज्ञान की धूप मनोहर, अष्ट कर्म की नाशक है।
नित्य निरन्जन शिव सुखदायी, आतम ध्यान विकाशक है।।
उपाध्याय के चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण्।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

सहज स्वभावी आत्म ध्यान के, रसमय फल सुखदायक हैं।
रत्नत्रय के पावन फल ही, मोक्ष मार्ग दर्शायक हैं।।
उपाध्याय के चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण्।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

उत्तम अष्ट द्रव्य का पावन, अर्घ्य परम आनन्द मयी।
पद अनर्घ अपवर्ग रूप है, मंगलमय त्रैलोक्य जयी।।
उपाध्याय के चरण वन्दना, करके पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाऊँ मैं पद निर्वाण्।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(दोहा)

उपाध्याय के मूल गुण, होते हैं पच्चीस ।
पुष्पांजलि कर पूजता, वन्दन करू ऋषीश ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

उपाध्याय परमेष्ठी के 25 मूलगुण

ग्यारह अंग के अर्घ्य (सरसी छन्द)

महाव्रती का चारित है जिसमें, आचारांग कहा।
सहस अठारह पद का वर्णन, जिसमें पूर्ण रहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं आचारांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्ञान विनय क्रिया प्रतिपत्ति का, वर्णन पूर्ण रहा।
छेदोपस्थापना के वर्णन युत, सूत्र कृतांग कहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छह द्रव्यों के वर्णन संयुत, स्थानांग कहा।
जीव स्थान का वर्णन जिसमें, सविस्तार रहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं स्थानांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन लोक स्वरूप द्रव्य का, जिसमें कथन रहा।
एक लाख चौसठ हजार पद, समवायांग कहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं समवायांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अस्तिनास्ति के सप्तभंग युत, व्याख्या प्रज्ञप्ति कहा।
लाख दोय अट्ठाईस सहस पद, से संयुक्त रहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं व्याख्या प्रज्ञप्ति अंग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

तीर्थंकर गणधर चारित युत, ज्ञातृ कथांग जानो
पाँच लाख छप्पन हजार पद, उसके पहिचानो।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृकथांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उपासकाध्ययन अंग में भाई, श्रावक चारित्र कहा।
ग्यारह लाख सत्तर हजार पद, से संयुक्त रहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौबीसों तीर्थंकर जिन के, प्रति दश दश जानो।
उपसर्ग सहित अर्न्तमुर्हूत में, मुक्ति पद मानो।।
इसका वर्णन किया है जिसमें, अन्त: कृद्दशांग कहा।
तेइस लाख अठ्ठाईस हजार पद, में विस्तार रहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अन्त: कृद्दशांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौबीसों तीर्थंकर जिनके, प्रति दश-दश जानो।
उपसर्ग सहन कर पंचानुत्तर, उपपाद हुआ मानो।।
इसका वर्णन किया है जिसमें, उपपादिक दशांक रहा।
बानवे लाख चबालीस सहस पद, में विस्तार कहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपादकदशांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नाना प्रकार के उत्तर युक्त, प्रश्न व्याकरणांग रहा।
तेरानवे लाख सोलह हजार पद, में विस्तार कहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।10।।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

उदय उदीरणा कर्म कथन युत, विपाक सूत्रांग रहा।
एक करोड़ चौरासी लाख पद, में विस्तार कहा।।
उपाध्याय पच्चिस गुण पाए, रत्नत्रय धारी।

उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाऊँ, जग मंगलकारी।।11।।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(14 पूर्व के अर्घ्य) छन्द रोला

व्यय उत्पाद ध्रौव्य युत वस्तु, ऐसा जानो।
शास्त्र महा उत्पाद पूर्व, भाई पहिचानो।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।12।।

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्त तत्व छह द्रव्य पदारथ, भाई जानो।
अग्रायणीय पूर्व में इनका, कथन बखानों।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।13।।

ॐ ह्रीं अग्रायणी पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तीर्थंकर चक्रीश हरी, बलदेव सु जानो।
वीर्यानुवाद पूर्व में भाई, कथन बखानो।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।14।।

ॐ ह्रीं वीर्यानुवादपूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सर्व वस्तु में सप्त भंग, तुम भाई जानो।
अस्ति-नास्ति प्रवाद पूर्व, भाई पहिचानो।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।15।।

ॐ ह्रीं अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्ञानोत्पत्ति के कारण, जिन आठ बताए।
ज्ञान प्रवाद पूर्व, शास्त्र, यह भाई गाए।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।16।।

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वर्ण स्थान द्विइन्द्रियादि, भाई जानो।
सत्य प्रवाद पूर्व में, वर्णन इसका मानो।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।17।।

ॐ ह्रीं सत्यप्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गमनागमन सुलक्षण जीवों, का बतलाए।
आत्म प्रवाद पूर्व में वर्णन, इसका गाए।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।18।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

बन्ध उदय कर्मो की सत्ता, भाई जानो।
कर्म प्रवाद पूर्व में भाई, कथन बखानो।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।19।।

ॐ ह्रीं कर्मप्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रत्याख्यान द्रव्य पर्यायें, भाई जानो।
प्रत्याख्यान पूर्व भाई, इसको पहिचानो।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।20।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पंच महाव्रत विद्या सत्, लघु वर्णन गाया।
अष्टांग निमित्त युत विद्यानुवाद, पूरव बतलाया।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।21।।

ॐ ह्रीं विद्यानुवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तीर्थंकर बलभद्र आदि पूर्व में, हुए हैं भाई।
कल्याण वाद पूरव में उनकी, महिमा बतलाई।।

उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।22।।

ॐ ह्रीं कल्याणनुवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ज्योतिष मंत्र भूत आदि की, नाशक विधियाँ।
अष्टांग निमित्त की प्राणानुवाद में, रही सुनिधियाँ।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।23।।

ॐ ह्रीं प्राणानुवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गीत नृत्य अरु सकल छन्द की, कला महा है।
अलंकार वर्णन युत क्रिया विशाल, ये पूर्व रहा है।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।24।।

ॐ ह्रीं क्रियाविशाल पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुख दुःख का वर्णन त्रिलोक में, जानो भाई।
लोक बिन्दु सार में मोक्ष की, विधि बतलाई।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।25।।

ॐ ह्रीं लोकबिन्दुसार पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

ग्यारह अंग पूर्व–चौदह के, ज्ञाता जानो।
सारे जग में इनकी महिमा, को पहिचानो।।
उपाध्याय परमेष्ठी हैं, इस गुण के धारी।
चरण वन्दना करूँ अंग, यह मंगल कारी।।26।।

ॐ ह्रीं पंचविंशतिगुण प्राप्ताय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

जाप–ॐ ह्रीं द्वादशांग श्रुतज्ञान सहिताय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – उपाध्याय की वन्दना, करता रहूँ त्रिकाल।

विशद भाव से गा रहे, तिन गुण की जयमाल।।

(पद्धडि छन्द)

जय उपाध्याय मुनिवर महान्, जय ज्ञान ध्यान चारित्रवान।
जय नग्न दिगम्बर रूप धार, शुभ वीतराग मय निर्विकार।।
जय मिथ्यातम नाशक मुनीश, तव चरण झुकावे शीष ईश।
जय आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान हीन, जय धर्म शुक्ल में हुए लीन।।
जय मोह सुभट का नाश कीन, जय आत्म ज्ञानयुत गुण प्रवीण।
जय आतापन आदि योग धार, जो करते हैं निज में विहार।।
जय सम्यक् दर्शन ज्ञान पाय, जय सम्यक् चारित्र उर बसाय।
जय विषय भोग का कर विनाश, जय त्याग किए सब जगत आश।।
जय विद्वत रत्न कहे मुनीश, कई भक्त झुकाते चरण शीष।
नित प्राप्त करें सम्यक् सुज्ञान, शिष्यों को दे सद् ज्ञान दान।।
जय करें जगत कुज्ञान नाश, जय करें धर्म का सद् प्रकाश।
जय काम कषाएँ किए क्षीण, जय तत्व देशना में प्रवीण।।
जय अंग सु एकादश प्रमाण, जय चौदह पूरव लिए जान।
हो गये आप इनके सुनाथ, तव चरण झुकावें भक्त माथ।।
जय धर्म अहिंसा लिए धार, जय गमन करें पग–पग विचार।
जय सौम्य मूर्तिं हैं परम शांत, मुद्रा दिखती है अति प्रशांत।।
जय–जय गुण गरिमा जग प्रधान, जय भव्य कमल विज्ञान वान।
जय–जय परमेष्ठी हुए आप, जय भव्य भ्रमर तव करें जाप।।
जय–जय करूणाकर कृपावन्त, तब हुए जगत् में सकल संत।
आध्यात्म रसिक हो सुगुण खान, जय ज्ञानामृत का करें पान।।
तुम पाए गुण जग में अपार, तव चरणों करते नमस्कार।
हमको गुरु भव से करो पार, हमको भी दो गुरु तत्त्व सार।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय सम्यक् ज्ञानी विद्या दानी, उपाध्याय के गुण गाऊँ।
भव ताप निवारी बहुगुण धारी, ज्ञान पुजारी को ध्याऊँ।।

ॐ ह्रीं पंचविंशतिगुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा – उपाध्याय को पूजकर, पाऊँ ज्ञान निधान।
सुख शांति को प्राप्त कर, पाऊ पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वाद।। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

सर्व साधु पूजन

स्थापना

जो पंच भरत ऐरावत में, रहते हैं बीस विदेहों में।
कम तीन कोटि नव संत विशद, फँसते न गेह सनेहों में।।
जिन संतों के सद्गुण पाने, हम उनके गुण को गाते हैं।
हम भाव सहित पूजा करते, चरणों में शीष झुकाते हैं।।
जो रत्नत्रय के धारी हैं, हम करते उनका आह्वानन्।
चरणों में सर्व साधुओं के, शत् शत् वन्दन शत्–शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्, अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छंद)

तजूँ मिथ्या मोह मद को, भाव समकित से भरूँ।
ज्ञान का निर्मल सलिल ले, चरण में अर्पित करूँ।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भूलकर निज को हमारा, बढ़ रहा संसार है।
चरण चन्दन में चढ़ाऊँ, पाना भव से पार है।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव भ्रमण का नाश हो मम्, विषय भावों को तजूँ।
धवल अक्षत मैं चढ़ाऊँ, साम्यभावों से सजूँ।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

चित्त विचलित कर रहा यह, प्रबल कारी काम है।
पुष्प अर्पित करूँ पद में, कई जिनके नाम हैं।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन् ।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षुधा की पीड़ा सताती, पूर्ण न होवे कभी।
सरस व्यंजन मैं चढ़ाऊँ, करूँ अर्पित मैं सभी।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण सहित सर्वसाधु परमेष्ठिभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तम घना मिथ्यात्व का है, नाश उसका मैं करूँ।
ज्ञान के दीपक जलाकर, तिमिर को भी परि हरूँ।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो मोह अन्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

भ्रमण करता फिर रहा हूँ, मैं अनादि से विभो!
अष्ट कर्मो को जलाऊँ, धूप अग्नि में प्रभो!

विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्-शत् नमन्।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल अनेकों पाए लेकिन, हुए सारे ही विफल।
मैं विविध फल चरण लाया, प्राप्त हो अब मोक्षफल।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्-शत् नमन्।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्ट द्रव का अर्घ्य लेकर, करूँ में अर्पित चरण।
महाव्रतादि प्राप्त करके, पाऊँ मैं पण्डित मरण।।
विषय आशा को तजूँ मैं, करूँ शिवसुख का यतन।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्-शत् नमन्।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशति मूलगुण सहित सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

साधु के गुण का कथन, करते हैं उर धार।
पुष्पांजलि अर्पित करूँ, पाने भव से पार।।

(पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अठ्ठाईस मूलगुण के अर्घ्य

त्रस स्थावर जीव सभी को, जान रहे हैं आप समान।
तीन योग से समता धारें, दुष्ट कोई आ जाय महान्।
परम अहिंसा व्रत के धारी, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अहिंसामहाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव से, वस्तु जो जिस रूप रही।

नहीं अन्यथा वचन बोलते, कहते जो जिस रूप कही।।
परम सत्यव्रत के धारी शुभ, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी है।।2।।

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिना दिए पर की वस्तु को, छूते लेते नहीं कभी।
रहित याचना नग्न दिगम्बर, त्याग दिए है द्रव्य सभी।।
व्रत अचौर्य के धारी पावन, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अचौर्यमहाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारी देव मनुष्य पशु की, मन, वच, तन से छोड़ दिए।
शीलव्रती हो मुक्ति वधु से, अपना नाता जोड़ लिए।।
ब्रह्मचर्य व्रत के धारी शुभ, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यमहाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यन्तर रहा परिग्रह, पूर्ण रूप से छोड़ दिया।
सारे जग की आशाओं से जिसने, मुख को मोड़ लिया।।
सर्व परिग्रह व्रत के धारी, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हाथ भूमि को लखकर, राह पर चलते जाते हैं।
यत्र तत्र कुछ नहीं देखते, समता हृदय सजाते हैं।।
ईर्या पथ से चलते हैं जो, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी है।।6।।

ॐ ह्रीं ईर्या समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित प्रिय वाणी है जिनकी, बोलें आगम के अनुसार।
भव्य जीव सुनकर कर लेते, स्वयं आप ही कंठाधार।।

भाषा समिति धारने वाले, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।7।।

ॐ ह्रीं भाषा समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक शुद्ध अन्न जल को भी, पूर्ण शोध कर लें आहार।
छियालिस दोष टालकर लेते, साम्य भाव से हो अविकार।।
समिति ऐषणा धारण करते, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।8।।

ॐ ह्रीं ऐषणा समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देख शोध परिमार्जित करके, वस्तु का करते आदान।
रखने में जीवों की रक्षा, का रखते हैं पूरा ध्यान।।
समिति धरें आदान निक्षेपण, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।9।।

ॐ ह्रीं आदान निक्षेपण समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छिद्र रहित प्रासुक भूमि पर, करते हैं जो मूत्र पुरीश।
जीवों की रक्षा में हरदम, तत्पर रहते जैन मुनीश।।
शुभ व्युत्सर्ग समिति धारी, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।10।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हल्का भारी कड़ा नरम अरु, रूखा चिकना शीत गरम।
स्पर्शन इन्द्रिय विषयों को, जीत रहे हैं संत परम।।
स्पर्शन इन्द्रिय के विजयी, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।11।।

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खट्टा मीठा अरु कषायला, कटुक रहा चरपरा विशेष।
विषय कहे रसना इन्द्रिय के, जीत रहे हैं मुनि अशेष।।
रसना इन्द्रिय विजयी मुनिवर, जग जन के उपकारी हैं।

चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।12।।

ॐ ह्रीं रसना इन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं दुर्गन्ध सुगन्ध भेद द्वय, घ्राणेन्द्रि के रहे विशेष।
उन पर विजय प्राप्त करते है, वश में करते उन्हें अशेष।।
घ्राणेन्द्रिय के विजयी मुनिवर, जग जन के उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।13।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीला पीला श्वेत श्याम अरु, लाल रंग यह पाँच कहे।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, इन विषयों को जीत रहे।।
चक्षु इन्द्रिय के विजयी मुनि, जग जन के उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।14।।

ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सा रे गा मा पा धा नि सा, कर्णेन्द्रिय के विषय कहे।
सप्त तत्व के चिन्तन द्वारा, सप्त विषय को जीत रहे।।
कर्णेन्द्रिय के विजयी मुनिवर, जग जन के उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं।।5।।

ॐ ह्रीं कर्णइन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता भाव सभी जीवों पर, निज समान सबको माने।
संयम तप की शुभम् भावना, राग द्वेष से अंजाने।।
आर्त-रौद्र के ध्यान हीन शुभ, मुनिवर समताधारी हैं।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।16।।

ॐ ह्रीं समता आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो अर्हन्त सिद्ध की स्तुति, भक्ति भाव से नित्य करें।
करते हैं गुणगान भाव से, मन के सारे दोष हरें।।
विनयभाव शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।17।।

ॐ ह्रीं स्तुति आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अर्हत् सिद्धाचार्यों की जो, नित्य वन्दना करते हैं।
पंच पाप से रहित मुनीश्वर, चरणों में सिर धरते हैं।।
विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।18।।

ॐ ह्रीं वन्दना आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोष लगे मन, वच, तन कोई, करने को उनका क्षयकार।
प्रतिक्रमण से भाव शुद्धि कर, आलोचन निज उर में धार।
विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।19।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यथा शक्ति पर वस्तु त्यागें, ये ही प्रत्याख्यान रहा।
असन रसादि का नित प्रतिदिन, करने हेतु त्याग कहा।
विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।20।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

गेह देह से नेह छोड़कर, स्थिर होकर करते जाप।
शांत भाव से कष्ट सहें सब, त्याग करें जो सारे पाप।
विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।21।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ऊँच–नीच भूमि को पाकर, शिलाखण्ड के ऊपर जाय ।
जीव रहित भूमि निर्जन्तुक, सोवें ऐसी वसुधा पाय ।।
क्षिति शयन गुण के धारी मुनि, जग में रहते हैं अविकार ।
तिनके चरणों शीश झुकाते, भाव सहित हम बारम्बार।।22।।

ॐ ह्रीं भूमिशयन गुण सहित साधु श्री परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध लेप आभरण त्यागकर, करते नहीं कभी संस्कार।

करते नहीं स्नान कभी भी, जीवों के प्रति करुणाधार।
अस्नान मूल गुण धारी, जग में रहते हैं अविकार।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, उनके चरणों बारम्बार।।23।।

ॐ ह्रीं अस्नान गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बालक वत् जो रहे दिगम्बर, अस्त्र वस्त्र सब त्याग दिए।
तिल तुष मात्र परिग्रह का जो, मन वच तन से त्याग किए।
हैं अचेलक्य मूल गुण धारी, जग में रहते हैं अविकार।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, उनके चरणों बारम्बार।।24।।

ॐ ह्रीं वस्त्रत्याग गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दाड़ी मूँछ शीष के अपने, हाथों से केशलौंच करें।
तन की शोभा के त्यागी मुनि, मन में समता भाव धरें।
कच लुंचन गुण सहित मुनीश्वर, जग में रहते हैं अविकार।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, उनके चरणों बारम्बार।।25।।

ॐ ह्रीं केशलुंचन गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक बार लघु भोजन करते, रस नीरस का छोड़ विचार।
ममता त्याग उदर पूरण कर, करें साधना समता धार।।
एक भुक्त गुण सहित मुनीश्वर, जग में रहते हैं अविकार।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, उनके चरणों बारम्बार।।26।।

ॐ ह्रीं एक भुक्ति गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खड्गासन में स्थिर रहकर, स्थित होकर ले आहार।
इन्द्रिय का पोषण न करते, करने चले आत्म उद्धार।
स्थिति भुक्ति गुण के धारी, मुनिवर रहते हैं अविकार।।
'विशद' भाव से वन्दन करते, उनके चरणों बारम्बार।।27।।

ॐ ह्रीं स्थितिभुक्ति गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म जीव पर करुणा करके, मंजन दांतुन का कर त्याग।
दाँतों को चमकाएँ नहीं मुनि, उनके प्रति भी छोड़ें राग।
हैं अदन्त गुण के धारी मुनि, जग में रहते हैं अविकार।।

'विशद' भाव से वन्दन करते, उनके चरणों बारम्बार।।28।।

ॐ ह्रीं अदन्तधावन गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत समिति पाँच अरु, पंच इन्द्रिय जय करें मुनीश।
षट् आवश्यक क्षिति शयन कर, करें नहीं स्नान ऋशीश।
एक भुक्ति स्थित भोजन कर, वस्त्र त्याग न धोवें दंत।
आठ बीस गुण पालन करते, पूज्यनीय वह मेरे संत।।29।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं रत्नत्रय सहिताय श्री सर्वसाधु परमेष्ठिभ्यो: नम:।

जयमाला

दोहा - विषयाशा का त्याग कर, पालें गुण अठबीस।
तिन गुण की जयमाल कर, 'विशद' झुकाऊँ शीष।।

जय वीतरागधारी मुनीश, तव पद में वन्दन करें ईश ।
जय पंच महाव्रत लिए धार, जो समिति पालते कर विचार ।।
जय-मन इन्द्रिय को वश करेय, फिर षट् आवश्यक चित्त देय ।
मुनि क्षिति शयन गुण रहे पाल, निज हाथों नोचे स्वयं बाल ।।
जय वस्त्राभूषण किए त्याग, जिनको तन से न रहा राग ।
जय स्थित होकर लें आहार, जो लघु भोजन लें एक बार ।।
जय न्हवन आदि छोड़ें मुनीश, तिनके चरणों मम् झुका शीश ।
जय दातुन मंजन दिए छोड़, भोगों से नाता लिए तोड़ ।।
सब जीवों के रक्षक मुनीश, जय सत्य महाव्रत धार ईश।
जय व्रत के धारी हैं अचौर्य, जय ब्रह्मचर्य का लेय शौर्य ।।
जय परिग्रह चौबीस त्यागहीन, जो वीतराग मय ध्यान लीन ।
जय चार हाथ भूमि विहार, शुभ देखभाल करते निहार ।।
जय वचन बोलते कर विचार, अरु भूमि शोध करते निहार ।
जय देख शोध लेवें अहार, जो वस्तु रख लेवें विचार ।।
व्युत्सर्ग समिति में प्रवीण, जय वीतराग मय ध्यान लीन ।

जय स्पर्शन को लिए जीत, जो रसना के न हुए मीत ।।
जय गंध दोय जीते मुनीश, चक्षु इन्द्रिय के बने ईश ।
जय कर्णेन्द्रिय के विषय जीत, सब त्याग किए हैं वाद्य गीत ।।
जय सुख दुःख में समता विचार, जिन वन्दन करते बार-बार।
जिन स्तुति करते हैं प्रधान, मुनि स्वाध्याय करते महान।।
जो प्रतिक्रमण करते विशेष, नित ध्यान करें तज राग शेष।
मुनि अट्ठाईस गुण रहे पाल, वह त्याग किए सब जगत् जाल ।।
हम करते वन्दन जोड़ हाथ, उनके चरणों यह झुका माथ ।
हम लेकर आए द्रव्य साथ, अब करो कर्म का गुरु घात ।।
यह भक्त खड़े हैं लिए आस, अब दीजे हमको मुक्तिवास ।
हैं 'विशद' हमारे यही भाव, भव सिन्धु से हो पार नाव।।

(छन्द घत्तानन्द)

मुनि अविकारी, संयम धारी, रत्नत्रय के कोष महान् ।
मंगलकारी, ज्ञान पुजारी, वीतरागता के विज्ञान ।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निव.स्वाहा।

दोहा - रत्नत्रय को पालते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ।
उनके गुण हम पा सकें, होय कर्म का अन्त ।।

।। इत्याशीर्वाद:।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्

रत्नत्रय पूजा

(स्थापना)

चतुर्गति का कष्ट निवारक, दुःख अग्नि को शुभ जलधार।
शिवसुख का अनुपम है मारग, रत्नत्रय गुण का भण्डार।।
तीन लोक में शांति प्रदायक, भवि जीवों को एक शरण।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, रत्नत्रय का है आह्वान।।

ॐ हीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ हीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्।

ॐ हीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल–नन्दीश्वर)

ले हेम कलश मनहार, प्रासुक नीर भरा।
देते हम जल की धार, नशे मम जन्म–जरा।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की गंध अपार, शीतल है प्यारा।
है भवतम हर मनहार, अनुपम है प्यारा।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह धवल अनूप, हम धोकर लाए।
अक्षत पाएँ स्वरूप, अर्चा को आए।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ले भाँति–भाँति के फूल, उत्तम गंध भरे।
हो कामबाण निर्मूल, निर्मल चित्त करे।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बना रसदार, मीठे मनहारी।
जो क्षुधा रोग परिहार, के हों उपकारी।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रकाश, तम को दूर करे।
हो मोह महातम नाश, मिथ्या मति हरे।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजी ले धूप सुवास, दश दिश महकाए।
हों आठों कर्म विनाश, भावना यह भाए।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल ले रसदार, अनुपम थाल भरे।
हो मुक्ति फल दातार, भव से मुक्त करे।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, बनाकर यह लाए।
पाने हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य लेकर आए।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– थाल भरा वसु द्रव्य का, दीपक लिया प्रजाल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, गाते हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

मोक्ष मार्ग का अनुपम साधन, रत्नत्रय शुभ धर्म कहा।
जिसने पाया धर्म विशद यह, उसने पाया मोक्ष अहा।।
प्रथम रत्न सम्यक् दर्शन, करना तत्त्वों में श्रद्धान।
निरतिचार श्रद्धा का धारी, सारे जग में रहा महान्।।
श्रद्धाहीन ज्ञान चारित का, रहता नहीं है कोई अर्थ।
कठिन-कठिन तप करना भाई, हो जाता है सभी व्यर्थ।।
गुण का ग्रहण और दोषों का, समीचीन करना परिहार।
सम्यक् ज्ञान के द्वारा होता, जग में जीवों का उपकार।।
ज्ञान को सम्यक् करने वाला, होता है सम्यक् श्रद्धान्।
पुद्गल अर्ध परावर्तन में, जीव करे निश्चय कल्याण।।
भेद ज्ञान को पाने वाला, करता है निजगुण में वास।
वस्तु तत्त्व का निर्णय करने, से हो मोह तिमिर का ह्रास।।
निरतिचार व्रत के पालन से, हो जाता है स्थिर ध्यान।
निजानन्द को पाने वाले, करते निजानन्द रसपान।।
कर्मों का संवर हो जिससे, आश्रव का हो पूर्ण विनाश।
गुण श्रेणी हो कर्म निर्जरा, होवे केवलज्ञान प्रकाश।।
रत्नत्रय का फल यह अनुपम, अनन्त चतुष्टय होवे प्राप्त।
अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध सनातन बनते आप्त।।
अन्तर्मन की यही भावना, रत्नत्रय का होय विकास।
कर्म निर्जरा करें विशद हम, पाएँ सिद्ध शिला पर वास।।

दोहा- तीनों लोकों में कहा, रत्नत्रय अनमोल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, बोल सके जय बोल।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिसने भी इस लोक में, पाया यह उपहार।
अनुक्रम से उनको मिला, विशद मोक्ष का द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

सम्यक् दर्शन पूजा

(स्थापना)

शंकादि वसु दोष अरु, रही मूढ़ता तीन।
छह अनायतन आठ मद, पच्चिस दोष विहीन।।
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति, धारे सद् श्रद्धान्।
ज्ञान और चारित्र में, सम्यक् दर्श प्रधान।।
सम्यक् दर्शन श्रेष्ठ है, मंगलमयी महान्।
विशद हृदय में हम करें, जिसका शुभ आह्वान।।

ॐ ह्रीं शुद्ध सम्यक्दर्शन ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं शुद्ध सम्यक्दर्शन ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं शुद्ध सम्यक्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल-छन्द)

हम भव-भव रहे दुखारी, मिथ्यामति हुई हमारी।
यह नीर चढ़ाने लाए, भव रोग नशाने आए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने भव रोग बढ़ाया, न सम्यक् दर्शन पाया।
हम चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाएँ, भव का सन्ताप नशाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जग में रहे अकुलाए, न अक्षय पद को पाए।
अब अक्षय पद प्रगटाएँ, अक्षत यह धवल चढ़ाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।

हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों की आश लगाए, तीनों लोकों भटकाए।
अब कामबाण नश जाए, हम फूल चढ़ाने लाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने व्यंजन कई खाए, सन्तुष्ट नहीं हो पाए।
अब क्षुधा रोग नश जाए, नैवेद्य चढ़ाने लाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह की महिमा न्यारी, मोहित करता है भारी।
हम दीप जलाकर लाए, यह मोह नशाने आए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम होता अविकारी, कर्मों से बना विकारी।
हम कर्म नशाने आए, अग्नि में धूप जलाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भटकते आए, न मोक्ष महाफल पाए।
हम मोक्ष महाफल पाएँ, फल चरणों श्रेष्ठ चढ़ाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चतुर्गति भटकाए, न पद अनर्घ शुभ पाए।
यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, पाने अनर्घ पद आए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य

दोहा– अष्ट अंग युत श्रेष्ठ है, सम्यक् दर्श महान्।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण।।

¼e.MyL;ksifj iq"ikatfyaf{kisr~½

(छन्द : जोगीरासा)

nso 'kkL= xq: tSu /keZ esa] 'kadk eu esa vkosA
nks"k djsa lE;d~n'kZu esa] Hko ou esa HkVdkosAA
gks fu'kad ftu /keZ opu esa] ln~n`f"V dgykosA
lE;d~ pkfjr /kj vuqØe ls] fl) f'kyk dks tkosAA1AA

ॐ ह्रीं 'kadkeynks"k jfgr fu%'kafdr xq.kksisr lE;d~n'kZuk; v?;Za fuoZ–IokgkA

deZo'kh tks var lfgr gS] iki dk cht xk;kA
Hko lq[k dh pkgr djuk gh] dka{kk nks"k dgk;kAA
;g lq[k okaNk rtus okyk] ln~n`f"V dgykosA
lE;d~ pkfjr /kj vuqØe ls] fl) f'kyk dks tkosAA2AA

ॐ ह्रीं dka{kkeynks"k jfgr fu%dkaf{kr xq.kksisr lE;d~n'kZuk; v/;Za fuoZ–IokgkA

gS LoHkko ls nsg vikou] gS jRu=; ls ikouA
R;kx tqxqIlk xq.k esa izhfr] eqfu ru gS eu HkkouAA
Xykfu dks rtus okyk gh] ln~n`f"V dgykosA
lE;d~ pkfjr /kj vuqØe ls] fl) f'kyk dks tkosAA3AA

ॐ ह्रीं fofpfdRlk eynks"k jfgr fufoZfpfdRlk xq.kksisr lE;d~n'kZuk; v?;Za fuoZ-LokgkA

dqiFk iaFk iaFkh dh Lrqfr] vkSj iz'kalk djukA
Hko nq%[k dk dkj.k gS HkkbZ] n'kZu nks"k le>ukAA
djsa ew<+ dh ugha iz'kalk] ln~n`f"V dgykosA
lE;d~ pkfjr /kj vuqØe ls] fl) f'kyk dks tkosAA4AA

ॐ ह्रीं ew<+n`f"Veyrks"k jfgrvew<+n`f"Vxq.kksisr lE;d~n'kZuk; v?;Za fuoZ-LokgkA

Lo;a 'kq) gS eks{k dk ekjx] eksgh nks"k yxkosA
/keZ dh fuUnk gks; tgk¡ ;g] n'kZu nks"k dgkosAA
voxq.k <kds nks"kh tu ds] ln~n`f"V dgykosA
lE;d~ pkfjr /kj vuqØe ls] fl) f'kyk dks tkosAA5AA

ॐ ह्रीं vuqixwgueyrks"k jfgrmixwgu xq.kksisr lE;d~n'kZuk; v/;Za fuoZ-LokgkA

lE;d~ n'kZu ;k pfj= ls] pfyr dksbZ gks tkosA
vKkuh Hkko Hkze.k djs og] n'kZu nks"k yxkosAA
/keZ Hkko ls muds eu esa] iqu% /keZ mitkosA
lE;d~ pkfjr /kj vuqØe ls] fl) f'kyk dks tkosAA6AA

ॐ ह्रीं vfLFkfrdj.keyrks"k jfgr fLFkfrdj.k xq.kksisr lE;d~n'kZuk; v/;Za fuoZ-LokgkA

/keZ vkSj lk/kehZ tu esa] izhfr ugha tks /kjrsA
lE;d~n'kZu esa og izk.kh] nks"k vusdksa djrsAA
okRlY; dk Hkko /kjs rks] ln~n`f"V dgykosA
lE;d~ pkfjr /kj vuqØe ls] fl) f'kyk dks tkosAA7AA

ॐ ह्रीं vokRlY; eyrks"k jfgr okRlY; xq.kksisr lE;d~n'kZuk; v/;Za fuoZ-LokgkA

feF;k v# vKku frfej tks] QSyk lkjs tx esaA
lefdr esa og nks"k yxkos] pys u eqfDr ex esaAA
tSu /keZ dks djs izdkf'kr] ln~n`f"V dgykosA

lE;d~ pkfjr /kj vuqØe ls] fl) f'kyk dks tkosAA8AA

ॐ ह्रीं vizHkkoukeyrks"k jfgr izHkkoukxq.kksisr lE;d~n'kZuk; v/;Za fuoZ-LokgkA

सम्यक् दर्शन के रहे, आठ अंग शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पाने शिव का द्वार।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट अंगयुत सम्यक्दर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– श्रेष्ठ कहा त्रय लोक में, सम्यक् दर्श त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, जिसकी हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

सम्यक्दर्शन रत्न श्रेष्ठ है, मिथ्या मति का करे विनाश।
भेद ज्ञान जागृत करता है, जीव तत्त्व का करे प्रकाश।।1।।
जिन वच में शंका न धारे, लोकाकांक्षा से हो हीन।
देव–शास्त्र–गुरु के प्रति किंचित्, ग्लानि से जो रहे विहीन।।2।।
देव धर्म गुरु के स्वरूप का, निर्णय करते भली प्रकार।
दोष ढाकते गुण प्रगटित कर, हुआ धर्म गुरु के आधार।।3।।
श्रद्धा चारित से डिगते जो, स्थित करते निज स्थान।
संघ चतुर्विध के प्रति मन से, वात्सल्य जो करें महान्।।4।।
धर्म प्रभावना करते नित प्रति, तपकर आगम के अनुसार।
लोक देव पाखंड मूढ़ता, पूर्ण रूप करते परिहार।।5।।
छह अनायतन सहित दोष इन, पच्चिसों से रहे विहीन।
द्रव्य तत्त्व के श्रद्धाधारी, सप्त भयों से रहते हीन।।6।।
सम्यक् दर्शन तीन लोक में, होता भाई अपरम्पार।
वृहस्पति भी इसकी महिमा, का ना जान सका है पार।।7।।

सम्यक्दर्शन पाने हेतु, विशद हृदय जागे श्रद्धान।
अतीचार भी कभी लगे ना, रहे हृदय में हरदम ध्यान।।8।।

दोहा– दर्शन के शुभ आठ गुण, संवेगादि महान।
मैत्री आदि भावना, श्रद्धा के स्थान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सम्यक् दर्शन लोक में, मंगलमयी महान।
इसके द्वारा भव्य जन, पाते पद निर्वाण।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सम्यक् ज्ञान पूजा

(स्थापना)

अन्तर भावों में जगे, जिनके सद् श्रद्धान।
पा लेते हैं जीव वह, अतिशय सम्यक् ज्ञान।।
संशय विभ्रम नाश हो, हो विमोह की हान।
पावन सम्यक् ज्ञान का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान ! अत्र आगच्छ–आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज – सोलह कारण पूजा)

नीर लिया यह क्षीर समान, करने निज गुण की पहिचान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन श्रेष्ठ सुगन्धिवान, करता है जो शांति प्रदान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।

अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत लिए महान, अक्षय पद के हेतु प्रधान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित आभावान, करने कामबाण की हान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ठ सरस लाए पकवान, क्षुधा रोग नाशी हम आन।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध का होय विनाश, करते अनुपम दीप प्रकाश।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेते धूप अग्नि में आन, कर्म नसे करके निज ध्यान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।

अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि लिए महान, मोक्ष महाफल मिले प्रधान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य बनाया यह मनहार, पद अनर्घ पाने भव पार।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

दोहा– आठ अंग सद्ज्ञान युत, सम्यक् ज्ञान प्रमाण।
पुष्पांजलिं के साथ हम, करते हैं गुणगान।।

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

lE;d~ Kku ds vkB vax o.kZu

'kq) 'kCnmPpkj.k djrs HkkbZ js! O;kdj.k vuqlkj dksyosa HkkbZ js!
'kCnkpkj dk /kkjh tkuks HkkbZ js! tSu /keZ dh izHkqrk ekuks HkkbZ js !AA1AA

ॐ ह्रीं ftuoj dfFkr 'kCnkpkj vax lfgr lE;d~KkusH;ks v?;Za fu–LokgkA

शब्दों के अनुसार भाव से भाई रे ! अर्थ लगावें सही चाव से भाई रे !
अर्थाचार का धारी जानो भाई रे ! जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे !।।2।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित अर्थाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'kq) 'kCn v# vFkZ yxkosa HkkbZ js! 'kCn vFkZ dk Kku yxkosa HkkbZ js !
mHk;kpkj ds /kkjh tkuks HkkbZ js! tSu /keZ dh izHkqrk ekuks HkkbZ js!AA3AA

ॐ ह्रीं ftuoj dfFkr mHk;kpkj vax lfgr lE;d~KkusH;ks v?;Za fuoZ–LokgkA

tks lqpky esa gh vkxe dk HkkbZ js! djrs ikBu iBu Hkko ls HkkbZ js!
dkykpkj ds /kkjh tkuks HkkbZ js! tSu /keZ dh izHkqrk ekuks HkkbZ js !AA4AA

ॐ ह्रीं ftuoj dfFkr dkykpkj vax lfgr lE;d~KkusH;ks v?;Za fuoZ–LokgkA

gkFk iSj v# dL= 'kq) gks HkkbZ js! fou; djsa euo pu ru ls tks HkkbZ js!
fou;kpkj dk /kkjh tkuks HkkbZ js! tSu /keZ dh izHkqrk ekuks HkkbZ js!AA5AA

ॐ ह्रीं ftuoj dfFkr fou;kpkj vax lfgr lE;d~KkusH;ks v?;Za fuoZ–LokgkA

ftuck.kh dk djsa Lok/;k; HkkbZ js! R;kx djsa dbZ iw.kZ gq, rd HkkbZ js!
mi/kkukpkj dk /kkjh tkuks HkkbZ js! tSu /keZ dh izHkqrk ekuks HkkbZ js!AA6AA

ॐ ह्रीं ftuoj dfFkr mi/kkukpkj vax lfgr lE;d~KkusH;ks v?;Za fuoZ–LokgkA

vax iwoZ v: Nqh 'kkL=ksa dh HkkbZ js!] ekuR;kx] cgqekuk /kjs 'kqHk HkkbZ js!
cgqekukpkj dk /kkjh tkuks HkkbZ js!] tSu /keZ dh izHkqrk ekuks HkkbZ js!AA7AA

ॐ ह्रीं ftuoj dfFkr cgqekukpkj vax lfgr lE;d~KkusH;ks v?;Za fu–LokgkA

ftu xq: dks ln~Kku izkIr gks HkkbZ js! uke fNikos ugha tks xq: dk HkkbZ js!
vfuàokpkj dk /kkjh tkuks HkkbZ js! tSu /keZ dh izHkqrk ekuks HkkbZ js!AA8AA

ॐ ह्रीं ftuoj dfFkr vfuUgokpkj vax lfgr lE;d~KkusH;ks v?;Za fuoZ–LokgkA

आठ अंग सद्ज्ञान के, जग में रहे महान।
अर्घ्य चढ़ाकर के यहाँ, किया विशद गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– सर्व सुखों का मूल है, जग में सम्यक् ज्ञान।
जयमाला गाते परम, पाने पद निर्वाण।।

(चौपाई)

सम्यक् ज्ञान रत्न मनहारी, भवि जीवों का है उपकारी।
आगम तृतिय नेत्र कहाए, अष्ट अंग जिसके बतलाए।।1।।

शब्दाचार प्रथम कहलाया, शुद्ध पठन जिसमें बतलाया।
अर्थाचार अर्थ बतलाए, शब्द अर्थमय उभय कहाए।।2।।
कालाचार सुकाल बताया, विनयाचार विनय युत पाया।
नाम गुरु का नहीं छिपाना, यह अनिह्नवाचार बखाना।।3।।
नियम सहित उपधान कहाए, आगम का बहुमान बढ़ाए।
द्वादशांग जिनवाणी जानो, जन-जन की कल्याणी मानो।।4।।
ॐकारमय जिनवर गाए, झेले गणधर चित्त लगाए।
आचार्यों ने उनसे पाया, भव्यों को उपदेश सुनाया।।5।।
लेखन किया ग्रन्थमय भाई, वह माँ जिनवाणी कहलाई।
बृहस्पति महिमा को गाए, फिर भी पूर्ण नहीं कह पाए।।6।।
बालक कितना जोर लगाए, सागर पार नहीं कर पाए।
सागर से भी बढ़कर भाई, विशद ज्ञान की महिमा गाई।।7।।

दोहा- पञ्च भेद सद्ज्ञान के, मतिश्रुत अवधि महान।
मनःपर्यय कैवल्य शुभ, बतलाए भगवान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सम्यक् ज्ञान महान है, शिव सुख का आधार।
उभय लोक सुखकर विशद, मोक्ष महल का द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः।।

सम्यक् चारित्र पूजा

(स्थापना)

पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विध चारित्र गाया।
सम्यक् श्रद्धा सहित भाव से, नहीं आज तक अपनाया।।
संवर और निर्जरा का शुभ, ये ही है अनुपम साधन।

सम्यक्चारित्र का करते हम, विशद हृदय में आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जिन वचनामृत सम शीतल जल, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
जन्म-जरा-मृत्यु का हम भी, रोग नशाने आये हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सुगन्धित शीतल चंदन, हम घिसकर के लाए हैं।
भव संताप मिटाकर अपना, शिव पद पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल धवल अखण्डित अक्षय, पद पाने हम आए हैं।
मिथ्यामल हो नाश हमारा, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित निज खुशबू से, चतुर्दिशा महकाए हैं।
विषय वासना नाश हेतु हम, अर्पित करने लाए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश किए जिन क्षुधा रोग का, अर्हत् पदवी पाए हैं।
यह नैवेद्य चढ़ाकर हम भी, वह पद पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध का नाश किए जिन, केवल ज्ञान जगाए हैं।
अन्तरज्ञान की ज्योति जलाने, दीप जलाकर लाए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, सिद्ध सुपद को पाए हैं।
आठों कर्मनाश हों मेरे, धूप जलाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल अनुपम अक्षय, हम पाने को आए हैं।
श्रेष्ठ सरस फल लिए थाल में, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को हम, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
लख चौरासी भ्रमण नाशकर, शिव सुख पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

दोहा- सम्यक् चारित्र के यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने सुपद अनर्घ्य।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

छह निकाय के जीव बताए, मन वच तन से उन्हें बचाए।
परम अहिंसा व्रत का धारी, आयुकाल पाले अविकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य वचन बोलें हितकारी, महाव्रती होते अनगारी।
सत्य महाव्रत यही बताया, जैनागम में ऐसा गाया।।2।।

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हीनाधिक वस्तु न देवे, बिन आज्ञा के कुछ न लेवे।
व्रत अचौर्य धारी कहलावे, जिन भक्ति कर दोष नसावे।।3।।

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वपर अंग में राग न धारे, ब्रह्मचर्य व्रत पूर्ण सम्हारे।
स्त्री में न प्रीति लगावे, संयम द्वारा कर्म नसावे।।4।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यंतर परिग्रह त्यागे, आकिञ्चन में ही नित लागे।
परम अपरिग्रह व्रत को धारे, नव कोटि से राग निवारे।।5।।

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-जोगीरासा)

नयन से दिन में देख यथावत, भूमि दण्ड प्रमाण।
ईर्या समिति तज प्रमाद नर, करें स्व-पर कल्याण।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।6।।

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-मित-प्रिय वचन कहते हैं, बोलें शब्द सम्हार।
भाषा समिति प्रयत्नकर पालें, मन के दोष निवार।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।7।।

ॐ ह्रीं भाषासमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्नादनोत्पादन आदि, छियालिस दोष निवार।
ध्यान सिद्धि के हेतु भोजन, लेते मुनि अनगार।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।8।।

ॐ ह्रीं एषणासमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु के आदान निक्षेप में, रखते यत्नाचार।
देखभाल करके प्रमार्जन, समिति धरे मनहार।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।9।।

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणासमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकान्त ठोस निर्जन्तुक भू में, मल का करे निहार।
समिति कही व्युत्सर्ग जिनेश्वर, जीवों के हितकार।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।10।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज- नन्दीश्वर पूजा.....)

हम रागादि के भाव, दूषण नाश करें।
प्रभु धार समाधि भाव, निज में वास करें।।
हो मनोगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।।11।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तज कर दुर्नय के शब्द, वचन को गुप्त करें।
चेतन में करके वास, सारे दोष हरें।।
हो वचनगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।।12।।

ॐ ह्रीं वचोगुप्तिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन की चेष्टा का त्याग, स्थिर आसन हो।
हो निज स्वभाव में वास, निज पर शासन हो।।
हो कायगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।।13।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च महाव्रत, पञ्च समीति, तीन गुप्ति धर जैन मुनीश।
तेरह विधि चारित्र पालते, संयम धारी संत ऋशीश।।
यही भावना भाते हैं हम, निज स्वभाव में होय रमण।
वीतराग अविकारी बनकर, सब दोषों का करें वमन।।14।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधि सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तेरह विध चारित्र है, अतिशय पूज्य त्रिकाल।
सम्यक् चारित्र की यहाँ, गाते हम जयमाल।।

(चाल-छन्द)

शुभ सम्यक्चारित्र जानो, तुम रत्न अनोखा मानो।
जो पाँचों पाप नशाए, फिर पंच महाव्रत पाए।।1।।
हो पञ्च समीति धारी, त्रय गुप्ति का अधिकारी।
जो त्रय हिंसा के त्यागी, हैं देशव्रती बड़ भागी।।2।।
मुनि सब हिंसा के त्यागी, विषयों में रहे विरागी।
निज आतम ध्यान लगाते, तब निजानन्द सुख पाते।।3।।

सामायिक संयम धारी, मुनिवर होते अविकारी।
छेदोपस्थापना जानो, व्रत शुद्धि जिससे मानो।।4।।
परिहार विशुद्धि भाई, जिसकी अतिशय प्रभुताई।
जब समवशरण में जावें, अठ वर्ष ज्ञान उपजावें।।5।।
मुनिवर फिर संयम पावें, न प्राणी कष्ट उठावें।
बादर कषाय जब खोवे, तब सूक्ष्म साम्पराय होवे।।6।।
उपशम क्षय जब हो जावे, तब यथाख्यात प्रगटावे।
संयम यह पाँचों पाए, वह केवलज्ञान जगाए।।7।।
हो सर्व कर्म के नाशी, बन जाते शिवपुर वासी।
वे सुख अनन्त को पाते, न लौट यहाँ फिर आते।।8।।

दोहा– सम्यक् चारित प्राप्त कर, करें कर्म का अन्त।
ज्ञान शरीरी सिद्ध जिन, हुए अनन्तानन्त।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भाते हैं यह भावना, पूर्ण करो भगवान।
सम्यक्चारित्र प्राप्त हो, सुपद मिले निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

चतुर्थ वलयः

दोहा– चौंसठ ऋद्धिधर मुनि, अवधि ज्ञान के ईश।
देवों द्वारा पूज्य हैं, तिन्हें झुकाते शीश।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

चौंसठ ऋद्धि पूजा

स्थापना

तीर्थंकर चौबीस लोक में, मंगलमय मंगलकारी।

गणधर ऋद्धिधारी गुरुवर, होते हैं कल्मष हारी।।
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ चौंसठ अनुपम, जिनकी महिमा रही महान।
तीर्थंकर गणधर का एवं, श्रेष्ठ ऋद्धियों का आह्वान।।
यही भावना रही हमारी, होवे इस जग का कल्याण।
विशद भाव से करते हैं हम, उन सबका अतिशय गुणगान।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल भर, हम पूजन को लाए हैं।
जन्म जरादि रोग नशाकर, शिव पद पाने आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केसर आदि सुगन्धित, हमने यहाँ घिसाए हैं।
भव संताप नशाने को हम, आज यहाँ पर लाए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम अक्षय अक्षत हम, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
अक्षय पद पाने को अनुपम, भाव बनाकर आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प मनोहर सुन्दर, थाली में भर लाए हैं।
कामबाण की बाधा अपनी, हम हरने को आए हैं।।

बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ताजे नैवेद्य बनाकर, अर्चा करने आए हैं।
क्षुधा रोग है काल अनादि, उसे नशाने आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीप जला करके हम, आरती करने आए हैं।
मोह तिमिर भारी छाया वह, मोह नशाने आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन आदि शुभ द्रव्यों से, धूप बनाकर लाए हैं।
वसु कर्मों ने हमें सताया, छुटकारा पाने आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला केला श्रीफल आदि, यहाँ चढ़ाने आए हैं।
मोक्ष महाफल पाने को हम, भाव बनाकर आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादि अष्ट द्रव्य का, अनुपम अर्घ्य बनाए हैं।
पद अनर्घ पाने हेतु यह, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।

ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– धारा देते आज, शांति पाने के लिए।
पाने शिव का राज, पूजा करते भाव से।।
(शांतये शान्तिधारा)

सोरठा– भाव भक्ति के साथ, पुष्पाञ्जलि करते यहाँ।
हे त्रिभुवन के नाथ, ऋद्धी सिद्धी दो मुझे।।
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा– जिन मुद्रा धारी मुनि, पावें ऋद्धि त्रिकाल।
उनकी हम गाते यहाँ, भाव सहित जयमाल।।

(चौपाई)

जय-जय तीर्थंकर क्षेमंकर, जय गणधर ऋद्धि के धारी।
जय मोक्ष मार्ग के अभिनेता, जय परम दिगम्बर अविकारी।।
जो सकल व्रतों के धारी हैं, शुभ सम्यक् तप लवलीन रहे।
वह श्रेष्ठ ऋद्धियों के धारी, इस धरती पर जिन संत कहे।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, अतिशय कारी श्रेष्ठ रहे।
और विक्रिया ऋद्धि के सब, भेद एकादश प्रभु कहे।।
भेद विक्रिया ऋद्धि के शुभ, नव जानो अतिशयकारी।
तप ऋद्धि के सात भेद शुभ, कहे गये मंगलकारी।।
बल ऋद्धि के तीन भेद शुभ, जैनगाम में कहे महान।
आठ भेद औषध ऋद्धि के, बतलाए हैं जिन भगवान।।
रस ऋद्धि के भेद कहे छह, जिनका कौन करे गुणगान।
अक्षीण ऋद्धि के भेद कहे दो, क्षीण न हो भोजन स्थान।।
चौंसठ भेद कहे यह भाई, आठों ऋद्धि के सुखकार।

संख्यातीत भेद इनके ही, हो जाते हैं मंगलकार।।
बुद्धि ऋद्धि के द्वारा मुनिवर, बुद्धि पाते अतिशयकार।
और विक्रिया ऋद्धि द्वारा, रूप बनाते विविध प्रकार।।
चारण ऋद्धि पाकर ऋषिवर, करते हैं आकाश गमन।
चलें पुष्प के ऊपर मुनिवर, फिर भी न हो जीव मरण।।
दीप्त सुतप आदि ऋद्धि धर, तप करते हैं विस्मयकार।
फिर भी कांतिमान तन पाते, मुनिवर करते न आहार।।
तप्त सुतप ऋद्धि धारी मुनि, के न होता है नीहार।
जगत विजय की शक्ति पाते, मुनिवर अतिशय ऋद्धिधार।।
रूखा भोजन भी हो जाता, मुनि के कर में मंगलकार।
क्षीर मधु अमृत स्रावी रस, मुनि के कर में मंगलकार।।
औषधि ऋद्धिधर मुनि तन से, स्पर्शित वायु के रोग।
तन का मल छू जाने से भी, हो जाते हैं जीव निरोग।।
जिन्हें प्राप्त अक्षीण ऋद्धियाँ, ऐसे श्रेष्ठ मुनि के पास।
अन्न क्षीण न होय कभी भी, अक्षय होता क्षेत्र निवास।।

(छन्द : घत्तानंद)

जय-जय अविकारी, ऋद्धिधारी, और ऋद्धियाँ सर्व प्रकार।
हम पूजें ध्यावें, शीश झुकावें, ऋषि चरणों में बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धि धारक सर्व ऋषिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- ऋद्धि सिद्धि से विशद, पाकर शक्ति अपार।
रत्नत्रय निधि प्राप्तकर, पाएँ मोक्ष का द्वार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

बुद्धि ऋद्धि पूजा

स्थापना

गुण अनन्त का कोष जीव है, जग में रहता कर्माधीन।
ज्ञान चेतना जाग्रत होती, होना चाहे जो स्वाधीन।।
पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, इन्द्रिय जय परिषह जयकार।
ऋद्धि सिद्धियाँ पाने वाला, ज्ञान स्वरूपी हो अविकार।।
केवल आदि ज्ञान ऋद्धियाँ, पाने वाले जैन मुनीश।
सहित भाव से पूज रहे हम, चरण झुकाते अपना शीश।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानादि ऋद्धिधारक मुनीश्वराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(दोहा)

पूजा करने हम यहाँ, लाए भरकर नीर।
जन्म जरादि की लगी, मिट जाए भव पीर।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानर्द्धिधारक मुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

लाए पूजा के लिए, चंदन केसर गार।
भवाताप से शीघ्र ही, मिल जाए अब पार।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानर्द्धिधारक मुनिवरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत पूजा के लिए, लाए धवल अनूप।
अक्षय पद को प्राप्त कर, पाएँ शिव स्वरूप।।3।।

ॐ ह्रीं ज्ञानर्द्धिधारक मुनिवरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित श्रेष्ठतम, लाए मनहर फूल।
कामबाण की वेदना, करने को निर्मूल।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानर्द्धिधारक मुनिवरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के शुभ नैवेद्य हम, लाये यह रसदार।
क्षुधा व्याधि का नाश हो, छूट जाए आहार।।5।।

ॐ ह्रीं ज्ञानर्द्धिधारक मुनिवरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग जलता दीप यह, चढ़ा रहे हम आज।
मोह अंध का नाश हो, मिले मोक्ष स्वराज।।6।।

ॐ ह्रीं ज्ञानर्द्धिधारक मुनिवरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में खेने यहाँ, लाए अनुपम धूप।
अष्ट कर्म का नाशकर, पाएँ स्वयं अनूप।।7।।

ॐ ह्रीं ज्ञानर्द्धिधारक मुनिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ा रहे हम फल यहाँ, ताजे विविध प्रकार।
अक्षय पद को प्राप्त कर, पाएँ शिव का द्वार।।8।।

ॐ ह्रीं ज्ञानर्द्धिधारक मुनिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का श्रेष्ठतम, विशद बनाए अर्घ्य।
अक्षय पद को प्राप्त कर, पाएँ स्वपद अनर्घ्य।।9।।

ॐ ह्रीं ज्ञानर्द्धिधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य (ताटंक छन्द)

द्वादश तप जो तपते मुनिवर, ऋद्धि पाते कई प्रकार।
अवधि ज्ञान षट् भेद युक्त शुभ, जिनका गुण प्रत्यय आधार।।
देशावधि परमा सर्वावधि, रूपी यह द्रव्य दिखाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अवधि बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैसा चिंतन करे कोई भी, मनःपर्यय से होवे ज्ञात।
ऋजु-मति अरु विपुलमति द्वय, भेद रूप जग में विख्यात।।
अवधि ज्ञान से सूक्ष्म विषय भी, मुनिवर हमें दिखाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मनःपर्यय बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ कर्म घातिया क्षय होते, शुभ केवलज्ञान प्रकट होता।
दर्पण वत् लोकालोक दिखे, सब कर्म कालिमा को खोता।।
ऋद्धी शुभ केवलज्ञान जगे, तब अर्हत् पद को पाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं केवल बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शब्द श्रृंखला के द्वारा, जब एक शब्द का ज्ञान किए।
हो प्रतिभाषित सारा आगम, जागे तब श्रुत सम्पूर्ण हिय।।

है कल्पवृक्ष सम बुद्धि बीज, पाने का भाव बनाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों धान्य भरे कोठे में कई, फिर भी वह भिन्न-भिन्न रहते।
मिश्रण बिन बुद्धि से आगम, वह पृथक्-पृथक् ही मुनि कहते।।
उन कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि धारी, मुनिवर को शीश झुकाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ग्रन्थों में पद हैं अनेक, मुनि मात्र एक पद ज्ञान करें।
हो पूर्ण ग्रन्थ का सार प्राप्त, करके जग का अज्ञान हरें।।
है श्रेष्ठ ऋद्धि पादानुसारिणी, जिनवर यह बतलाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं पादानुसारिणी बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह श्रवण का विस्मय है विशेष, समझें नर-पशु की भाषा को।
वह नौ योजन की जान रहे, त्यागें सब मन की आशा को।।
जो अक्षर और अनक्षर मय, द्वय भाषा में समझाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं संभिन्न-श्रोतृ बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना इन्द्रिय की दीवानी, दिखती यह सारी जगती है।
गुरु नीरस व्रत उपवास करें, शायद उन्हें भूख न लगती है।।
नौ योजन दूर की वस्तु का, गुरु रसास्वाद पा जाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं दूरास्वादन बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं विषय अष्ट स्पर्शन के, जग के प्राणी सब पाते हैं।
जो अशुभ और शुभ रूप रहे, छूने से ज्ञान कराते हैं।।
नौ योजन दूर की वस्तु का, स्पर्श गुरु पा जाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शन बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गन्ध सुगन्ध घ्राण के द्रव्य, प्रभु ने यह विषय बताए हैं।
जग के प्राणी उनको पाकर, दुख सुख पाकर अकुलाए हैं।
नौ योजन दूर की वस्तु का, गुरु गंध ज्ञान पा जाते हैं।।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं दूरगन्ध बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतापन आदि तप करने, मुनिवर गिरि ऊपर जाते हैं।
फिर आतम रस में लीन हुए, अरु आत्म सरस रस पाते हैं।।
उत्कृष्ट विषय कर्णेन्द्रिय का, उसकी शक्ति उपजाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं दूर श्रवण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रेन्द्रिय का उत्कृष्ट विषय, तप करके जो प्रकटाते हैं।
नेत्रों की शक्ति से ज्यादा, वह आतम शक्ति बढ़ाते हैं।।
यह श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाकर भी, मुनि हर्ष खेद न पाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं दूरावलोकन ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविराम ज्ञान उपयोग करें, विश्राम कभी न करते हैं।
प्रज्ञा को स्वयं विकासित कर, अज्ञान तिमिर को हरते हैं।।
जो हैं महान प्रज्ञाधारी, गुरु प्रज्ञा श्रमण कहाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमण ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान का विषय अनन्तक है, जो लोकालोक दिखाता है।
अष्टांग निमित्तक है महान, शुभ अशुभ का ज्ञान कराता है।।
स्वर-अंग भौम व्यंजन आदि, इनसे पहिचाने जाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्त बुद्धि ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम पूर्व पूरा होते ही, महा विद्यायें आ जावें।

शुभ कार्य हेतु आज्ञा माँगे, मुनिवर के मन वह न भावें।।
श्रुत का चिंतन करते-करते, श्रुत केवली बन जाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं दशम पूर्व ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो चिंतन ध्यान मनन करते, नित स्वाध्याय में लीन रहें।
वह ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, ज्ञान में सदा प्रवीण रहें।।
हम द्वादशांग का ज्ञान करें, यह विशद भावना भाते हैं।
संयम तप के द्वारा मुनिवर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्व ऋद्धी धारक जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु उपदेश बिना तपबल, से ऋद्धि पावें।
वह प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि, धारक हो जावें।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाएँ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाएँ।।17।।

ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धि ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुरमति परमत वादी जग में, चउ दिश छाए।
वाद कुशल मुनि के द्वारा, वह सभी हराए।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाएँ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाएँ।।18।।

ॐ ह्रीं वादित्यबुद्धि ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- बुद्धि ऋद्धि से बुद्धि का, हो जावे विस्तार।
ज्ञानी बनता जीव शुभ, जग में अपरम्पार।।19।।

ॐ ह्रीं अष्टादशबुद्धि ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- बुद्धि ऋद्धि जग में भली, जिससे हो सद्ज्ञान।
जयमाला गाते यहाँ, पाने पद निर्वाण।।

(चौपाई छंद)

काल अनादि भ्रमते प्राणी, जिनवर पाये न जिनवाणी।

भ्रमण अर्ध पुद्गल रह जावे, सम्यक् दर्शन प्राणी पावे।।
तन चेतन का भेद जगावें, राग त्याग संयम को पावें।
तप का आश्रय लेते ज्ञानी, वीतराग धारी विज्ञानी।।
आतम शक्ति जगाने वाले, ऋद्धि पाते संत निराले।
केवल ऋद्धि पाते भाई, जिसमें बोधि पूर्ण समाई।।
मनःपर्यय फिर ज्ञान जगावें, मन के भाव जान सब जावें।
अवधि ऋद्धि पाते हैं ज्ञानी, जो है जन-जन की कल्याणी।।
श्रुतज्ञान का बोध जगावें, पाठ एक क्षण में कर जावें।
मति अतिशय हो जावे भाई, ऋद्धि की जानो प्रभुताई।।
परवादी को आप हराते, उनके मद को चूर कराते।
अंग पूर्व का ज्ञान जगाते, श्रुत वारिधि को आप बढ़ाते।।
अंग भौम स्वर आदि जाने, सुख-दुःख के फल को पहिचाने।
काम नहीं लेते मुनि ज्ञानी, मुनिवर गुण रत्नों की खानी।।
तप की महिमा है शुभकारी, बुद्धि बढ़े जिससे मनहारी।
जो भी यह अभिलाषा करते, संयम तप जीवन में धरते।।
मोक्ष मार्ग के बनते राही, सिद्ध सुपद पाते वह शाही।
कर्म नाशकर शिवपद पाते, मोक्ष महल में धाम बनाते।।

दोहा- ज्ञान रूप शुभ जीव है, यंत्र तंत्र यह मंत्र।
ज्ञान प्राप्त कर जीव यह, हो जावे स्वतंत्र।।

ॐ ह्रीं बुद्धि-ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- बुद्धि ऋद्धि से ज्ञान हो, जागे स्वपर विवेक।
शिवपद का राही बने, बनता प्राणी नेक।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

औषधि ऋद्धि पूजा

स्थापना

हो स्पर्श अंग के मल का, या छूकर के चले बयार।
रोग हरे रोगी के तन का, सब रोगों का हो संहार।।
ऐसे औषधि ऋद्धिधारी, के चरणों शत्-शत् वन्दन।
विशद हृदय के कमलासन पर, करते हैं हम आह्वानन।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रकार औषध ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

भर नीर निर्मल कनकझारी, अर्चना को लाए हैं।
जन्मादि रोग विनाश को हम, धार देने आए हैं।।
अब श्रेष्ठ औषधि ऋद्धि धारी, की करें हम अर्चना।
शुभ मोक्ष मग में वास हो मम, है यही मम भावना।।1।।

ॐ ह्रीं औषध ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चन्दनादि सुरभि केसर, से यहाँ पूजा करें।
हम चढ़ाते हैं यहाँ पर, हर्ष मय हो चाव से।।
अब श्रेष्ठ औषधि ऋद्धि धारी, की करें हम अर्चना।
शुभ मोक्ष मग में वास हो मम, है यही मम भावना।।2।।

ॐ ह्रीं औषध ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अमल तन्दुल फेन सम शुभ, अर्चना के भाव से।
हम चढ़ाते हैं यहाँ पर, हर्ष मय हो चाव से।।
अब श्रेष्ठ औषधि ऋद्धि धारी, की करें हम अर्चना।
शुभ मोक्ष मग में वास हो मम, है यही मम भावना।।3।।

ॐ ह्रीं औषध ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ले पुष्प सुरभित औ सुवासित, अर्चना करते यहाँ।
हो कामबाधा नाश मेरी, दुःखदायी जो महा।।

अब श्रेष्ठ औषधि ऋद्धि धारी, की करें हम अर्चना।
शुभ मोक्ष मग में वास हो मम, है यही मम भावना।।4।।

ॐ ह्रीं औषध ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सद्य बनाय घृत के, थाल में भर लाए हैं।
हम क्षुधा व्याधी नाश करने, को यहाँ पर लाए हैं।।
अब श्रेष्ठ औषधि ऋद्धि धारी, की करें हम अर्चना।
शुभ मोक्ष मग में वास हो मम, है यही मम भावना।।5।।

ॐ ह्रीं औषध ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह दीप कृत्रिम हम बनाकर, कर रहे पूजा यहाँ।
अब मोह का तम नाश हो मम, जो भ्रमाए यह जहाँ।।
अब श्रेष्ठ औषधि ऋद्धि धारी, की करें हम अर्चना।
शुभ मोक्ष मग में वास हो मम, है यही मम भावना।।16।।

ॐ ह्रीं औषध ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों धूप अग्नि में जले त्यों, कर्म मेरे नाश हों।
हम धूप खेते हैं सुवासित, मुक्ति पद में वास हो।।
अब श्रेष्ठ औषधि ऋद्धि धारी, की करें हम अर्चना।
शुभ मोक्ष मग में वास हो मम, है यही मम भावना।।7।।

ॐ ह्रीं औषध ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस ताजे श्रेष्ठ अनुपम, हम यहाँ पर लाए हैं।
अब मोक्ष फल हो प्राप्त हमको, अर्चना को आए हैं।।
अब श्रेष्ठ औषधि ऋद्धि धारी, की करें हम अर्चना।
शुभ मोक्ष मग में वास हो मम, है यही मम भावना।।8।।

ॐ ह्रीं औषध ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दनादि द्रव्य आठों, से बनाया अर्घ्य है।
लक्ष्य हमने यह बनाया, प्राप्त करना अनर्घ है।।

अब श्रेष्ठ औषधि ऋद्धि धारी, की करें हम अर्चना।
शुभ मोक्ष मग में वास हो मम, है यही मम भावना।।9।।

ॐ ह्रीं औषध ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य (राधेश्याम छंद)

भेद आठ औषधि ऋद्धि के, आमर्षौषधि शुभ जानो।
मुनि स्पर्श किए ही तन में, रोग रहे न यह मानो।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि-बलि जाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लार थूक नख आदि जिनका, हरे और की व्याधि।
खेल्लौषधि ऋद्धिधर मुनिवर, धारण करें समाधि।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि-बलि जाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं खेल्लौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल्ल स्वेद अरु रज से बनता, हरे और की व्याधि।
जल्लौषधि ऋद्धिधर मुनिवर, धारण करें समाधि।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि-बलि जाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके जिह्वा कर्ण आदि मल, हरे और की व्याधि।
मल्लौषधि ऋद्धिधर मुनिवर, धारण करें समाधि।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि-बलि जाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल अरु मूत्र ऋषि के तन का, हरे और की व्याधि।
विडौषधि ऋद्धिधर मुनिवर, धारण करें समाधि।।

वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि–बलि जाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर वायु तन से स्पर्शित, हरे और की व्याधि।
सर्वौषधि ऋद्धिधर मुनिवर, धारण करें समाधि।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि–बलि जाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधिबुद्धि ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटु विष व्याप्त अन्य वच सुनकर, नर निर्विष हो जावें।
मुख निर्विष ऋद्धिधारी मुनि, मंगल वचन सुनावें।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि–बलि जाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं निर्विषऔषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग और विष आदि जिनके, अवलोकन से जावें।
दृष्टि निर्विष ऋद्धिधारी, के हम दर्शन पावें।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि–बलि जाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविषौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– औषधि ऋद्धि का यहाँ, करते हम गुणगान।
आतम औषधि प्राप्त कर, पायें मोक्ष निधान।।9।।

ॐ ह्रीं औषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– ऋषि के तन का मल विशद, औषधि बने विशाल।
औषधि ऋद्धिधर मुनि, की गाते जयमाल।।

(केसरी छंद)

काल अनादि से यह प्राणी, भ्रमता फिरे बना अज्ञानी।

सम्यक् रीति नहीं पहिचानी, भूल है मानव की अन्जानी।।
सुख चाहें इस जग के प्राणी, परिभाषा सुख की न जानी।
मुनिवर औषधि ऋद्धि धारी, तप करते होके अविकारी।।
प्राणी रक्षा करते भाई, मुनिवर की है यह प्रभुताई।
जिस स्थान ठहरते स्वामी, वहाँ सुखी हों सारे प्राणी।।
मरी आदि सब रोग विनाशें, भूतादि की बाधा नाशें।
विषधर का विष न रह पावे, पिशाचादि भी पास न आवें।।
भीति आदि की होवे हानि, निर्भय होके रहते प्राणी।
शत्रु शत्रुता छोड़ के जावें, आपस में सब प्रीति बढ़ावें।।
षट् ऋतु के फल फलते भाई, शीत उष्ण न हो अधिकाई।
अति वृष्टि न होती जानो, अनावृष्टि भी न हो मानो।।
दृष्टि जहाँ मुनि की जाए, विष भी अमृत सम हो जाए।
जो बयार मुनि को छू जावे, वह बयार सब रोग नशावे।।
तन का स्वेद मूत्र मल भाई, कफ आदि औषधि बन जाई।
तप की यह सब महिमा जानो, औषधि ऋद्धि हो पहिचानो।।
घोर सुतप ऋषियों ने धारा, सारे जग को दिया सहारा।
नेता मोक्ष मार्ग के गाये, संत ऋद्धियाँ जो प्रगटाए।
'विशद' ऋद्धियाँ जो भी पाते, नहीं काम में उनको लाते।
ऋषिवर निःस्पृह वृत्ति वाले, सर्वलोक में रहे निराले।।

दोहा– औरों की पीड़ा हरें, ऋद्धि धार ऋषीश।
हरो रोग जन्मादि के, चरण झुकाएँ शीश।।

ॐ ह्रीं अष्टौषधी ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– ऋद्धि सिद्धियों से प्रभु, पा जाएँ अवकाश।
मुक्ति हो भव सिन्धु से, पाएँ शिवपुर वास।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

बल ऋद्धि पूजा

स्थापना

आत्म ध्यानरत होकर तन से, जो ममत्व को त्याग रहे।
स्व वचनों का रोध करे अरु, संयम तप में लाग रहे।।
मनो गुप्ति को धारण करने, वाले अनुपम जैन मुनीश।
आह्वान करते हम उर में, बल ऋद्धि धारी जगदीश।।

ॐ ह्रीं मनोवचनकाय बलर्द्धि धारक सर्वमुनीश्वराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(विष्णुपद छन्द)

जन्म जरादि रोग नाशने, निर्मल जल लाए।
पूजा करने भक्ति भाव से, आज यहाँ आए।।
बल अनन्त के धारी मुनि की, पूजा हम करते।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, चरणों सिर धरते।।1।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन घिसकर मलयागिरि का, आज यहाँ लाए।
भव आताप नशाने को हम, भक्ति से आए।।
बल अनन्त के धारी मुनि की, पूजा हम करते।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, चरणों सिर धरते।।2।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद पाने को अनुपम, अक्षत हम लाए।
नृत्य गान कर पूजा करने, आज यहाँ आए।।
बल अनन्त के धारी मुनि की, पूजा हम करते।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, चरणों सिर धरते।।3।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

महा वेदना कामबाण की, से जग दुख पाए।

छुटकारा पाने हम उससे, पुष्प श्रेष्ठ लाए।।
बल अनन्त के धारी मुनि की, पूजा हम करते।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, चरणों सिर धरते।।4।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हमें सताया क्षुधा रोग ने, भव-भव दुख पाए।
उससे बचने हेतु चरु शुभ, विशद चढ़ा हर्षाए।।
बल अनन्त के धारी मुनि की, पूजा हम करते।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, चरणों सिर धरते।।5।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि मोह तिमिर से, जग में भटकाए।
दीप जलाकर तिमिर नशाने, को हम यह लाए।।
बल अनन्त के धारी मुनि की, पूजा हम करते।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, चरणों सिर धरते।।6।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि आठ गुणों को, आठ कर्म घेरे।
धूप जलाकर कर्म नाश हों, मिटे जगत फेरे।।
बल अनन्त के धारी मुनि की, पूजा हम करते।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, चरणों सिर धरते।।7।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की इच्छा करके हमने, सारे फल खाए।
मोक्ष महाफल पाने को फल, यहाँ चढ़ाने लाए।।
बल अनन्त के धारी मुनि की, पूजा हम करते।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, चरणों सिर धरते।।8।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ पाने को जग में, दर-दर भटकाए।
अर्घ्य चढ़ाकर वह पद पाने, आज यहाँ आए।।
बल अनन्त के धारी मुनि की, पूजा हम करते।

मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, चरणों सिर धरते।।9।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य (शम्भू छंद)

बल ऋद्धि के तीन भेद हैं, ऋषियों ने जो गाए हैं।
दोय घड़ी में सब श्रुत चिन्तें, मनबल ऋद्धि पाए हैं।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि-बलि जाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हीन कंठ अरु श्रम नहिं होवे, सब श्रुत को उच्चारें।
यही वचन बल की शक्ति है, तप से मुनिवर धारें।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि-बलि जाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं वचनबल ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि काय बल ऋद्धि पाएँ, कायोत्सर्ग को धारें।
त्रिभुवन उठा सके हाथों में, खेद करें न हारें।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि-बलि जाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- बल ऋद्धि धारी मुनि, जग में कहे महान।
गुण गाते उनके यहाँ, पाने मोक्ष निधान।।4।।

ॐ ह्रीं मन-वचन-कायबल ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- हो अनन्त बल प्राप्त शुभ, बल ऋद्धि के साथ।
बल अनन्त धारी ऋषि, को झुकते नर नाथ।।

(चाल-टप्पा)

सारहीन यह जग बतलाया, आगम में भाई।

तन की अस्थिरता बिजली सम, जग में बतलाई।।
सुनो सब इस जग के भाई....
सब स्वारथ के सगे जगत में, ममता दिखलाई।
सुनो सब इस जग के भाई....
अपने अपने सब कहते हैं, स्वार्थ सधे भाई।
काम पड़े अपना औरों से, पास नहीं आई।।
सुनो सब इस जग के भाई... सब स्वारथ...
काल अनादि मोह के वश हो, भटकाते भाई।
मिथ्यामति ने गति बिगाड़ी, अतिशय दुःखदाई।।
सुनो सब इस जग के भाई... सब स्वारथ...
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण तप, माना दुःखदाई।
जानी नहीं है अब तक हमने, इसकी प्रभुताई।।
सुनो सब इस जग के भाई... सब स्वारथ...
सम्यक् तप की जैनागम में, महिमा बतलाई।
पालन कर निर्दोष सुतप से, ऋद्धि प्रगटाई।।
सुनो सब इस जग के भाई... सब स्वारथ...
तन बलवान काम बल ऋद्धि, से होवे भाई।
जिन्हें जीत न पावे कोई, शक्ति अजमाई।।
सुनो सब इस जग के भाई... सब स्वारथ...
श्रेष्ठ वचन बल ऋद्धि धारी, वचन शक्ति पाई।
श्रुत के सब अक्षर मुहूर्त में, मुनिवर जी गाई।।
सुनो सब इस जग के भाई... सब स्वारथ...
रसना कंठ थके न तालू, महिमा यह गाई।
ऋद्धि धार मुनिश्वर की है, अतिशय प्रभुताई।।
सुनो सब इस जग के भाई... सब स्वारथ...
मन से सारा आगम ध्याते, ऋद्धि धर भाई।

मन बल ऋद्धि धारी मुनि की, महिमा बतलाई।।
सुनो सब इस जग के भाई... सब स्वारथ...
मन बल वचन काय बल ऋद्धि, की महिमा पाई।
जिनने जानी वे हैं ज्ञानी, शुभ मंगल दाई।।
सुनो सब इस जग के भाई... सब स्वारथ...
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाने वाले, साधु सुखदाई।
करुणाकर कहलाए जग में, जैन मुनि भाई।।
सुनो सब इस जग के भाई... सब स्वारथ...

दोहा– बल ऋद्धि पाते 'विशद', मुनिवर तप को धार।
निज पर का करते स्वयं, इस जग में उद्धार।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि–सिद्धि प्रदायक मन–वचन–काय–बल ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सम्यक् तप करके मुनि, बल ऋद्धि के ईश।
नेता बनते मोक्ष के, तिन्हें झुकाएँ शीश।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

तप ऋद्धि पूजा

स्थापना

नश्वर देह अपावन है यह, इससे मिल सकता शिवद्वार।
इससे मोह छोड़ तप धारण, करने से हो आत्मोद्धार।।
सोच समझकर ज्ञानी जन तप, धारण करते भली प्रकार।
तप ऋद्धि को पाने वाले, पूज्य लोक में हैं अनगार।।

दोहा– तप ऋद्धि है लोक में, मंगल मई महान।
पूजा करने हेतु हम, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं मनोवचनकाय तपर्द्धिधारक सर्वमुनीश्वराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्

आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तर्ज–बीस तीर्थंकर पूजा...)

पूजा करने हेतू, निर्मल कलश भराए।
तीनों योग सम्हाल, धार त्रय देने आए।।
जन्म जरादि रोग का, होवे शीघ्र विनाश।
केवल रवि का मम हृदय, होवे श्रेष्ठ प्रकाश।।
कर्म का नाश हो, ऋद्धि सिद्धि कर प्राप्त, सिद्ध पद वास हो।।1।।

ॐ ह्रीं तपर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि तीन लोक में, हम भटकाए।
सुरभित चन्दन मलयागिरी का, हम घिस लाए।।
भवाताप का अब मेरे, होवे शीघ्र विनाश।
केवल रवि का मम हृदय, होवे श्रेष्ठ प्रकाश।।
कर्म का नाश हो, ऋद्धि सिद्धि कर प्राप्त, सिद्ध पद वास हो।।2।।

ॐ ह्रीं तपर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है संसार अपार पार न, इसका पाया।
पर पदार्थ पाकर मेरा, अति मन हर्षाया।।
अक्षय पद में अब मेरा, होवे शीघ्र प्रवास।
केवल रवि का मम हृदय, होवे श्रेष्ठ प्रकाश।।
कर्म का नाश हो, ऋद्धि सिद्धि कर प्राप्त, सिद्ध पद वास हो।।3।।

ॐ ह्रीं तपर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, हमें सताए।
व्याकुल होकर हमने उससे, दुःख अति पाए।।
पुष्प चढ़ाते हम यहाँ, होवे कर्म विनाश।
केवल रवि का मम हृदय, होवे श्रेष्ठ प्रकाश।।

कर्म का नाश हो, ऋद्धि सिद्धि कर प्राप्त, सिद्ध पद वास हो ।।4 ।।

ॐ ह्रीं तपर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित हैं, इस जग के प्राणी।
पूजा भक्ति भवि जीवों की, है कल्याणी ।।
चढ़ा रहे नैवेद्य हम, होवे क्षुधा विनाश।
केवल रवि का मम हृदय, होवे श्रेष्ठ प्रकाश ।।
कर्म का नाश हो, ऋद्धि सिद्धि कर प्राप्त, सिद्ध पद वास हो ।।5 ।।

ॐ ह्रीं तपर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध के कारण प्राणी, शक्ति खोवें।
मिथ्या और कषायों के वश, में वह होवें।।
दीप जलाते मोह का, करने पूर्ण विनाश।
केवल रवि का मम हृदय, होवे श्रेष्ठ प्रकाश ।।
कर्म का नाश हो, ऋद्धि सिद्धि कर प्राप्त, सिद्ध पद वास हो ।।6 ।।

ॐ ह्रीं तपर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ कर्म प्राणी को, जग में घेरे रहते।
चतुर्गति के दुःख अतः, सब प्राणी सहते।।
धूप जलाते अग्नि में, हो कर्मों का नाश।
केवल रवि का मम हृदय, होवे श्रेष्ठ प्रकाश ।।
कर्म का नाश हो, ऋद्धि सिद्धि कर प्राप्त, सिद्ध पद वास हो ।।7 ।।

ॐ ह्रीं तपर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की इच्छा से यह, सारा जगत भ्रमाए।
मोक्ष महाफल पाने, आज यहाँ पर आए।।
चढ़ा रहे हम फल यहाँ, पाने शिवपुर वास।
केवल रवि का मम हृदय, होवे श्रेष्ठ प्रकाश ।।
कर्म का नाश हो, ऋद्धि सिद्धि कर प्राप्त, सिद्ध पद वास हो ।।8 ।।

ॐ ह्रीं तपर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि वसु द्रव्य का, श्रेष्ठ बनाया अर्घ्य।
चढ़ा रहे हम भाव से, पाने सुपद अनर्घ्य।।
शाश्वत शिवपद प्राप्त हो, होवे पूरी आस।
केवल रवि का मम हृदय, होवे श्रेष्ठ प्रकाश ।।
कर्म का नाश हो, ऋद्धि सिद्धि कर प्राप्त, सिद्ध पद वास हो ।।9 ।।

ॐ ह्रीं तपर्द्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य (शम्भू छंद)

तप ऋद्धि के सात भेद में, प्रथम उग्र तप कहलाए।
दीक्षा से उपवास निरन्तर, मरण काल बढ़ता जाए।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।1 ।।

ॐ ह्रीं उग्र तपऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बेलादि उपवास किए फिर, दीप्त तपः ऋद्धि पावे।
बिन आहार बढ़े बल तेजरू, नहीं भूख व्याधि आवे।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।2 ।।

ॐ ह्रीं दीप्त तपऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ तपो तप ऋद्धिधारी, आहार ग्रहण तो करते हैं।
नहीं होय नीहार धातु मल, मूत्र आदि सब हरते हैं।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।3 ।।

ॐ ह्रीं तप्त तपोतिशय सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महातपो तप ऋद्धि धारी, अणिमादि ऋद्धि पाएँ।
सिंह निष्क्रीड़न आदि व्रत जो, बिना खेद करते जाएँ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।4 ।।

ॐ ह्रीं महातपोतिशय सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशन आदि द्वादश विधि तप, उग्र-उग्र करते जावें।
घोर तपो तप ऋद्धिधारी, कष्ट सहज सहते जावें।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि-बलि जाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं घोरतपोतिशय ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घोर पराक्रम ऋद्धि द्वारा, अतिशय शक्ति पाते हैं।
तीन लोक से रण की शक्ति, ऋषिवर स्वयं जगाते हैं।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि-बलि जाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं घोरपराक्रम ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अघोर ब्रह्मचर्य धारी मुनिवर, गुप्ति समिति व्रत पाल रहे।
ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर, दुर्भिक्षादि टाल रहे।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि-बलि जाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचर्य ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तप ऋद्धि धारी मुनि, तप करते हैं घोर।
आत्म साधना कर सतत्, बढ़ें मोक्ष की ओर।।8।।

ॐ ह्रीं तप ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- सम्यक् तप है श्रेष्ठतम, तीनों लोक त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, आज यहाँ जयमाल।।

(छन्द-मोतियादाम)

तप के हैं द्वादश भेद अहा, तप अन्तरंग बहिरंग कहा।
धारे तप श्री मुनिवर ज्ञानी, जो चित् चेतन के हैं ज्ञानी।।
है काल अनादि कर्म संयोग, दुखी रहते इससे सब लोग।

जगे जिसके मन में श्रद्धान, करे आतम से भेद विज्ञान।।
करेंगे अपने कर्म विनाश, जगे मन में जब ऐसी आस।
तजें तब ज्ञान इन्द्रिय भोग, धरें तब अनेक विधि तप योग।।
सहे बहुभाँति परिषह संत, कषायन का जो करें नित अंत।
सतत करते श्रुत का अभ्यास, नहीं मन में कोई लौकिक आस।।
करें निज आतम का नित ध्यान, करें कर्मन की अपनी हान।
धरें मुनि अनशन कर उपवास, तजें भोजन की मन से आस।।
करें ऊनोदर अल्प अहार, वृत्ती परिसंख्य हो कई प्रकार।
करें भोजन में रस का त्याग, विविक्त शैयाशन धरें तज राग।।
करें तप काय क्लेश महान, मुनि तप धारी रहे गुणवान।
करें प्रायश्चित गुरु के द्वार, विनय करते मुनि पंच प्रकार।।
कहे वैयावृत्त के दश भेद, करें साधु जन हो निस्खेद।
सतत् करते स्वाध्याय मुनीश, प्रतिक्रम करते गुण के ईश।।
करें निज आतम का नित ध्यान, करें स्व-पर का जो कल्याण।
शरीर प्रभाव बढ़े तप योग, समृद्धि बढ़े तप के संयोग।।
करे तप घोर महा अतिघोर, नहीं होते मुनिवर कमजोर।
दीप्ति बढ़े तन की तप योग, बढ़े शुभ गंध सुदीप्ति संयोग।।
करें आहार न होय निहार, धरें उपवास न होय विकार।
जहाँ सिंहादि का होय निवास, वहाँ तप करते मुनि तज आस।।
रहें यक्षादि जहाँ बलवान, वहाँ निष्पृह हो करें मुनि ध्यान।
तजे मन से मुनि अपने ग्लान, करें स्वपर का जो कल्याण।।
रहे मुनि के गुण में मन लीन, बने तब मुनिवर कर्म विहीन।

दोहा- शुभ आदर्शों के धनी, तप ऋद्धि धर संत।
पीड़ा हरते और की, दिखलाते शिव पंथ।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक मन-वचन-काय तप ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– तप ऋद्धिधर की यहाँ, अर्चा करें सहर्ष।
वीतराग जिन संत के, करके पद स्पर्श।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

रस ऋद्धि पूजा

स्थापना

ज्ञान ध्यान तप संयम धारण, करने वाले जैन मुनीश।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, ऋद्धि के भी बनते ईश।।
रूक्ष आहार ऋद्धि के बल से, हो जाता है सरस महान।
ऐसे ऋद्धि धारी मुनि का, करते हम उर से आह्वान।।

ॐ ह्रीं मनोवचनकाय रस ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

तर्ज : पार्श्वनाथ पूजा

हम निर्मल जल भरकर लाए, अर्न्तमन निर्मल करने।
तज राग द्वेष मोहादि सभी, मन सरल भाव से भरने।।
हो जन्म जरादि नाश मेरा, जो भवभव में भटकाते हैं।
हम ऋद्धि से सिद्धि पाएँ, बस यही भावना भाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं रस ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आज यहाँ पर आए हैं, भव के संताप सताए हैं।
औषधियाँ हमने खाई कई, पर ताप मिटा न पाए हैं।।
हो जन्म जरादि नाश मेरा, जो भवभव में भटकाते हैं।
हम ऋद्धि से सिद्धि पाएँ, बस यही भावना भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं रस ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनने क्षण भंगुर वैभव को, न तन मन से अपनाया है।

कर त्याग तपस्या भाव सहित, उनने अक्षय पद पाया है।।
हो जन्म जरादि नाश मेरा, जो भवभव में भटकाते हैं।
हम ऋद्धि से सिद्धि पाएँ, बस यही भावना भाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं रस ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों का रस पाने मधुकर, पुष्पों से प्रीति लगाता है।
किन्तु आसक्ति में फँसकर, वह अपने प्राण गँवाता है।।
हो जन्म जरादि नाश मेरा, जो भवभव में भटकाते हैं।
हम ऋद्धि से सिद्धि पाएँ, बस यही भावना भाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं रस ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इस तन की क्षुधा मिटाने को, व्यंजन कई सरस बनाए हैं।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, मन में न भाव बनाए हैं।।
हो जन्म जरादि नाश मेरा, जो भवभव में भटकाते हैं।
हम ऋद्धि से सिद्धि पाएँ, बस यही भावना भाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं रस ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झिलमिल दीपक की मालाएँ, जग का कुछ तिमिर नशाती हैं।
सब मोह तिमिर के आगे वह, फीकी सारी पड़ जाती हैं।।
हो जन्म जरादि नाश मेरा, जो भवभव में भटकाते हैं।
हम ऋद्धि से सिद्धि पाएँ, बस यही भावना भाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं रस ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धूप सुगन्धित खेने से, सारा आकाश महकता है।
चेतन की खुशबू पाने में, यह काम नहीं कर सकता है।।
हो जन्म जरादि नाश मेरा, जो भवभव में भटकाते हैं।
हम ऋद्धि से सिद्धि पाएँ, बस यही भावना भाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं रस ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन में फल आते ऋतु में, जिससे तरुवर लद जाते हैं।

पर समय बीतने पर वह फल, स्थाई ना रह पाते हैं।।
हो जन्म जरादि नाश मेरा, जो भवभव में भटकाते हैं।
हम ऋद्धि से सिद्धि पाएँ, बस यही भावना भाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं रस ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोक्ष मार्ग अतिशय दुर्लभ, कई बाधाएँ जिसमें आती हैं।
पर धीर–वीर पुरुषार्थी के, आगे वह न टिक पाती हैं।।
हो जन्म जरादि नाश मेरा, जो भवभव में भटकाते हैं।
हम ऋद्धि से सिद्धि पाएँ, बस यही भावना भाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं रस ऋद्धिधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य (छन्द : जोगीरासा)

रूक्ष भोज अंजलि में आते, मिष्ठ क्षीरवत् होवे।
क्षीरस्रावि ऋद्धिधारी मुनि, जग की जड़ता खोवें।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप से ऋद्धि पाएँ।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि जाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावी ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूक्ष भोज अंजलि में आते, घृत सदृश हो जावे।
घृतस्रावि ऋद्धिधारी जग में, मंगल वचन सुनावे।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप से ऋद्धि पाएँ।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि जाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं घृतस्रावी ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूक्ष भोज अंजलि में आते, मिष्ठ मधुवत् होवे।
मधुस्रावी ऋद्धिधारी मुनि, जग की जड़ता खोवें।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप से ऋद्धि पाएँ।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि जाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावी ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर के वचनों से पल में, विष अमृत हो जावे।
अमृतस्रावी ऋद्धिधर मुनि, मंगल वचन सुनावे।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप से ऋद्धि पाएँ।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि जाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावी ऋद्धिधारक सर्वऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रस ऋद्धि के छह भेदों में, आशीर्विष भी होवे।
मरो वचन कहते मर जावें, मुनि वचन यह खोवें।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप से ऋद्धि पाएँ।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि जाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं आशीर्विष ऋद्धिधारक सर्वऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि विष ऋद्धि के धारी, ऐसी शक्ति पावें।
मरे जीव दृष्टि पड़ते ही, दृष्टि नहीं दिखावें।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप से ऋद्धि पाएँ।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि जाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविष ऋद्धिधारक सर्वऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– रस ऋद्धि के भेद शुभ, सप्त कहे जिननाथ।
ऋद्धि पा सिद्धि मिले, विशद झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं रस ऋद्धिधारक सर्वऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– रसना वश करना कठिन, जग में रहा महान।
जो नर इन्द्रिय वश करें, हो उसका कल्याण।।

पद्धरि छन्द

यह मोह महामद है महान, जग भ्रमण हेतु कारण प्रधान।
जग भ्रमण किया हमने अपार, कर्मों ने हम पर किया वार।।
जन्मादि पाया बार–बार, न मिला भ्रमण का हमें पार।
जिन आगम गुरु का मिले दर्श, तब भेद ज्ञान जागे सहर्ष।।

रत्नत्रय धारी बने संत, तब धारण करते मोक्ष पंथ।
सब इन्द्रिय जीते जिन ऋशीश, मन को वश करते हैं मुनीश।।
वचनों का करते स्वयं रोध, फिर स्वयं जगाते आत्म बोध।
कोमल शैय्या का करें त्याग, फलकादि में न करें राग।।
रसनावश करते कर प्रयत्न, घृत आदि में न करें यत्न।
प्रिय अप्रिय गंध में साम्य भाव, न राग द्वेष में रखें चाव।
लख रूपादि में साम्यभाव, सु मन के तज सारे विभाव।
स्वर दुस्वर में न करें राग, मन में जागे जिनके विराग।।
करते दैनिक षट् कर्म सदैव, समता वन्दन आदि सुएव।
संयम धर तपते सुतप घोर, हो करके मन से भाव विभोर।।
तप से जागे ऋद्धि विशेष, सब राग तजें मन का विशेष।
लाते मन में जो नहीं मान, ऋद्धि से लेते नहीं काम।।
हो ऋद्धि पुद्गल के सुयोग, आतम का इसमें नहीं योग।
मन-वचन-काय से विजय धार, रहते हैं जग में बिनागार।।

दोहा- लीन रहें स्वभाव में, तारण तरण जहाज।
पूजा करने हम विशद, आए यहाँ पर आज।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मन-वचन-काय रस ऋद्धिधारक सर्व मुनिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- रस ऋद्धि धारी मुनि, नीरस लें आहार।
उनके पद वन्दन विशद, नत हो बारम्बार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विक्रिया ऋद्धि पूजा

स्थापना

औदारिक तन प्राप्त कर, करते हैं तप ध्यान।
मुनि विक्रिया ऋद्धि तप, पाते श्रेष्ठ महान।।

रूप अनेकों धारने, की शक्ति को धार।
सारे कर्म विनाश कर, बनते शिव भरतार।।

ॐ ह्रीं मनोवचनकाय विक्रियार्द्धिधारक सर्वमुनीश्वराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(नरेन्द्र छन्द)

निर्मल नीर छानकर लाए, वह भी गरम कराए।
जन्म जरा के नाश हेतु हम, पूजा करने आए।।1।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि का चन्दन लेकर, केसर संग घिसाए।
भव तापों के नाश हेतु हम, पूजा कर हर्षाए।।2।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक जल से अक्षय अक्षत, चुनकर श्रेष्ठ धुलाए।
अक्षय पद पाने को पूजा, आकर यहाँ रचाए।।3।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति-भाँति के सुरभित पुष्पों, की शुभमाल बनाए।
कामबाण विध्वंश हेतु यह, आज चढ़ाने लाए।।4।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन ताजे अनुपम, यहाँ चढ़ाने लाए।
क्षुधारोग है काल अनादि, यहाँ नशाने आए।।5।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीप जलाकर हम यह, यहाँ जलाकर लाए।
मोह अंध ने जगत भ्रमाया, उसे नशाने आए।।6।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित धूप अग्नि में खेने, आज यहाँ पर लाए।

अष्ट कर्म ने हमें सताया, उन्हें जलाने आए।।7।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भरा नीर से श्रीफल हम यह, अर्चा करने लाए।
मुक्ति पद पाने के हमने, अनुपम स्वप्न सजाए।।8।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर आठों द्रव्य थाल में, हमने एक मिलाए।
पद अनर्घ पाने को हम ये, अर्घ चढ़ाने लाए।।9।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य (रोला छंद)

अणु बराबर छिद्र में जो, ऋषिवर घुस जावें।
अणिमा ऋद्धिवान चक्री का, कटक बनावें।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाएँ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु बराबर देह सुतप बल से जो बनावें।
महिमा ऋद्धिवान मुनि, यह ऋद्धि पावें।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाएँ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं महिमा ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आक तूल सम हल्की, अपनी देह बनावें।
लघिमा ऋद्धि विशिष्ट, मुनि यह ऋद्धि पावें।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाएँ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं लघिमा ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र समान भार युत, भारी देह बनावें।
गरिमा ऋद्धिवान, मुनि ये अतिशय पावें।।

वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाएँ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं गरिमा ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खड़े जमीं पर सूर्य, चन्द्रमा को छू लेवें।
मेरू शिखर को छुएँ प्राप्त, ऋद्धि को सेवें।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाएँ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं प्राप्ति ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू में जल जल में भू सम, मुनि गमन करन्ते।
प्राकम्प विक्रिया ऋद्धि जो, मुनिराज धरन्ते।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाएँ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं प्राकम्प ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में होय प्रभुत्व, यही ईशत्व कहावें।
यशः कीर्ति को पाय, जगत अतिशय ये पावें।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाएँ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं ईशत्व ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि पड़ते लोग सभी, वश में हो जाते।
ऋद्धि पाए वशित्व, ऋषि के दर्शन पाते।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाएँ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं वशित्व ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शैल शिला अरू तरूवर मधि से, पार करन्ते।
अप्रतिघात विक्रिया ऋद्धि, मुनिराज धरन्ते।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाएँ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अप्रतिघात ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धि से ऋषि स्वयं, अदृश्य हो जावें।
ऋद्धि अर्न्तध्यान मुनि, तप बल से पावें।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाएँ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाये।।10।।

ॐ ह्रीं अर्न्तध्यान ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक साथ कई रूप, स्वयं ऋषिराज बनावें।
काम रूप ऋद्धि से, मुनि यह शक्ति पावें।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाएँ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाये।।11।।

ॐ ह्रीं कामरूपित्व ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- विक्रिया ऋद्धिधर मुनि, जग में रहे महान्।
विशद भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- मुनि विक्रिया ऋद्धि धर, करते हैं तप घोर।
ऋद्धि सिद्धि पाके विशद, बढ़ें मोक्ष की ओर।।

(छन्द : त्रोटक)

जो मोह अज्ञान बढ़ावत है, भव-भव में भ्रमण करावत है।
परिवर्तन शील कहा जग है, शुभ अशुभ निमित्त सुपग-पग है।।
जिन आगम गुरु का योग मिले, श्रद्धा का उर में पुष्प खिले।
निज आतम का उर ज्ञान जगे, तब संयम तप में चित्त लगे।।
अन्तर में भेद विज्ञान जगे, बैठा तन का सब मोह भगे।
फिर भेष दिगम्बर जीव धरे, तप द्वादश विधि मुनि आप करे।।।
चेतन के सारे कर्म जरें, अन्तर का मुनिवर राग हरें।

आतम हो जावे शुद्ध अहा, पुद्गल भी होवे शुद्ध महा।।
मुनि का श्रुत बोध में चित्त लगे, अवधि मनःपर्यय ज्ञान जगे।
अणिमा महिमादि रूप धरे, लघिमा गरिमादि भेद करे।।
जग को वश में क्षण में कर ले, बन ईश सभी का मन हर ले।
न होवे कभी प्रतिघात कहीं, पा जाए विलक्षण रूप सही।।
न देख सके कोई प्राणी, ऐसा गाती जिनवर वाणी।
सुर इन्द्र नरेन्द्र के सम तन हो, जिनके न कोई भी बन्धन हो।।
तन के अतिशय कई रूप करें, इच्छित प्राणी स्वरूप धरें।
ऋद्धि धर का कोई पार नहीं, करते जग का उपकार वहीं।।
कई संत जगत में श्रेष्ठ कहे, जो ऋद्धि धार यथेष्ठ रहे।
उनके जग जन गुण गावत हैं, अर्चा करके हर्षावत हैं।।
हम आये चरणों नाथ अरे !, श्रद्धा भक्ति से पूर्ण भरें।
मन में तव गुण की चाह जगे, मुक्ति पथ में मम् चित्त लगे।।

दोहा- तन के अतिशय जो करें, ऋद्धि धारी संत।
करते अर्चा हम यहाँ, पाने मुक्ति पंथ।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- ऋद्धि विक्रिया धारते, मुनिवर श्री निर्ग्रन्थ।
वीतराग पद प्राप्त हो, छूट जाए सब ग्रंथ ।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चारण ऋद्धि पूजा

स्थापना

उभय परिग्रह से रहित, सम्यक् तप को धार।
क्षेत्र धरा आकाश में, करते ऋषि विहार।।
त्रस स्थावर जीव का, होता नहीं विघात।

चारण ऋद्धि धर मुनि, हैं जग में विख्यात।।
आह्वानन करते हृदय, आन पधारो नाथ।
चरणों में हम भाव से, विशद झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं मनोवचनकाय चारणर्द्धिधारक सर्वमुनीश्वराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(नरेन्द्र छन्द)

हम पूजा को जल भर लाए, भाई रे।
जन्म जरादि शीघ्र नाश हो, जाई रे।।
ऋद्धि सिद्धियाँ हैं जग में, सुखदाई रे।
संतों ने तप की महिमा, दिखलाई रे।।1।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित चन्दन की खुशबू, महकाई रे।
भवाताप हो नाश हमारा, भाई रे।।
ऋद्धि सिद्धियाँ हैं जग में, सुखदाई रे।
संतों ने तप की महिमा, दिखलाई रे।।2।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत चढ़ा रहे, हम भाई रे।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, सुखदाई रे।।
ऋद्धि सिद्धियाँ हैं जग में, सुखदाई रे।
संतों ने तप की महिमा, दिखलाई रे।।3।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की महिमा है अतिशय, भाई रे।
काम बाण विध्वंश मेरा हो, भाई रे।।
ऋद्धि सिद्धियाँ हैं जग में, सुखदाई रे।
संतों ने तप की महिमा, दिखलाई रे।।4।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह नैवेद्य बनाए, हमने भाई रे।
जिसकी जग में अलग, रही प्रभुताई रे।।
ऋद्धि सिद्धियाँ हैं जग में, सुखदाई रे।
संतों ने तप की महिमा, दिखलाई रे।।5।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीप जलाकर, लाए भाई रे।
जिससे मेरा मोह, अंध नश जाई रे।।
ऋद्धि सिद्धियाँ हैं जग में, सुखदाई रे।
संतों ने तप की महिमा, दिखलाई रे।।6।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में जो धूप, जलाई भाई रे।
श्रावक अपने सारे, कर्म नशाई रे।।
ऋद्धि सिद्धियाँ हैं जग में, सुखदाई रे।
संतों ने तप की महिमा, दिखलाई रे।।7।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से थाली हमने श्रेष्ठ, भराई रे।
मोक्ष महाफल हमें प्राप्त हो, भाई रे।।
ऋद्धि सिद्धियाँ हैं जग में, सुखदाई रे।
संतों ने तप की महिमा, दिखलाई रे।।8।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य से अर्घ्य बनाया, भाई रे।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें, सुखदाई रे।।
ऋद्धि सिद्धियाँ हैं जग में, सुखदाई रे।
संतों ने तप की महिमा, दिखलाई रे।।9।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य (श्रीछंद)

गमनागमन पद्मासन से, व्युत्सर्ग करन्ते।
नभ चारण ऋद्धि तप से, मुनिराज धरन्ते।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाए।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाये।।1।।

ॐ ह्रीं नभ चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चारण ऋद्धि धर, जल के ऊपर जावें।
जल जीवों का घात नहीं, उनसे हो पावें।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाए।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाये।।2।।

ॐ ह्रीं जल चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ अंगुल भूमि तज, ऋषिवर अधर चलन्ते।
जंघा चारण ऋद्धि श्री, ऋषिराज धरन्ते।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाए।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाये।।3।।

ॐ ह्रीं जंघा चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्र पुष्प फल के ऊपर, यह ऋद्धिधारी।
नहीं जीव को पीड़ा हो, मुनि चलें सुखारी।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाए।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाये।।4।।

ॐ ह्रीं पुष्प चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि शिखा पर चलें जीव, बाधा नहिं पावें।
अग्नि धूम चारण ऋद्धिधर, आगे जावें।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धि पाए।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाये।।5।।

ॐ ह्रीं अग्नि चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(राधेश्याम छन्द)

जलधारा जो मेघ बरसती, मुनि उस पर चलते जावें।
मेघ चारणी ऋद्धिधर से, जल-जन्तु नहिं दुख पावें।।
वीतरागता धार मुनीश्वर, तप बल से ऋद्धि पाते।
श्री जिन के गुण पाने वाले, भव सागर से तिर जाते।।6।।

ॐ ह्रीं मेघ चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मकड़ी के तन्तु पर मुनिवर, सहज कदम रखते जावें।
तन्तु चारण ऋद्धिधर मुनि से, कोई बाधा न आवें।।
वीतरागता धार मुनीश्वर, तप बल से ऋद्धि पाते।
श्री जिन के गुण पाने वाले, भव सागर से तिर जाते।।7।।

ॐ ह्रीं तन्तु चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य चन्द्र तारा आदिक की, किरणों का ले आलम्बन।
ज्योतिष चारण ऋद्धि धारी, कई योजन तक करें गमन।।
वीतरागता धार मुनीश्वर, तप बल से ऋद्धि पाते।
श्री जिन के गुण पाने वाले, भव सागर से तिर जाते।।8।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायु की पंक्ति का मुनिवर, लेकर चलते आलम्बन।
वायु चारण ऋद्धि धारी, कई योजन तक करें गमन।।
वीतरागता धार मुनीश्वर, तप बल से ऋद्धि पाते।
श्री जिन के गुण पाने वाले, भव सागर से तिर जाते।।9।।

ॐ ह्रीं वायु चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- चारण ऋद्धि धर मुनि, करते हैं तप घोर।
उनकी जयमाला यहाँ, गाते हम कर जोर।।

(शेर चाल)

करते तपस्या मुनिवर बहु कष्ट झेलते।
संयम के अस्त्र द्वारा बहु खेल खेलते।।
अंतरंग में विशुद्धि मुनिराज धारते।
कर्मों के चक्र उनके आगे जो हारते।।
पृथ्वी गगन में जिनके न भेद रहा है।
आकाश चारी मुनि का यूँ मार्ग रहा है।।
पाते नहीं हैं कष्ट कोई मार्ग में प्राणी।
जिनकी क्रिया है जग में भव्यों की कल्याणी।।
तंतु पे चले जाते न तंतु टूटते।
फल फूल पे चलें मुनि नहीं कोई फूटते।।
अंकुर पे चले जावें न कष्ट हों कभी।
बीजों पे चले जावें न नष्ट हों कभी।।
अग्नि पे चले जाते बुझती न आग है।
चलते हैं जल पे लेकिन होता न भाग है।।
जंघा को छूते ही जो आकाश में चलें।
अग्नि पे चलते हैं न अग्नि से वह जलें।।
चलते हैं श्रेणी चारण कोई विघ्न नहीं हो।
पर्वत पठार कोई भी मार्ग कहीं हो।।
आकाश गामी मुनिवर आकाश में चलें।
हिम पर भी चले जावें न हिम कहीं गले।।
ऋद्धि के धारी मुनिवर गुण के निधान हैं।
त्यागी तपस्वी वीतरागी ज्ञानवान है।।
मुनिवर कृपालु जग में कल्याण के दाता।
करते हैं साधना नित संसार के त्राता।।

हमने अनादि काल से बहु कष्ट सहे हैं।
कर्मों के बन्ध के हम आधीन रहे हैं।।
घेरा है मोह ने हमें मिथ्यात्व बढ़ाया।
अन्तर का ज्ञान मेरा भी जाग न पाया।।
हे नाथ ! आज आये हैं द्वार तुम्हारे।
हमको भी मुक्ति मग में बन जाओ सहारे।।
हों भाव शुद्ध मेरे संयम की लौ जगे।
सम्यक् सुतप के धारने में मन मेरा लगे।।

दोहा– द्वादश तप के योग से, ऋद्धि हो सम्प्राप्त।
कर्म निर्जरा कर स्वयं, बन जाता है आप्त।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चारण ऋद्धि धर मुनि, जग में हुए महान्।
'विशद' गुणों को प्राप्त कर, बनते हैं भगवान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अक्षीण ऋद्धि पूजा

स्थापना

सम्यक् तप के योग से, ऋद्धि हो अक्षीण।
जिसके विशद प्रभाव से, वस्तु न हो क्षीण।।
मुनिवर ऋद्धि के धनी, जग में हुए महान।
हृदय कमल में हम यहाँ, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं मनोवचनकाय काय अक्षीणर्द्धिधारक सर्वमुनीश्वराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द : जोगीरासा)

मिथ्यादि मल धोने हेतु, निर्मल जल लाए।
विशद ज्ञान में अवगाहन को, आज यहाँ आए।।

त्याग तपस्या को धारण कर, ऋद्धि सिद्धि पाएँ।
छोड़ असार संसार वास ये, शिवपुर को जाएँ।।1।।
ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
विषयों में खोने से भारी, भव आताप बढ़े।
त्याग से अज्ञान दशा बहु, कर्म की मार पड़े।।
त्याग तपस्या को धारण कर, ऋद्धि सिद्धि पाएँ।
छोड़ असार संसार वास ये, शिवपुर को जाएँ।।2।।
ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षय पद पाने को हम भी, अक्षय धर्म करें।
लगे हुए हैं कर्म पुराने, वह भी पूर्ण हरें।।
त्याग तपस्या को धारण कर, ऋद्धि सिद्धि पाएँ।
छोड़ असार संसार वास ये, शिवपुर को जाएँ।।3।।
ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
काम वासना से प्राणी यह, जग में भ्रमण करें।
कर्मों का फल पाकर जग में, जन्में और मरें।।
त्याग तपस्या को धारण कर, ऋद्धि सिद्धि पाएँ।
छोड़ असार संसार वास ये, शिवपुर को जाएँ।।4।।
ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
क्षुधा शांत करने का मानव, भरसक प्रयत्न करें।
खाने से यह क्षुधा शांत न, होगी कभी अरे।।
त्याग तपस्या को धारण कर, ऋद्धि सिद्धि पाएँ।
छोड़ असार संसार वास ये, शिवपुर को जाएँ।।5।।
ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जितना किया प्रकाश दीप से, उतना मोह बढ़े।
मोह नाश कर चेतन पर अब, धर्म का रंग चढ़े।।
त्याग तपस्या को धारण कर, ऋद्धि सिद्धि पाएँ।

छोड़ असार संसार वास ये, शिवपुर को जाएँ।।6।।
ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्मनाश करने का मन में, नहीं भाव आया।
अतः कर्म के द्वारा अब तक, बहुत दण्ड पाया।।
त्याग तपस्या को धारण कर, ऋद्धि सिद्धि पाएँ।
छोड़ असार संसार वास ये, शिवपुर को जाएँ।।7।।
ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
मोक्ष महाफल पाने को हम, नश्वर फल लाए।
फल से पूजा करने वाला, शाश्वत फल पाए।।
त्याग तपस्या को धारण कर, ऋद्धि सिद्धि पाएँ।
छोड़ असार संसार वास ये, शिवपुर को जाएँ।।8।।
ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
पद अनर्घ पाने का मेरे, मन में भाव जगे।
मेरा मन अब पूजा अर्चा, में ही सदा लगे।।
त्याग तपस्या को धारण कर, ऋद्धि सिद्धि पाएँ।
छोड़ असार संसार वास ये, शिवपुर को जाएँ।।9।।
ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य

ऋद्धिधर अक्षीण महानस, जिस घर ले आहारा।
जीमें कटक चक्रवर्ती का, अरु जीमें गृह सारा।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि-बलि जाएँ।।1।।
ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चार धनुष चौकोर जमीं पे, रहे मुनि का आलय।
रहे असंख्य पशु नरपति भी, ऋद्धि अक्षीण महालय।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धि पाएँ।

उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि–बलि जाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अक्षीण संवास ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अक्षीण ऋद्धि धर मुनि, जग में रहें महान।
अर्घ्य चढ़ाकर हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– अक्षीण ऋद्धि धर मुनि, होते पूज्य त्रिकाल।
अर्घ्य चढ़ाकर हम यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(आल्हा छन्द)

है अक्षीण महानस ऋद्धि, जिसके दो बतलाए भेद।
लघु द्रव्य में तृप्ति पाते, हीन जगह में पाये न खेद।।
प्रथम कही अक्षीण महानस, द्वितीय अक्षीण महालय जान।
उत्तम तप के धारी मुनिवर, ऋद्धि पाते श्रेष्ठ महान्।।
ऐसे ऋद्धि धारी मुनिवर, करते हैं जग का कल्याण।
मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ना, जिनका रहता लक्ष्य प्रधान।।
बिन कारण बन्धु हैं जग के, जिनको नहीं है जग से राग।
श्रेष्ठ तपस्या करने वाले, हृदय धारते उत्तम त्याग।।
समता धारण करने वाले, ममता से रहते हैं दूर।
देव–शास्त्र–गुरु का वन्दन कर, भावों से रहते भरपूर।।
जिनवर की स्तुति करते हैं, स्वाध्याय में रहते लीन।
प्रतिक्रमण करते हैं मन से, कायोत्सर्ग में हो लवलीन।।
इन्द्रिय वश में करने वाले, जो प्रमाद का करते त्याग।
पंच महाव्रत समिति पालते, धर्म कथा में हो अनुराग।।
चार माह में केशलुंच कर, उस दिन करते हैं उपवास।

एक भुक्ति स्थित भोजन कर, विषयों की जो त्यागें आस।।
रहते हैं निर्वस्त्र दिगम्बर, कभी नहीं करते स्नान।
दाँतों का घर्षण न करते, क्षिति शयन गुण रहा प्रधान।।
सहते हैं उपसर्ग परीषह, तप धारण करते मुनिनाथ।
बाह्याभ्यंतर परिग्रह त्यागी, के पद झुका रहे हम माथ।।
विशद भावना भाते हैं हम, सदा रहें निर्मल परिणाम।
भ्रमण मिटे मम भव सागर का, पा जाएँ भव से विश्राम।।
राग–द्वेष का त्याग करें हम, इस जग से पाएँ अवकाश।
कर्म निर्जरा हो जाए मम, मुक्ति पद में होवे वास।।

छन्द घत्तानन्द

ऋद्धि के धारी, जग उपकारी, ऋषि अनगारी गुणधारी।
करुणा के धारी, हे अविकारी, मंगलकारी शिवधारी।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि–सिद्धि प्रदायक मन–वचन–काय अक्षीण ऋद्धिधारक सर्वमुनिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अक्षीण ऋद्धि धर मुनि, संयम तप के ईश।
उनके गुण पाने 'विशद', चरण झुकाते शीश।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप– ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः।

श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनि पूजा

स्थापना

श्रेष्ठ साधना तप करके मुनि, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश।
अवधि ज्ञान देशावधि परमा, सर्वावधि प्रगटाते खास।।
मुनि नाथ जग के हितकारी, करते हैं सबका कल्याण।

हृदय कमल में यहाँ आपका, करते हैं हम भी आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पद्धडि छंद)

जल प्रासुक करके यहाँ आन, यह चढ़ा रहे आके महान।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।1।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन में है अनुपम सुवास, हम चढ़ा रहे हैं यहाँ खास।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।2।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत की अलग शान, हम चढ़ा रहे अतिशय महान।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।3।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम सुमन यहाँ लाए विशेष, अब काम नशे मेरा अशेष।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।4।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बनाए शुद्ध आज, कर क्षुधा नाश पाएँ स्वराज।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।5।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह दीप जलाए हैं महान, हो मोह तिमिर की पूर्ण हान।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।6।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चढ़ा रहे यह श्रेष्ठ धूप, हम पद पाएँ अतिशय अनूप।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।7।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम श्रेष्ठ सुफल लाए प्रसिद्ध, पाके मुक्ति पद बनें सिद्ध।

अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।8।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चढ़ा रहे यह श्रेष्ठ अर्घ्य, पद पाएँ शुभ अतिशय अनर्घ्य।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।9।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतावधिधारक मुनि के अर्घ्य

ज्ञान श्रुतावधि के द्वारा शुभ, जीव जानते श्रुत का मर्म।
सम्यक् रत्नत्रय के धारी, संत नशाते अपने कर्म।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
वीतराग निर्ग्रन्थ मुनि के, चरणों शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यतर तप के द्वारा, देशावधि पाते सद्ज्ञान।
सम्यक् रत्नत्रय के धारी, संतों का करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
वीतराग निर्ग्रन्थ मुनि के, चरणों शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं देशावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमावधि ज्ञानधारी मुनि, पाकर सम्यक्ज्ञान महान।
सम्यक् ज्ञान से पुद्गल द्रव्य, का मुनिवर करते हैं व्याख्यान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
वीतराग निर्ग्रन्थ मुनि के, चरणों शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं परमावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वावधि ज्ञानधारी मुनि, द्रव्य जानते अणु समान।
मुक्ति में कारण जो बनता, जैन मुनि का सम्यक् ज्ञान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
वीतराग निर्ग्रन्थ मुनि के, चरणों शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव से, पुद्गल द्रव्य के ज्ञाता हैं।

मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, भवि जीवों के त्राता हैं।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
वीतराग निर्ग्रन्थ मुनि के, चरणों शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– विशद ज्ञान से लोक में, कटे कर्म का जाल।
श्रुतावधि सद्ज्ञान की, गाते अब जयमाल।।

(विष्णुपद छन्द)

हैं संसार असार भोग सब, मन में यह धारा।
छोड़ दिया घर बार परिग्रह, छोड़ा परिवारा।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण को, गुरु पद में पाया।
सम्यक् तप अपने जीवन में, जिनने अपनाया।।
पञ्च महाव्रत समिति धारते, मुनिवर अनगारी।
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं वह, शुभ मंगलकारी।।
देशावधि पाते हैं जिनवर, ऋद्धि के द्वारा।
परमावधि शुभ जिन मुनियों ने,जीवन में धारा।।
सर्वावधि ज्ञान के धारी, होते शुभकारी।
पुद्‌गल द्रव्य जानने वाले, होते शिवकारी।।
फैल रही है जिन मुनियों की, जग में प्रभुताई।
एक देश प्रत्यक्ष ज्ञान मुनि, पाते हैं भाई।।
शांत स्वरूप धारने वाले, अतिशय शुभकारी।
क्रूर पशु भी तजें क्रूरता, भव–भव की सारी।।
ध्यान करें एकाग्रचित्त हो, मुनि शिवपथ गामी।
कर्म निर्जरा करते अनुपम, मुक्ति के स्वामी।।
श्रुतावधि के द्वारा मुनिवर, शास्त्र प्रसार करें।
मूर्त पदार्थ सर्वावधि द्वारा, ज्ञान से आप वरें।।

परमावधि ज्ञान के द्वारा, अणु को भी जानें।
शाश्वत सुख प्रगटाने वाले, निज को पहिचानें।।
पूजा करके योगिराज की, सौख्य अपार बढ़े।
मोक्षाभिलाषी भवि जीवों पर, तप का रंग चढ़े।।

दोहा– पूजा करते हम यहाँ, भक्ति भाव के साथ।
श्रुतावधि ऋषिराज पद, झुका रहे हम माथ।।

ॐ ह्रीं श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– पुण्य फले अभिराम, ऋषिवर की पूजा किए।
होवे जग में नाम, भक्त जनों के बीच में।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्

चतुर्णिकाय देव पूजन

स्थापना

चउ निकाय के देव लोक में, रहते हैं अपने स्थान।
उनके इन्द्र चरण में आकर, करते हैं सब प्रभु गुणगान।।
रक्षक देव प्रभु के पद में, रक्षा हेतु सभी प्रधान।
भक्ति में तत्पर रहते हैं, अतः प्राप्त करते सम्मान।।

दोहा– जिन धर्मी जो इन्द्र हैं, अनुपम शक्तिवान।
उनका यज्ञ विधान में, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् इत्याह्वाननमं। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द–भुजंगप्रयात)

भरी जल की झारी, हम प्रासुक कराई।
विशद भेंट देने को, ये हमने मँगाई।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।

सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं समर्पयामीति स्वाहा।

यहाँ श्रेष्ठ चन्दन, घिसाकर के लाए।
विशद श्रेष्ठ शीतलता, पाने हम आए।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

धवल श्रेष्ठ अक्षत ये, हमने धुवाए।
विशद भेंट देने को, हम आज आए।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् समर्पयामीति स्वाहा।

विशद पुष्प उपवन के, चुनकर के लाए।
यहाँ भेंट देकर के, हम हर्ष पाए।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा।

मधुर मोदकादि ये, ताजे बनाए।
विशद भेंट देकर, खुशी आज पाए।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

यहाँ रत्नमय दीप, घी के जलाए।
विशद मोहतम को, घटाने हम आए।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।

सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

जला धूप कर्मों, की सेना भगाए।
विशद भेंट पाने, सभी देव आए।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

सरस मिष्ठ ताजे, ये फल भी मंगाए।
सभी भेंट पाएँ, यहाँ जो भी आए।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं समर्पयामीति स्वाहा।

सभी द्रव्य का अर्घ्य, हमने बनाया।
उन्हें भी बुलाते, कभी जो न आया।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली

अधोलोक में भवन बने जो, उनमें रहते इन्द्र महान।
बनें सहाई यहाँ यज्ञ में, यज्ञ भाग पावें सम्मान।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोकवासी देवेभ्यो अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

ऊर्ध्वलोक या मध्यलोक में, व्यंतर वासी देव प्रधान।
बनें सहाई यहाँ यज्ञ में, यज्ञ भाग पावें सम्मान।।2।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकवासी देवेभ्यो अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

मध्यलोक उद्योतित करते, ज्योतिषवासी देव विमान।
बनें सहाई यहाँ यज्ञ में, यज्ञ भाग पावें सम्मान।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकवासी देवेभ्यो अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

ऊर्ध्वलोक में रहने वाले, वैमानिक के इन्द्र महान।
बनें सहाई यहाँ यज्ञ में, यज्ञ भाग पावें सम्मान।।4।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकवासी देवेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में रहने वाले, चतुर्निकाय के देव महान।
बनें सहाई यहाँ यज्ञ में, यज्ञ भाग पावें सम्मान।।5।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वअधो मध्यलोक स्थित सर्व देवेभ्यो अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जिन अर्चा कर लो यहाँ, सम्यक् दृष्टि देव।
गाएँगे जयमाल हम, नित प्रति यहाँ सदैव।।

(चौपाई छन्द)

भवन वासी भवनों में रहते, उन्हें भवन वासी हम कहते।
असुरादि दश भेद बताए, सेवक दो–दो इन्द्र गिनाए।।
हैं प्रतीन्द्र दो–दो ही भाई, जिनकी है जग में प्रभुताई।
इस प्रकार चालिस यह जानो, जिनवर के सेवक पहिचानो।।
अधोलोक खर भाग में जानो, पंक भाग में भी पहिचानो।
इनके भवन बने जो भाई, उनकी महिमा कही न जाई।।
उनमें चैत्यालय शुभ गाए, जिनबिम्बों से सहित बताए।
उनको यह सब पूजें भाई, पूजा कर पावें प्रभुताई।।
मध्य अधो द्वय लोक में जानो, व्यंतर देवों को पहिचानो।
आठ भेद इनके भी गाये, दो–दो इन्द्र ग्रन्थ में गाए।।
हैं प्रतीन्द्र दो–दो भी भाई, छत्तिस इन्द्र की संख्या गाई।
पञ्च भेद ज्योतिष के जानो, इन्द्र प्रतीन्द्र चन्द्र रवि मानो।।
सोलह कल्प स्वर्ग में गाए, उनमें बारह इन्द्र बताए।
हैं प्रतीन्द्र बारह भी भाई, बत्तिस इन्द्र की संख्या गाई।।
जिनपूजा को यह सब आवें, श्रद्धा जैन धर्म में पावें।
धर्मध्यान पूजा से होवे, सारा मन का कालुष खोवें।।

व्रत धारण जो न कर पावें, त्याग भाव न मन में आवें।
धर्मी से वात्सल्य जगावें, सम्यक् दृष्टि यह गुण पावें।।
जैन चार गति में जो गाये, जिनवर के वह भक्त कहाए।
आपस में सहधर्मी जानो, वह सम्मान योग्य पहिचानो।।
जो जिसके भी योग्य बताए, वह विघ्नों को दूर हटाएँ।
'विशद' धर्म जो प्राणी पाते, जिनधर्मी से प्रीति बढ़ाते।।

दोहा– जिन भक्तों का जैन तुम, करो योग्य सम्मान।
सम्यक् दृष्टि के लिए, हैं कर्त्तव्य प्रधान।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो जयमाला समर्पयामीति स्वाहा।

सोरठा– चतुर्गति के जैन का, यही रहा कर्त्तव्य।
जिन भक्ति सम्मान भी, करो जैन का भव्य।।

इत्याशीर्वादः

पञ्चम वलयः

दोहा– आदि देवता देवियाँ, पूजा करें त्रिकाल।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, गाते हैं जयमाल।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आदि देवता (देवियाँ) पूजन

स्थापना

श्री ह्रीं आदि देवियाँ, भक्ति हेतु प्रधान।
जिन पूजानुष्ठान में, तिष्ठें निज स्थान।।
आके भक्ति भाव से, पूर्ण करो शुभ काज।
होवे धर्म प्रभावना, आओ सकल समाज।।
जिनवर का करते विशद, आज यहाँ गुणगान।
आ तिष्ठो मेरे निकट, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री ह्रीं आदि चतुर्विंशति देवता (देवि) ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट्

इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तर्ज – तुमसे लागी लगन.....)

भक्त आये यहाँ, पूजा करने महा, इन्द्र आये।
प्रभु चरणों में मस्तक झुकाए।।
नीर हमने ये प्रासुक कराया, नाथ चरणों में तुमरे चढ़ाया।
जन्म का नाश हो, मोक्ष में वास हो, नीर लाए, ... प्रभु।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ह्रीं आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं समर्पयामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ चंदन घिसाकर के लाए, साथ केसर भी उसमें मिलाए।
कर्म संहार हो, नाश संसार हो, जो बढ़ाए ... प्रभु।।2।।

ॐ ह्रीं श्री ह्रीं आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ अक्षत धुवाकर ये लाए, नाथ चरणों में शुभ ये चढ़ाए।
कर्म का ह्रास हो, मुक्ति पद वास हो, जिन हमारे ... प्रभु।।3।।

ॐ ह्रीं श्री ह्रीं आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् समर्पयामीति स्वाहा।

पुष्प तन्दुल के हमने बनाए, केसरादि से वह शुभ रंगाए।
काम का नाश हो, हृदय विश्वास हो, सौख्य पाएँ ... प्रभु।।4।।

ॐ ह्रीं श्री ह्रीं आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा।

शुद्ध नैवेद्य ताजे बनाए, थाल हम यह चढ़ाने को लाए।
क्षुधा का नाश हो, भव से अवकाश हो, मोक्ष पाएँ ... प्रभु।।5।।

ॐ ह्रीं श्री ह्रीं आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दीप घृत के ये हमने जलाए, आरती करने प्रभु की हम आए।
मोह का नाश हो, पूर्ण मम आस हो, हर्ष छाए ... प्रभु।।6।।

ॐ ह्रीं श्री ह्रीं आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में आके जलाएँ, आठों कर्मों को अपने नशाएँ।
नाश मम राग हो, मोह का त्याग हो, मोक्ष पाएँ ... प्रभु।।7।।

ॐ ह्रीं श्री ह्रीं आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

लौंग बादाम श्रीफल मँगाए, फल चढ़ाने को हम आज आए।
जीव यह आप्त हो, मोक्षफल प्राप्त हो, मुक्ति पाएँ ... प्रभु।।8।।

ॐ ह्रीं श्री ह्रीं आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं समर्पयामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों को हमने मिलाया, अर्घ्य अनुपम ये सुन्दर बनाया।
प्राप्त सद्ज्ञान हो, मेरा कल्याण हो, मोक्ष पाएँ ... प्रभु।।9।।

ॐ ह्रीं श्री ह्रीं आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो अनर्घपदप्राप्तेय अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ देवि द्वारा अर्चा *(शम्भू छंद)*

श्री समृद्धि लेकर आओ, श्री देवि तुम यहाँ अपार।
जिन भक्ति पूजा अर्चा कर, शान्ति पाएँ अपरम्पार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देवि अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

ह्री देवि उत्साह सहित तुम, आओ श्री जिन के आधार।
जिन भक्ति पूजा अर्चा कर, शान्ति पाएँ अपरम्पार।।2।।

ॐ ह्रीं ह्री देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

धृति देवि तुम करो वन्दना, श्री जिन चरणों बारम्बार।
जिन भक्ति पूजा अर्चा कर, शान्ति पाएँ अपरम्पार।।3।।

ॐ ह्रीं ह्री धृति देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

लक्ष्मी देवि सद्भक्तों को, लक्ष्मी देना यहाँ अपार।
जिन भक्ति पूजा अर्चा कर, शान्ति पाएँ अपरम्पार।।4।।

ॐ ह्रीं ह्री लक्ष्मी देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

गौरी देवि अरिहन्तों की, महिमा का तुम करो प्रसार।
जिन भक्ति पूजा अर्चा कर, शान्ति पाएँ अपरम्पार।।5।।

ॐ ह्रीं ह्री गौरी देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

आओ देवि यहाँ चण्डिका, जैन धर्म का करो प्रचार।
जिन भक्ति पूजा अर्चा कर, शान्ति पाएँ अपरम्पार ।।6।।

ॐ ह्रीं ह्री चण्डी देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

देवि सरस्वती तुम आके, जिनवाणी का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान ।।7।।

ॐ ह्रीं ह्री सरस्वती देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

जया देवि तुम जयकारों से, आन गुँजाओं यह स्थान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान ।।8।।

ॐ ह्रीं ह्री जया देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

देवि अम्बिका अर्हन्तों की, महिमा का तुम करो बखान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान ।।9।।

ॐ ह्रीं ह्री अम्बिका देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

विजया देवि विजय दिलाओ, सद्भक्तों को यहाँ प्रधान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान ।।10।।

ॐ ह्रीं ह्री विजया देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

किलन्ना देवि करो अर्चना, जिनने पाया केवल ज्ञान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान ।।11।।

ॐ ह्रीं ह्री किलन्ना देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

ज्ञाता दृष्टा केवल ज्ञानी, तीन लोक में रहे महान।

श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान ।।12।।

ॐ ह्रीं ह्री अजिता देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

नित्या देवि नित्य प्रति तुम, करो प्रभु का सम्यक् ध्यान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान ।।13।।

ॐ ह्रीं ह्री नित्या देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

श्री जिनवर के चरण शरण, मदद्रवा पाओ स्थान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान ।।14।।

ॐ ह्रीं ह्री मदद्रवा देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

(दोहा)

देवी कामांगा सभी, करती विघ्न विनाश।
जिन अर्चा करती विशद, करके धर्म प्रकाश ।।15।।

ॐ ह्रीं ह्री कामांगा देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

अष्ट कर्म को नाश कर, हुए श्री के नाथ।
कामबाणा अर्चा करें, चरण झुकाकर माथ ।।16।।

ॐ ह्रीं ह्री कामबाणा देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

सानन्दा आनन्द से, भक्ति करे त्रिकाल।
श्री जिनेन्द्र के चरण में, सदा झुका कर भाल ।।17।।

ॐ ह्रीं ह्री सानन्दा देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

नन्द मालिनी भाव से, करे प्रभु गुणगान।
दिव्य अर्घ्य अर्पित करे, चरण शरण में आन ।।18।।

ॐ ह्रीं ह्री नन्दमालिनी देव्यै अत्र आगच्छ–आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यताम्।

माया देवि का यहाँ, करे कौन गुणगान।
पूजा भक्ति में सदा, पाती जो स्थान।।19।।

ॐ ह्रीं ह्री माया देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यताम्।

देवि मायाविनी है विशद, श्री जिनेन्द्र की भक्त।
जिन अर्चा में जो रहे, सदा सदा आसक्त।।20।।

ॐ ह्रीं श्री मायाविनी देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभाग्र च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यताम्।

रौद्री रौद्र स्वरूप तज, पूजा करे विधान।
जिन अर्चा में जो सदा, पावे निज स्थान।।21।।

ॐ ह्रीं श्री रौद्री देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभाग्र च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यताम्।

कला कलाएँ कर सदा, करे प्रभु गुणगान।
जिन अर्चा करके स्वयंम, पाती है सम्मान।।22।।

ॐ ह्रीं ह्री कला देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभाग्र च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यताम्।

काली देवि आनकर, करे श्रेष्ठ सहयोग।
सद् भक्तों के साथ में, धारे पूजा योग।।23।।

ॐ ह्रीं ह्री काली देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभाग्र च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यताम्।

कलिप्रिया सद् भक्त का, रखती पूरा ध्यान।
सारे विघ्न निवारती, जिन पूजा में आन।।24।।

ॐ ह्रीं ह्री कालिप्रिया देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभाग्र च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यताम्।

श्री ह्री आदि देवियाँ, पाके निज स्थान।
ऋषि मण्डल की रक्षिका, बनकर रहें महान।।25।।

ॐ ह्रीं श्री ह्री धृति लक्ष्मी गौरी चण्डी सरस्वती जया अम्बिका विजया क्लिन्ना अजिता नित्या मदद्रवा कामांगा कामबाणा सानंदा नंदमालिनी माया मायाविनी रौद्री कला काली

कलिप्रिया इति चतुर्विंशति जिनेन्द्र भक्त देवीभ्यो यज्ञांशं ददामि सर्वा एव प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यताम्।

जयमाला

दोहा- पूजा करने देवियाँ, लाए द्रव्य के थाल।
भक्ति से जिनदेव की, गाती हैं जयमाल।।

(चाल छन्द)

श्री आदि देवियाँ आवें, मन में अति हर्ष बढ़ावें।
जिनवर के जो गुण गावें, मन में अति मोद मनावें।।
जिन पूजा में जो आवें, सम्मान श्रेष्ठ वह पावें।
मिथ्यावादी जो होवें, सम्यक्त्व क्रिया वह खोवें।।
कई बाधाएँ वह डालें, श्री आदि आन सम्हालें।
भक्तों पर संकट आवें, बाधाएँ दूर भगावें।।
वात्सल्य भाव प्रगटावें, सब सहयोगी बन जावें।
भक्ति में साथ निभावें, सम्यक्त्व जीव जो पावें।।
श्री आदि देवियाँ जानो, इन गुण से संयुत मानो।
सधर्मी धर्म करावें, सहयोगी साथ बुलावें।।
शुभ क्रिया धर्म की जानो, न धर्मी बिन हो मानो।
करते आह्वानन प्राणी, है जिन वृत्ति कल्याणी।।
सत्कार प्रतिष्ठा भाई, निस्वार्थ करें सुखदायी।
सज्जन के गुण यह गाए, वात्सल्य रूप बतलाएँ।।
शक्ति से भक्ति कीजे, सम्मान सभी को दीजे।
जल फल आदि शुभ लावें, नैवेद्य श्रेष्ठ बनवाए।।

दोहा- पूजा करने देवियाँ, जिन भक्तों के साथ।
विघ्न दूर करके विशद, चरण झुकाएँ माथ।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति देवीभ्यो जिन पूजा यज्ञ भागं ददामि प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

दोहा- भक्ति करने के लिए, आते यहाँ प्रधान।
अर्चा करते भाव से, विशद करें गुणगान।।

जाप-ॐ ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रूँ ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- चौबिस जिन युत ह्रीं शुभ, शब्द ब्रह्म जग सिद्ध।
रत्नत्रय परमेष्ठी वसु, ऋद्धि जगत प्रसिद्ध।।
श्रुतावधि धारक मुनि, जग में पूज्य त्रिकाल।
देव देवियाँ भी यहाँ, गावें शुभ जयमाल।।

(शम्भू छंद)

मंत्र प्रधान ऋषि मण्डल शुभ, जग में महिमावान कहा।
नायक ह्रीं विशद जिसका है, चौबिस जिन युत श्रेष्ठ अहा।।
शब्द ब्रह्म हैं सिद्ध लोक में, अ आ आदि स्वर व्यञ्जन।
ध्यान किए हरते हैं सारा, जीवों का जो कर्माञ्जन।।
बीजाक्षर ह भा रादि वसु, का जिसमें रहता परिवार।
परमेष्ठी पाँचों गुण संयुत, जहाँ शोभते मंगलकार।।
रत्नत्रय की बहे त्रिवेणी, जिसमें करना अवगाहन।
सर्व ऋषीश्वर शोभित होते, ऋद्धि युक्त परम पावन।।
श्रुत केवली श्रुत के धारी, चार अवधि धारी मुनिनाथ।
गुण कीर्तन जिनका करते सब, भक्त चरण में जोड़े हाथ।।
चउ निकाय के देव यहाँ पर, भक्ति करते सह परिवार।
पूजा अर्चा करें वन्दना, भाव सहित जो मंगलकार।।
श्री आदि जो कहीं देवियाँ, उनका कौन करें गुणगान।
जिनवर की सेवा में तत्पर, रहती हैं जो महति महान।।
रक्षक नगर को घेरे रहते, देव देवियाँ उसी प्रकार।
देव-शास्त्र-गुरु की रक्षा में, तत्पर रहते सह परिवार।।
अन्तिम वलय में देव देवियों, का भाई जानो स्थान।
प्रिय बन्धु सम उनका करना, आप यहाँ पर भी सम्मान।।

सुख सौभाग्य प्रदायक अनुपम, ऋषि मण्डल यह रहा महान।
रोग-शोक दारिद्र मिटाने, वाला जग में रहा प्रधान।।
भाव सहित जपने वाला नर, हो जाता है श्री का नाथ।
स्वजन और परिजन बन्धु सब, शत्रु भी देते हैं साथ।।
कर्म निर्जरा करे स्वयं ही, हो जावे शिव पद का ईश।
अक्षय सुख को पाने वाला, बनता जगतिपति जगदीश।।

दोहा- श्री ऋषि मण्डल रहा, जग में श्रेष्ठ महान।
विघ्न हरण मंगल करन, पावन परम विधान।।

ॐ ह्रीं ऋषि मण्डलान्तर्गत सर्व अर्हंसिद्ध ऋषि मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं देव देवीभ्यो यज्ञ भागं च ददामि स्वाहा।

दोहा- यंत्र ऋषि मण्डल 'विशद', जग में रहा प्रसिद्ध।
उसकी अर्चा से स्वयं, कार्य होय सब सिद्ध।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

ऋषि मण्डल आरती

(तर्ज - हो बाबा हम सब उतारें तेरी आरती...)

यंत्र ऋषि मण्डल की करते, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर घृत के लाए, आज यहाँ शुभकार।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....

गोलाकार के मध्य विराजे, ह्रींकार मनहार।
चौबीस तीर्थंकर से शोभित, होता अपरम्पार।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....

ऋषि मण्डल स्तोत्र जाप से, मन वांछित फल पाए।
शाकिन डाकिन भूत-प्रेत की, बाधा नहीं सताए।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....

रोग–शोक सर्पादि का विष, क्षण में होय विनाश।
निर्धन मन वांछित धन पावे, होवे पूरी आस।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....

पुत्र हीन सुत पावें वांछित, ग्रह का मिटे क्लेश।
खोये स्वजन वस्तु को पायें, शान्ति पायें विशेष।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....

हर्षित मन से करें आरति, पावे पुण्य अशेष।
अनुक्रम से मुक्ति पद पावें, जावे स्वयं स्वदेश।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....

'विशद' भावना भाते हैं हम, होवे कर्म विनाश।
यह संसार असार छोड़कर, पाएँ शिवपुर वास।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....

प्रशस्ति

भरत क्षेत्र के मध्य है, भारत देश महान।
मध्य प्रदेश का देश में, रहा अलग स्थान।।
जिला छतरपुर में रहा कुपी लघु सा ग्राम।
लाल भरोसे सेठ का रहा श्रेष्ठ शुभ नाम।।
उनके अन्तिम पुत्र थे नाम था नाथूराम।
जिला छतरपुर में गये वहाँ बनाया धाम।।1।।
जिनके द्वितीय पुत्र थे, जिनका नाम रमेश।
दीक्षा ले जिनने धरा, श्रेष्ठ दिगम्बर भेष।।
विमल सिन्धु गुरुवर हुए, इस जग में विख्यात।
विराग सिन्धु जग में हुए, जैन धर्म में ख्यात।।2।।
दीक्षा गुरु कहलाए वह, किया बड़ा उपकार।
भरत सिन्धु जी ने दिया, जिनको पद आचार्य।।
काव्य कला है श्रेष्ठ शुभ, विशद सिन्धु की खास।

लेखन चिंतन मनन में जो रखते विश्वास।।3।।
हरियाणा के जिला शुभ, रेवाड़ी में आन।
ऋषि मण्डल का पूर्ण यह कीन्हा विशद विधान।।
पच्चीस सौ सैंतीस शुभ, रहा वीर निर्वाण।
श्रावण कृष्णा चौथ दिन, मंगलवार महान।।4।।
जिनने अपनी कलम से, लिखे हैं कई विधान।
सारे भारत देश में, होता है गुणगान।।
काव्य कथा नाटक तथा, लिखते हैं कई लेख।
शास्त्र और पत्रिकाओं में, जिनका है उल्लेख।।5।।
विद्याभूषण सूरि मुनि, गुण नन्दि महाराज।
वन्दन जिनके चरण में, करती सकल समाज।।
श्री ऋषि मण्डल शुभम्, जिनने लिखा विधान।
संस्कृत में रचना किए, मुनिवर श्रेष्ठ महान।।6।।
हिन्दी में अनुवाद कर, जिसका किया बखान।
ऐसी अनुपम कृति से, करो सभी गुणगान।।
लघु धी से जो भी लिखा, मानो उसे प्रमाण।
पूजा अर्चा कर 'विशद', पाओ पद निर्वाण।।7।।

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं।।
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या है ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद श्रमणचर्या (संकलित)
10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद
13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
15. समाधि तंत्र चौपाई अनुवाद
16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद
17. संस्कार विज्ञान
18. विशद स्तोत्र संग्रह
19. भगवती आराधना, संकलित
20. जरा सोचो तो !
21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद
22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
23. जीवन की मन: स्थितियाँ
24. आराध्य अर्चना, संकलित
25. मूक उपदेश कहानी संग्रह
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद प्रवचन पर्व
29. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
30. श्री विशद नवदेवता विधान
31. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
32. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
33. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
34. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
35. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
36. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान
37. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
38. कर्मजयी 1008 श्री पंचबालयति विधान
39. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
40. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
41. श्री तीर्थंकर निर्वाण सम्मेदशिखर विधान
42. श्री श्रुत स्कंध विधान
43. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
44. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
45. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
46. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान
47. श्री याग मण्डल विधान
48. श्री जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान
49. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
50. विशद पञ्च विधान संग्रह
51. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
52. विशद सुमतिनाथ विधान
53. विशद संभवनाथ विधान
54. विशद लघु समवशरण विधान
55. विशद सहस्रनाम विधान
56. विशद नंदीश्वर विधान
57. विशद महामृत्युञ्जय विधान
58. विशद सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान
59. लघु पञ्चमेरु विधान एवं नंदीश्वर विधान
60. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
61. श्री दशलक्षण धर्म विधान
62. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
63. श्री सिद्धचक्र विधान
64. विशद अभिनव कल्पतरू विधान
65. विशद श्रेयांसनाथ विधान
66. विशद जिनगुण संपत्ति विधान
67. विशद अजितनाथ विधान
68. विशद एकीभाव स्तोत्र विधान
69. विशद ऋषिमण्डल विधान
70. विशद अरहनाथ विधान
71. विशद विषापहार स्तोत्र विधान

चारित्र शुद्धि व्रत पूजा

स्थापना

पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विधि होता चारित्र।
भवि जीवों के लिए बताया, तीन लोक में अनुपम मित्र।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि का, उद्यम करते जीव महान।
विशद भाव से पूजा करने, हेतु करते हम आह्वान।।

दोहा– सम्यक् चारित्र धारकर पद पाएँ निर्ग्रन्थ।
कर्म घातिया नाशकर हो जाएँ अर्हन्त।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रत ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल भर, हम पूजन को लाए हैं।
जन्म जरादि रोग नशाकर, शिवपद पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केसर आदि सुगन्धित, हमने यहाँ घिसाए हैं।
भव संताप नशाने को हम, आज यहाँ पर आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम अक्षय अक्षत हम, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
अक्षय पद पाने को अनुपम, भाव बनाकर आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प मनोहर सुन्दर, थाली में भर लाए हैं।
कामबाण की बाधा अपनी, हम हरने को आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ताजे नैवेद्य बनाकर, अर्चा करने लाए हैं।
क्षुधा रोग है काल अनादि, उसे नशाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का यह शुभ दीप जलाया, आरति करने लाए हैं।
मोह तिमिर छाया है भारी, मोह नशाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन आदि शुभ द्रव्यों से, धूप बनाकर लाए हैं।
वसु कर्मों ने हमें सताया, छुटकारा पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला केला श्रीफल आदि, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
मोक्ष महाफल पाने को हम, चारित्र पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादि अष्ट द्रव्य का, अनुपम अर्घ्य बनाए हैं।
पद अनर्घ पाने हेतु यह, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
सम्यक् चारित्र की शुद्धि को, पूजा आज रचाते हैं।
चारित्र धारी जिन संतों के, पद में शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– धारा देते आज, शांति पाने के लिए।
पाने शिव का राज, पूजा करते भाव से।।

शांतये शांतिधारा

भाव भक्ति के साथ, पुष्पाञ्जलि करते यहाँ।
हे त्रिभुवन के नाथ, चारित्र शुद्धि मम करो।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– सम्यक् चारित्र पूज्य है, तीनों लोक त्रिकाल।
चारित्र शुद्धि के लिए, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छंद)

देव–शास्त्र–गुरु के प्रति श्रद्धा, करने से हो सद् श्रद्धान।
सम्यक् श्रद्धा पा लेने से, प्राणी पाते सम्यक् ज्ञान।।
तन चेतन का भेद प्राप्त कर, करने निज आतम का ध्यान।
सम्यक् चारित्र धारण करते, जग के प्राणी यह सम्मान।।
सकल वासना तजने वाले, शुद्ध शीलधर बन्ध विहीन।
वीतराग संयम के धारी, निज स्वभाव में रहते लीन।।
पञ्च महाव्रत धारण करते, पञ्च समीति गुप्ति वान।
दश धर्मी के धारी अनुपम, इन्द्रिय जय करते गुणवान।।
समता वंदना स्तुति करते, प्रतिक्रमण करते स्वाध्याय।
कायोत्सर्ग धारने वाले, ध्यान करें जिन का सुखदाय।।

तन से राग त्यागने वाले, केशलुंच करते निज हाथ।
वस्त्र त्याग निर्ग्रन्थ भेष शुभ, धारण करते हैं मुनिनाथ।।
दातुन मंजन न्हवन त्यागते, थिति भोजन करते इक बार।
क्षिति शयन करने वाले मुनि, शल्य रहित होते शुभकार।।
पाँच भेद सम्यक् चारित्र के, जैनागम में कहें प्रधान।
सामायिक में समता धारण, करना माना गया महान।।
व्रत मनें दूषण वेद कहा है, प्रायश्चित्त कहा उपस्थापन।
छेदोपस्थापना व्रत मुनियों का, बतलाया है संयम धन।।
परिहार विशुद्धि संयम धारी, से हिंसा का हो परिहार।
सूक्ष्म साम्पराय धारी मुनिवर, जग में होते मंगलकार।।
यथाख्यात चारित्र पाते हैं, कषाय रहित मुनिवर अनगार।
सम्यक् चारित्र धारी मुनि के, पद में वन्दन बारम्बार।।
मूल गुणों के धारी मुनिवर, उत्तर गुण धर जैन ऋषीश।
सम्यक् चारित्र में शुद्धि पाल, होते केवलज्ञानी ईश।।

दोहा– सम्यक चारित्र के धनी, वीतराग अनगार।
दाता मुक्ति मार्ग के , जग में मंगलकार।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि व्रताय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– चारित्र शुद्धि महान, राही मुक्ति मार्ग के।
पालन करे प्रधान, शिव पद पाने के लिए।।

इत्याशीर्वादः